Biyani's Think Tank

Concept based notes

Social Study Teaching

B.Ed

GURUKPO
Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Anjana Budania

Mukesh Kumari

Lecturer

Deptt. of Education

Biyani Girls B.Ed. College, Jaipur

Biyani's
Group of Girls' Colleges

Published by :

Think Tanks

Biyani Group of Colleges

Concept & Copyright :

©Biyani Shikshan Samiti

Sector-3, Vidhyadhar Nagar,

Jaipur-302 023 (Rajasthan)

Ph : 0141-2338371, 2338591-95 • Fax : 0141-2338007

E-mail : acad@biyanicolleges.org

Website :www.gurukpo.com; www.biyanicolleges.org

GURUKPO
...nt Access to Your Study Related Queries...

First Edition : 2009

While every effort is taken to avoid errors or omissions in this Publication, any mistake or omission that may have crept in is not intentional. It may be taken note of that neither the publisher nor the author will be responsible for any damage or loss of any kind arising to anyone in any manner on account of such errors and omissions.

Leaser Type Setted by :

Biyani College Printing Department

Preface

I am glad to present this book, especially designed to serve the needs of the students. The book has been written keeping in mind the general weakness in understanding the fundamental concepts of the topics. The book is self-explanatory and adopts the "Teach Yourself" style. It is based on question-answer pattern. The language of book is quite easy and understandable based on scientific approach.

Any further improvement in the contents of the book by making corrections, omission and inclusion is keen to be achieved based on suggestions from the readers for which the author shall be obliged.

I acknowledge special thanks to Mr. Rajeev Biyani, *Chairman* & Dr. Sanjay Biyani, *Director* (*Acad.*) Biyani Group of Colleges, who are the backbones and main concept provider and also have been constant source of motivation throughout this Endeavour. They played an active role in coordinating the various stages of this Endeavour and spearheaded the publishing work.

I look forward to receiving valuable suggestions from professors of various educational institutions, other faculty members and students for improvement of the quality of the book. The reader may feel free to send in their comments and suggestions to the under mentioned address.

Author

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries.

Social Studies
Syllabus

Unit–1 प्रकृति क्षेत्र एवं उद्देश्य

- सामाजिक अध्ययन की प्रकृति, क्षेत्र एवं संप्रत्यय।
- महत्व।
- विभिन्न स्तरों पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य।
- सामाजिक अध्ययन का अन्य विधालयी विषयों के साथ सह–सम्बन्ध।

Unit-2 पाठयक्रम एवं योजना

- पाठयक्रम का संप्रत्यय एवं उद्देश्य।
- दैनिक पाठ योजना, इकाई योजना एवं वार्षिक पाठ योजना की योजना।
- सामाजिक अध्ययन की पाठ्य पुस्तक।
- सामाजिक अध्ययन के शिक्षक की विशेषताऍं, भूमिका एवं व्यावसायिक अभिवृद्दि।

Unit–3 अनुदेशात्मक व्यूह रचना, विधियॉ एवं अध्ययन

- सामाजिक अध्ययन शिक्षण की विभिन्न विधियॉ व्याख्यान, सामाजीकृत अभिव्यक्ति, कहानी कथन, प्रायोजना, समस्या समाधान, विधि
- क्षेत्रीय पर्यटन
- अन्य नवाचार मस्तिष्क उद्वेलन, अभिनयीकरण

Unit–4 अनुदेशनात्मक सहायक प्रणाली

- सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला की योजना एवं इसका उपयोग।
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण में मिडिया एवं कम्प्यूटर का उपयोग।
- स्त्रोत सामग्री–सामाजिक अध्ययन शिक्षण में स्थानीय सामग्री का उपयोग।

Unit–5 सामाजिक अध्ययन शिक्षण का मूल्यांकन

- मूल्याकंन का संप्रत्यय एवं उद्धेश्य
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण में मूल्यांकन के उपकरण व विधियॉ
- निष्पति परीक्षण का निर्माण
- विभिन्न प्रकार के प्रश्न
- नील पत्र
- प्रश्न पत्र का निर्माण

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Unit–1

Nature,Scope and Objectives

प्रकृति क्षेत्र एवं उद्देश्य

लधुत्तरात्मक प्रश्न

प्र–1 सामाजिक अध्ययन की आधुनिक अवधारणा क्या है।
What is the new concept of Social Studies?

उत्तर सामाजिक अध्ययन व्यक्ति व समाज से सम्बन्धित होने के कारण एक सामाजिक विषय है। सामाजिक अध्ययन शब्द से अभिप्राय है समाज का अध्ययन। अतः सामाजिक अध्ययन में समाज से सम्बन्धित सभी विषयों, क्रियाओं, मनुष्य के भौतिक एवं सामाजिक तथा विश्व की सम्पूर्ण मानव जाति का अध्ययन किया जाता है।

सामाजिक अध्ययन की नवीन अवधारणा को निम्न बातों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

1. **आधुनिक सभ्यता को स्पष्ट करने वाला विषय**– सामाजिक अध्ययन आधुनिक सभ्यता को स्पष्ट करने वाला विषय है। इसकी पुष्टि एम.पी.मुफात के शब्दों से भी होती है सामाजिक अध्ययन ज्ञान का वह क्षेत्र है जो युवकों को आधुनिक सभ्यता के विकास को समझने में सहायता देता है। ऐसा करने के लिये वह अपनी विषय वस्तु को समाज विज्ञानों तथा समसामयिक जीवन से प्राप्त करता है।
2. **शिक्षण के लिए नवीन आधार प्रदान करने वाला विषय**– बाइनिंग व बाइनिंग के अनुसार, सामाजिक अध्ययन की विषय–वस्तु द्वारा एक ऐसा आधार प्रस्तुत किया जाता है जिसके द्वारा हम अपने छात्रों के समक्ष आज के विश्व को स्पष्ट एवं सरल बना सकें।
3. **शिक्षा का आधुनिक दृष्टिकोण**– फोरेस्टर के अनुसार सामाजिक अध्ययन शिक्षा के आधुनिक दृष्टिकोण का एक अंश है जिसका ध्येय तथ्यात्मक सूचनाओं को संग्रहित या एकत्रित करने की अपेक्षा मानदण्डों, वृतियों, आदर्शो तथा रूचियों का निर्माण करना है।
4. **क्षेत्रीय विषय के रूप में**– एम.पी.मुफात ने लिखा है, सामाजिक अध्ययन वह क्षेत्र है जो युवकों को उस सूचना तथा क्रियात्मक अनुभवों के द्वारा सहायता प्रदान करता है, जिसे प्रभावशाली नागरिकता का आधार माना जाता है।
5. **सामाजिक तथा भौतिक वातावरण का अध्ययन**– जॉन यू. माइकेलिस के अनुसार, सामाजिक अध्ययन का कार्यक्रम मनुष्य तथा अतीत, वर्तमान तथा विकसित होने वाले भविष्य के सामाजिक और भौतिक पर्यावरणों के प्रति उनके द्वारा की गयी पारस्परिक क्रिया का अध्ययन है।
6. **सामाजिक प्राणी के रूप में मानव का अध्ययन**– राष्ट्रीय शैक्षिक समुदाय आयोग के अनुसार सामाजिक अध्ययन वह विषय–वस्तु है जो मानव समाज के संगठन व विकास से सम्बन्धित है और मनुष्य के सामाजिक समूहों के सदस्य के रूप में अध्ययन करती है।
7. **मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन**– ई.वी.वेस्ले ने लिखा है, सामाजिक अध्ययन नामक पद उन विद्यालयों विषयों की ओर संकेत देता है जो मानवीय सम्बन्धों का विवेचन करते है। यह अध्ययन क्षेत्र विषयों के एक संघ तथा पाठ्यक्रम के एक खण्ड का निर्माण करता है। यह खण्ड वह है जो प्रत्यक्ष रूप से मानवीय सम्बन्धों से सम्बन्धित है।

प्र–2 सामाजिक अध्ययन की प्रकृति क्या है संक्षेप में समझाइए।
What is the nature of Social-study explain it?

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries

उत्तर **सामाजिक शब्द का अर्थ–** समाज का, समाज के लिए, समाज द्वारा अध्ययन करना। भारत में माध्यमिक शिक्षा आयोग ने सामाजिक एकीकृत स्वरूप पर बल दिया है। इस सम्बन्ध में माध्यमिक शिक्षा आयोग ने लिखा है कि इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र नागरिक शास्त्र आदि को एक पूर्ण इकाई के रूप में देखना चाहिए। इस एकीकृत स्वरूप की विषय सामग्री ऐसी है जो छात्रों को सामाजिक पर्यावरण में व्यवस्थित कर सके।

इस प्रकार सामाजिक पर्यावरण के अन्तर्गत परिवार, समुदाय, राज्य, तथा राष्ट्र के पर्यावरणों को स्थान प्राप्त हो, जिससे विद्यार्थी उन सामाजिक शक्तियों एवं आन्दोलनों के विषय में जान सकें जिसमें वे रहते है। आयोग के सुझाव पर इस विषय को भारतीय विद्यालयों की पाठ्यचर्या में स्थान प्रदान किया गया है।

वे सभी अध्ययन सामाजिक अध्ययन कहे जा सकते है जिनकी विषय वस्तु का सीधा सम्बन्ध मनुष्य, समाज के सगंठन और विकास से हो तथा जो एक सामाजिक समूह के सदस्य के रूप में मनुष्य को देखे।

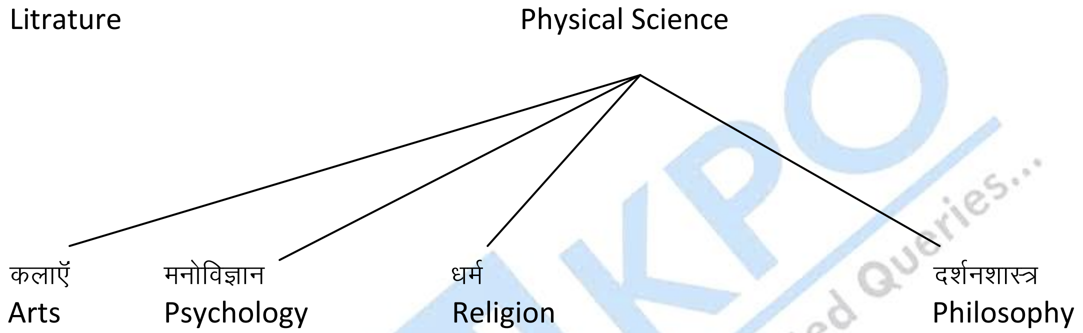

आज सामाजिक अध्ययन का जो स्वरूप हमारे सामने है, वह इसके कमिक विकास का ही परिणाम है। यह विषय हमारे विद्यार्थियों को भूत, वर्तमान के सामाजिक ढॉचें से परिचित कराने उनमें प्रभावशाली जीवन बिताने के लिए आवश्यक कौशल उत्पन्न करने तथा सत्य, न्याय समता भाईचारा, सहयोग, सहनशीलता आदि गुण पैदा करने के लिए है। यह सभी सामाजिक विज्ञानों का एकीकरण करता है।

प्र–3 **सामाजिक अध्ययन की मुख्य विशेषताएँ बताइए।**
Describe the characteristics of social studies?

उत्तर सामाजिक अध्ययन की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. यह वह अध्ययन है जो छात्र–छात्राओं को वातावरण को समझने तथा उसकी व्याख्या करने में सहायता प्रदान करता है जिसमें वे पैदा तथा विकसित हुए है।
2. यह इस तथ्य को समझने में सहायता प्रदान करता है कि आज का मानव सम्पूर्ण विश्व में आर्थिक तथा राजनीतिक रूप से प्रयत्नशील है।
3. यह अध्ययन इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि मानव स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर एक साथ मिलकर जीवनयापन तथा कार्य करता है।
4. यह मनुष्य तथा उसके भौतिक पर्यावरण के बीच होने वाली अन्तः क्रिया का अध्ययन करता है अतः साथ ही इसके प्रत्येक क्षेत्र में सामाजिक तथा अन्य प्रकार के पर्यावरणों का अध्ययन करता है अतः साथ ही इसके प्रत्येक क्षेत्र में सामाजिक तथा अन्य प्रकार के पर्यावरणों का अध्ययन भी निहित हैं
5. यह सामाजिक सरंथाओं की उत्पत्ति एवं विकास की समझदारी है।
6. यह आधुनिक विश्व एवं सभ्यता को सरल एवं स्पष्ट रूप देने में सहायता प्रदान करता है साथ ही यह छात्रों को सामयिक समस्याओं को समझने में सहायता देता है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

7. यह मानवीय सम्बन्धों पर बल देता है।
8. सामाजिक अध्ययन में केवल विषयों का योग ही निहित नही है वरन् यह एक एकीकृत आयाम है।
9. समाजिक अध्ययन इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि हमारे दैनिक जीवन पर विश्व की घटनाओं का क्या प्रभाव पडा है। यह वह अध्ययन है जिसमें अतीत तथा वर्तमान में मानवता को प्रभावित करने वाले मामलों, समस्याओं तथा प्रारूपों का अध्ययन किया जाता है।
10. समाजिक अध्ययन समग्र ज्ञान के एक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है।
11. समाजिक अध्ययन सामयिक जीवन तथा उसकी परिस्थितियों के अध्ययन पर बल देता है।
12. समाजिक अध्ययन शिक्षा में आधुनिक दृष्टिकोण का प्रतिपादन करता है।

प्र–4 सामाजिक अध्ययन के मूल सिद्वान्त क्या है।
What is the Fundamental principle for social studies course?

उत्तर सामाजिक अध्ययन के कुछ प्रमुख सिद्वान्त इस प्रकार है–

1. समाजिक अध्ययन एक अन्तः अनुशासित कोर्स है और इसकी सामग्री मानव–अनुभवों व ज्ञान की अनेक अन्य शाखाओं से चुन कर ली जाती है।
2. यह सामाजिक विज्ञानों की प्रयोगात्मक शाखा है, जिसे स्कूलों के पाठयक्रम में आगामी नागरिकों में उचित अभिवृतियॉं, भावनाऍं तथा कौशल उत्पन्न करने के लिए रखा गया है।
3. सामाजिक परिस्थितियॉं और समस्याऍं समय–समय पर बदलती रहती है, अतः सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र ऐसा है जो लगातार बढता एवं परिवर्तनशील रहता है।
4. सामाजिक अध्ययन की शिक्षण–पद्वति प्रयोगवादी दार्शनिकता पर आधारित है जो मानवता या किसी विशेष समाज की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करती है तथा बालकों को अपने देश विश्व तथा भावी जीवन में सुन्दर जीवन व्यतीत करने के लिए सहायता प्रदान करती है।
5. सामाजिक अध्ययन मानव तथा उसके सामाजिक जीवन का केन्द्र माना जाता है और इसमें स्थानीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय आदि सभी प्रकार की बातें सम्मिलित है।
6. सामाजिक अध्ययन मनुष्य के पिछले इतिहास की अपेक्षा उसके आधुनिक जीवन तथा समस्याओं पर अधिक बल देता है।
7. इसकी सामग्री कॉलेज के विशिष्ठ अध्ययन से पूर्ण स्कूल स्तर की सामान्य शिक्षा के लिए उपयोगी है ताकि बालक उसे पर्याप्त रूचि व सरलता से पढ़ सकें।

प्र–5 सामाजिक अध्ययन के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
Explain the importance of social studies?

उत्तर वर्तमान समय में सामाजिक अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है। इस विषय का महत्व इसलिए अधिक बढ़ जाता है। क्योंकि इसके अध्ययन से छात्र–छात्राऍं सक्रिय एवं जागरूक नागरिक बनते है जिसकी आवश्यकता प्रत्येक राष्ट्र को होती है। एक अच्छे नागरिक के गुणों पर प्रकाश डालते हुए अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज कैनेडी ने कहा था कि, ''यह मत पूछो कि तुम्हारे लिए क्या कर सकता है बल्कि अपने आप से यह पूछो कि तुम देश के लिए क्या काम आ सकते हो''?

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries.

इस विषय के अध्ययन से विघर्थियों में सदाचार, मनुष्यता तथा देश भक्ति के भाव जागृत होते है, जिससे राष्ट्र की प्रगति निश्चित रूप से होती है। इस विषय का अध्ययन हमारे लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योकि इससे निम्न योग्यताओं का विकास बालक में होता है।

1. **सामूहिक जीवन के महत्व का ज्ञान**– सामाजिक अध्ययन एक सामाजिक शास्त्र है जिसका सम्बन्ध सामाजिक व्यवहार, सामाजिक जीवन तथा सामाजिक उन्नति से है। इसकी शिक्षा से विधार्थी सामूहिक जीवन के महत्व को समझ जाते है।
2. **जनसाधारण के लिए उपयोगिता**– इस विषय की शिक्षा जनसाधारण के लिए उपयोगी है। सामाजिक अध्ययन की शिक्षा व्यक्ति में स्वार्थ, त्याग की भावनाएँ भरती है जिससे व्यक्ति में मनुष्यता तथा सहायोग की भावनाएँ आती है।
3. **आदर्श नेतृत्व विकसित करने की आवश्यकता**– कुछ विशेषज्ञों का यह भी मत है कि सामाजिक अध्ययन की शिक्षा से विद्यार्थी राष्ट्र–निर्माण देश भक्त तथा समाज– सुधारक भी बनते है। यह विषय उन सभी कर्तव्यों एवं अधिकारों पर प्रकाश डालता है, जो सामाजिक हित के लिए आवश्यक है, जो सफल सामाजिक जीवन जीने में सहायक होते है।
4. **प्रजातन्त्र में सामाजिक शास्त्र के अध्ययन का महत्व**– आज का युग प्रजातांत्रिक है जनता की मान्यता है कि वर्तमान सरकार का निर्माण कुछ लोगों पर निर्भर नही है वरन् सम्पूर्ण जनता पर निर्भर है। यह विषय प्रजातन्त्रात्मक राज्य के नागरिकों को अधिकार और कर्तव्यों का ज्ञान कराता है।
5. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास**– इस विषय में विद्यार्थी को समाज सम्बन्धी क्रियाओं का क्रमबद्व रूप से अध्ययन करने का अवसर मिलता है। विद्यार्थी नागरिकों की समस्या पर विचार करता है और फिर उनको कार्य रूप में बदलने की कोशिश करता है।
6. **व्यावहारिक उपयोगिता**– आज का युग प्रयोजनवाद का युग है। यही कारण है कि जीवन में उपयोगिता हो। इस उपयोगिता का सम्बन्ध धनोपार्जन से नही है, बल्कि उस ज्ञान को प्राप्त करने से है जिससे मनुष्य अपने जीवन को शांत और सुखमय बना सकें। इसके अतिरिक्त सामाजिक अध्ययन छात्र–छात्राओं को इस योग्य बनाता है कि वे परिवार और समाज के महत्व को समझे और उनके प्रति अपने उत्तरदायित्वों का ठीक प्रकार निर्वाह करें।

प्र–6 सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन में अन्तर क्या है।

What is the difference between social science and social studies?

उत्तर प्रायः यह धारणा है कि सामाजिक अध्ययन तथा सामाजिक विज्ञान का एक ही अर्थ है। यह अन्तर बाहय रूप से नही दिखाई देता है। क्योंकि दोनो ही मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन करते है। इनमें जो अन्तर पाया जाता है, वह गहनता, स्तर एवं प्रयोजन के दृष्टिकोण से है। सामाजिक विज्ञान मानवीय सम्बन्धों का उच्चत्तर एवं विद्वतापूर्ण अध्ययन है जिसमें अनुसंधान खोज तथा प्रयोग के लिए स्थान है। परन्तु सामाजिक अध्ययन विद्यालय पाठ्क्रम का वह अंग है जिसमें विज्ञान के तत्वों विधियों तथा शोधों को सरलतम रूप में शिक्षण की सुविधानुसार रखा जाता है।

सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन में अन्तर निम्न प्रकार है–

क्र.सं.	सामाजिक विज्ञान	सामाजिक अध्ययन
1.	विषय वस्तु का बौद्धिक स्तर उच्च होता है।	विषय वस्तु का बौद्धिक स्तर सामाजिक विज्ञान की

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries.

		अपेक्षा निम्न होता है।
2.	सामाजिक विज्ञान वयस्कों के लिए है।	सामाजिक अध्ययन विद्यालय के बालकों के लिए हैं।
3.	सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र विस्तृत होता है।	सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा संकुचित है।
4.	सामाजिक विज्ञान सैद्धान्तिक अधिक है।	सामाजिक अध्ययन अधिक व्यावहारिक है।
5.	सामाजिक विज्ञान का मुख्य तत्व विद्वता एवं सामाजिक उपयोगिता है।	सामाजिक अध्ययन का मुख्य तत्व निदेशात्मक उपयोगिता है।
6.	सामाजिक विज्ञान का अध्ययन करना ऐच्छिक है।	सामाजिक अध्ययन अनिवार्य विषय है।

वेस्ले ने इन दोनो में अन्तर स्पष्ट करते हुए लिखा है, सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन दोनों मानवीय सम्बन्धों की विवेचना करते हैं, परन्तु प्रथम प्रौढ़ावस्था पर तथा दूसरा बालकों के स्तर पर अतः यह स्पष्ट है कि सामाजिक अध्ययन मूलतः सामाजिक विज्ञानों से ही अपनी विषयवस्तु ग्रहण करता है। सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान है जिसको निर्देशात्मक अभिप्रायों के लिए सरलीकृत एवं संगठित किया गया है। अतः सामाजिक विज्ञानों तथा सामाजिक अध्ययन में दार्शनिक या सैद्वान्तिक अन्तर नही है वरन् केवल व्यावहारिक एवं सुविधा के दृष्टिकोण से अन्तर है।

प्र–7 **सामाजिक अध्ययन का अर्थ बताते हुए परिभाषित कीजिए।**

What is the meaning of social study desine it?

उत्तर सामाजिक अध्ययन शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। इसमें सभी सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इससे तात्पर्य है समाज का समाज के लिए समाज द्वारा अध्ययन अर्थात् समाज सम्बन्धी सभी संस्थाओं व संगठनों का अध्ययन जिससे की प्रगति होती है। अध्ययन शब्द से तात्पर्य है प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक रूप से जीवन में प्रयुक्त करना। इस प्रकार हम कह सकते है कि सामाजिक अध्ययन मानव के सभी दृष्टिकोण का सम्पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसे मानव सभ्यता के विकास की श्रृंखला समझा जाता है। इसका स्वरूप जटिल तथा विशाल है। इसमें सभी सामाजिक संस्थाओं व संगठनों के विकास का अध्ययन किया जाता है। यह मानव जीवन के भूतकाल, वर्तमान तथा भविष्य का अध्ययन करवाता है। इसमें सभी विषय राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र, इतिहास, भूगोल के आधारभूत सि़द्वान्तों का अध्ययन किया जाता है।

इस प्रकार यह एक एकीकृत विषय है, जिसकी सामग्री मानव ज्ञान एवं अनुभवों पर आधारित है।

सामाजिक अध्ययन की प्रमुख परिभाषाएँ

1. **माइकेलिस के अनुसार**– ''सामाजिक अध्ययन सामाजिक एवं भौतिक वातावरण से सम्बन्धित क्रियाओं का अध्ययन है''।
2. **वेस्ले के अनुसार**– ''सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान के आधारभूत तत्वों का अध्ययन है''।
3. **जे.एफ. फोरेस्टर के अनुसार**– ''सामाजिक अध्ययन उस समाज का अध्ययन है जिसमें रहकर छात्रों का सर्वागीण विकास होता है''।
4. **जारोलमिक के अनुसार**–''सामाजिक अध्ययन मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन है''।

5. **बाइनिंग तथा बाइनिंग–** "सामाजिक अध्ययन की सामग्री विद्यार्थियों को विश्व को समझाने का आधार प्रस्तुत करती है। उनमें विशिष्ट कुशलताओं की आदतों का प्रशिक्षण देती है। तथा उनमें अभिवृतियों तथा आदतों का विकास करती है जिससे कि वे प्रभावी सदस्य के रूप में अपना स्थान बना सके"।
6. **कोठारी शिक्षा आयोग–** "सामाजिक अध्ययन पढ़ाने का उद्देश्य छात्र को अपने पर्यावरण का ज्ञान, मानव सम्बन्ध को समझने की शक्ति और कुछ अभिवृतियों तथा मूल्यों के जो कि लोगों, राज्य, राष्ट्र और विश्व के मामलों में बुद्विमतापूर्वक भाग लेने के लिए अपरिहार्य है प्राप्त करने में सहायता देना है"।

प्र–8 माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण के मुख्य उद्देश्य क्या है?
What is the main aim of teaching social studies at secondary level?

उत्तर माध्यमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्य निम्न होने चाहिए–

1. **मानव सभ्यता की बुनियादी एकता का ज्ञान–** इसी स्तर पर विद्यार्थियों को बताया जाना चाहिए कि देखने में सभ्यताएँ अलग–अलग दिखाई देती है परन्तु वस्तुत उनमें बुनियादी एकता विद्यमान है। इसी बुनियादी एकता के आधार पर विश्व संस्कृति तथा वसुधैव कुटुम्बकम की कल्पना की गई है।
2. **परिवर्तन प्रकिया का ज्ञान–** माध्यमिक स्तर पर विद्यर्थियों को परिवर्तन प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए। उसे इस तथ्य से अवगत कराना चाहिए कि परिवर्तन जीवन प्रक्रिया का शाश्वत नियम है। वर्तमान युग तक पहुॅचते–पहुॅचते मानव समाज और जीवन में कई प्रकार के परिवर्तन हुए है।
3. **विभिन्न संस्कृतियों के प्रशंसात्मक दृष्टिकोण का विकास–** वर्तमान मानव संस्कृति आज जिस विकास को पहुॅची हुई है किसी एक जाति या देश का कार्य नही बल्कि विभिन्न संस्कृतियों के सहयोग से इसका विकास हुआ है। इसी तथ्य के आधार पर विद्यार्थियों में संसार की विभिन्न संस्कृतियों के प्रति प्रशंसात्मक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए।
4. **लोकतन्त्र की आवश्यकता–** मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास के लिए लोकतन्त्र का होना अत्यन्त आवश्यक है। लोकतन्त्र केवल शासन विधि नही है बल्कि जीवन विधि भी है। आज विश्व के लगभग सभी देश लोकतन्त्र को मान्यता दे चुके है। इसी स्तर पर विद्यार्थियो को यह अनुभव कराना चाहिए।
5. **अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास–** माध्यमिक स्तर तक पहुॅचते पहुॅचते छात्रों मे उतनी योग्यता विकसित हो जाती है कि वे अपने देश के बाहर के लोगो में रूचि ले सके। उन्हे समझाया जा सकता है कि विश्व के सभी देश एक दूसरे पर निर्भर है। सभी देशो ने किसी न किसी रूप में मानव कल्याण के विकास में सहयोग दिया है। विश्व संस्कृति के विकास में विश्व के दार्शनिकों एवं विचारकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और आज प्रत्येक देश विश्व को विनाशात्मक युद्व से बचाने के लिए प्रयत्नशील है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

प्र–9 लक्ष्य एवं उद्देश्यों की परिभाषा देते हुए दोनो में अन्तर स्थापित कीजिए।
Write difference between aim and objective with their definition.

उत्तर सामान्यतः लोग लक्ष्य एवं उद्देश्य को एक समान समझकर इन शब्दों को प्रयुक्त कर लेते है–
लक्ष्य–लक्ष्य पूर्व निर्धारित साध्य होते है। जो किसी कार्य की क्रिया का मार्गदर्शन करता है।

प्राप्य उद्वेश्य – प्राप्य उद्देश्य छात्र के व्यवहार में वह इच्छित परिवर्तन है। जो विद्यालय द्वारा पथ–प्रदर्शित अनुभव का परिणाम होता है।

लक्ष्य एवं उद्वेश्य में अन्तर

क्र.सं.	लक्ष्य	उद्देश्य
1.	इनका क्षेत्र व्यापक है।	इनका क्षेत्र सीमित है।
2.	यह एक सामान्य कथन है।	यह एक निश्चित कथन है।
3.	सामान्य कथन होने के कारण ये अनिश्चित होते हैं।	ये निश्चित कथन के कारण विशिष्ट होते है।
4.	इन्हें पूर्ण रूप से प्राप्त करना सम्भव नहीं होता, क्योंकि यह आदर्शवादिता पर आधारित होते हैं।	यह व्यावहारिक होते है व पूर्ण रूप से प्राप्य होते हैं।
5.	यह निश्चित दिशा निर्देश नहीं देते हैं।	उद्धेश्य निश्चित दिशा निर्देश प्रदान करते है।
6.	इनके माध्यम से शिक्षण की विभिन्न प्रणालियों को निर्धारित नहीं किया जा सकता।	जबकि इनके द्वारा शिक्षण की विभिन्न प्रणालियों का निर्धारण किया जा सकता है।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्र–1 सामाजिक अध्ययन विषय में सह – समबन्ध की अवधारणा क्या है आप सामाजिक अध्ययन का नागरिक–शास्त्र व इतिहास के साथ सह–सम्बन्ध स्थापित कीजिए।

What is the concept of correlation in teaching of social studies? How you will correlate social studies with civics and history?

उत्तर **सह सम्बन्ध का अर्थ–** सह सम्बन्ध का अर्थ है दो या अधिक वस्तुओं शिक्षा में सह सम्बन्ध या समवाय का अर्थ है। विभिन्न विषयों का इस प्रकार से शिक्षण करना कि उनसे प्राप्त ज्ञान में सम्बन्ध हो। उन्हे एक दूसरे से सम्बन्धित करके पढाया जाए। एक विषय पढाते समय कभी कभी ऐसे सन्दर्भ या सम्बन्धित कर देना शिक्षा में समन्वय कहलाता है। शिक्षा में सह–सम्बन्ध का सर्वप्रथम प्रयोग हरवर्ट ने किया।

शिक्षा के क्षेत्र में सह–सम्बन्ध के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए हरवर्ट ने कहा कि शिक्षा में सह–सम्बन्ध होना चाहिए जिससे एक विषय पढ़ाते समय यदि उसका सम्बन्ध अन्य विषय से स्थापित कर दिया जाए तो विषय अधिक रोचक तथा आकर्षक बन जाता है।

स्कूल स्तर पर कोई ऐसा विषय नही ऐसा कार्य क्षेत्र नही जिसका सामाजिक अध्ययन के साथ सम्बन्ध न हो। वस्तुतः सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मानव का अध्ययन करना सामाजिक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है और सभी विषय किसी न किसी रूप में मानवीय जीवन से सम्बन्धित है। स्कूल स्तर के विषय–अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल, भौतिक शास्त्र, रसायन विज्ञान, जीवन विज्ञान, भाषाएँ, कला, गणित आदि के साथ सामाजिक अध्ययन का गहरा सम्बन्ध है।

1. **सामाजिक अध्ययन और इतिहास–** इतिहास मनुष्य को अतीत की गौरव पूर्ण देन है। इतिहास हमें अतीत कालीन मानवीय समाज का ज्ञान प्रदान करता है। **चार्ल्स फर्थ** ने लिखा है– इतिहास न केवल ज्ञान की

एक शाखा है जिसे पढने के लिए पढा जाय, वरन् एक विशेष प्रकार का ज्ञान है, जो मनुष्य के दैनिक जीवन के लिए उपयोगी है।''

इतिहास शिक्षण का अपना एक विशिष्ट उद्देश्य होता है। भूतकाल के प्रकाश में वर्तमान को समझना। सामाजिक अध्ययन शिक्षण का उद्धेश्य भी वर्तमान पर्यावरण को समझना व उससे समायोजन स्थापित करना है। अतः स्पष्ट है कि इतिहास व सामाजिक अध्ययन शिक्षण का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इतिहास भूतकाल का दर्पण है। हिल ने भी लिखा है– ''इतिहास के शिक्षण से छात्रों को सत्य की खोज करने के लिए तत्पर बनाया जा सकता है। और विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों एवं प्रभावों और उनकी सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को समझने की क्षमता उत्पन्न करने अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जा सकता है''।

2. **सामाजिक अध्ययन और भूगोल**– भूगोल के द्वारा पृथ्वी का अध्ययन किया जाता है। भूगोल विश्व की प्राकृतिक दशाओं का विवेचन करता है वर्तमान विचारधारा के अनुसार भूगोल मानव का अध्ययन करता है। भूगोल का प्राकृतिक एवं सामाजिक अध्ययन से भी गहन सम्बन्ध है। इस वर्तमान समय में भूगोल का विशेष महत्व है। **यूनेस्को** का मत है– ''भूगोल के सर्वाधिक महत्व की बात यह है कि राजनीतिक विभाजन के उपरान्त पृथ्वी के निवासी परस्पर अपने आर्थिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों में उत्तरोतर निर्भर होते जा रहे है''।

इस प्रकार विद्यालय पाठयक्रम में भूगोल के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा विषय नही है जो छात्रों मे ऐसी भावनाएँ जाग्रत कर सके, जिससे उनमें विभिन्न देशवासियों के प्रति सौहार्द्र एवं सहानुभूति बढे और विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों के मध्य जीवन की समस्याओं को भली–भाँति समझ सकें। इसलिए **वालिस** लिखते है– ''दृष्टिकोण की भव्यता एवं विशालता के लिए, स्पन्दशील मानव जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध के लिए, चेतन एवं अचेतन पदार्थो एवं आश्चर्यपूर्ण विश्व की यथार्थ जानकारी के लिए विद्यालय में पढ़ाया जाने वाला कोई भी विषय भूगोल की समता नही कर सकता''।

3. **सामाजिक अध्ययन और नागरिक शास्त्र**– नागरिकशास्त्र का अध्ययन प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमावश्यक है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस प्रकार समाज के प्रति मनुष्य के क्या कर्त्तव्य है और वह किस प्रकार अपने समाज का एक आदर्श नागरिक और उपयोगी सदस्य बन सकता है। मनुष्य इन समस्त बातों का ज्ञान नागरिकशास्त्र के अध्ययन से प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त यह मनुष्य को अपने कुटुम्ब, पडोसियों, नगर, प्रदेश, देश तथा सम्पूर्ण विश्व के प्रति अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान कराता है। आधुनिक युग में लोकतन्त्रीय ढंग से जीवन–यापन करना मानव का प्रमुख कार्य है। इसमें नागरिकशास्त्र की महत्वपूर्ण भूमिका है।

अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं और उनके समाधान के लिए भी सहायक हैं इस संदर्भ में **बाइनिंग एवं बाइनिंग** ने लिखा है– ''नवीन नागरिकशास्त्र को प्रायः सामुदायिक नागरिकशास्त्र के नाम से पुकारा जाता है जिसमें उसके सामाजिक वातावरण के प्रति छात्र के सम्बन्ध पर बल दिया जाता है, जो उत्तरोत्तर वृहतः समुदायों स्थानीय समुदाय, कस्बा या नगरीय समुदाय राज्य समुदाय राष्ट्रीय समुदाय और विश्व समुदाय की श्रेणी के रूप में अभिव्यक्त/धारण करता है''।

4. **सामाजिक अध्ययन और अर्थशास्त्र** – मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति परस्पर सम्बन्धित है। इस प्रकार सामाजिक रूप से सम्बन्धित मनुष्य की अपने जीवन यापन हेतु विविध क्रियाएँ करता है। मनुष्य का अर्थ से सम्बन्धित क्रियाओं का अध्ययन अर्थशास्त्र में होता है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **मार्शल** ने लिखा है कि ''अर्थशास्त्र जीवन के सामान्य व्यवसाय में मानवजाति का अध्ययन है। इसमें व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्रियाओं के उस भाग की जांच की जाती है, जो जीवनयापन की आवश्यक सामग्री के उपयोग और उपलब्धि से अधिक घनिष्ठता से सम्बन्धित है''। इस प्रकार अर्थशास्त्र शिक्षण से

छात्रों को आर्थिक नियमों, सिद्वान्तों एवं अवधारणाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इसके अध्ययन से छात्र आर्थिक नियोजन की जानकारी प्राप्त करने में सफल हो सकता है। बेरोजगारी, जनाधिक्य, निम्न उत्पादनशीलता आदि को समझने तथा उसके प्रभावों को जानने में सफल हो सकता है। इससे स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र का हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में विशेष महत्व है।

5. **सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान**– वर्तमान में नित नये अविष्कारों के होने से सामाजिक अध्ययन भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, भूगर्भ शास्त्र, जीव विज्ञान आदि सभी विज्ञान के अति निकट आ गये है। विज्ञान ने नवीन अविष्कार करके सामाजिक जीवन में नवीन चमत्कार सा ला दिया है। प्राथमिक स्तर से ही विज्ञान की शिक्षा देना प्रारम्भ कर दिया जाता है। विद्यार्थियों को केवल विज्ञान के विभिन्न सिद्वान्तों, सूत्रों तथा अनुसंधानों का ही ज्ञान प्रदान नही किया जाता है बल्कि इसे मानवता से सम्बन्धित किया जाता है। जैसे अणु बम बनाना विज्ञान का विषय है परन्तु इसका उचित उपयोग सामाजिक अध्ययन का विषय है कि मानवता के लिए क्या उचित व अनुचित है। वर्तमानकाल में नित नये अविष्कारों का मानव समाज पर क्या प्रभाव पड़ता हैं यह विज्ञान को सामाजिक अध्ययन के निकट ले जाता है। अतः कह सकते है कि विज्ञान का सामाजिक अध्ययन के साथ परस्पर सम्बन्ध है।

6. **सामाजिक अध्ययन एवं भाषा**– भाषा साहित्य का माध्यम है। भाषा विचारों को ग्रहण करके शिक्षण देना अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। भाषा के बिना किसी भी विषय का शिक्षण देना असम्भव है। मानव की सभी सामाजिक क्रियाएॅ भाषा के माध्यम से ही अन्तः क्रिया द्वारा पूर्ण होती है। भाषा की पाठयवस्तु से संकलित निबन्ध/कहानियॉ, कविताएॅ आदि के विविध पहलुओं का प्रस्तुतीकरण रहता है। भाषा द्वारा विद्यार्थी सामाजिक अध्ययन में सामाजिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों का ज्ञान कवियों साहित्यकारों के महान विचार आदि की अभिव्यक्ति होती है। अतः भाषा और सामाजिक अध्ययन एक दूसरे पर आश्रित है।

7. **सामाजिक अध्ययन एवं मनोविज्ञान**– मनोविज्ञान मानव की मनोदशा, आचरण तथा व्यवहार का अध्ययन करता है। मनोविज्ञान, सामाजिक विषय का ही एक अंग है। सामाजिक अध्ययन में मानव की सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है क्योंकि व्यक्ति का व्यवहार समाज में रहकर ही प्रस्तुत होता है। अतः मनोविज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन पूर्ण रूपेण जुड़े हुए है।

8. **सामाजिक अध्ययन एवं गणित**– जीवन में कोई भी क्षेत्र ऐसा नही है जहॉ गणित की आवश्यकता न हों। जीवन की विभिन्न स्थितियों के साथ गणित को सम्बन्धित करके पढाने से विद्यार्थियों को समाज का उपयोगी सदस्य बनाने में सहायता मिलती है। डाकखाना, बैकिंग, बचतखाना, घरेलू बजट बनाने का शिक्षण प्राप्त करके व्यक्ति धीरे–धीरे प्रक्रिया को समझने लगता है। अतः विश्लेषण करने तथा उनका उचित समाधान ढूंढने में गणित का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

9. **सामाजिक अध्ययन एवं कलाऍ**– विद्यालय पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार की कलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। कला के माध्यम से विद्यार्थियों में सौन्दर्यात्मक बोध को उन्नत किया जाता है, उनकी भावनाओं में उदारता का समावेश किया जाता है। जिससे वे समाज का उपयोगी सदस्य बनें। विभिन्न कलाओं में ड्राइंग, पेन्टिंग, संगीत तथा अन्य ललित कलाएॅ आ जाती है। कलाएॅ एवं सामाजिक अध्ययन के शिक्षण को सरलता, सरसता तथा सुन्दरता प्रदान करती है। सामाजिक अध्ययन का शिक्षण देते समय अध्ययन केवल पाठ्यपुस्तक तथा मौखिक शिक्षण तक ही सीमित नही रहते बल्कि उन्हें विद्यार्थी को कई प्रकार के मॉडल, चित्र, मानचित्र आदि का भी ज्ञान कराना होता है। इन सबका सम्बन्ध कलाओं सें है। वर्तमान में शिक्षण की विधि मौखिक न रहकर क्रियात्मक होती जा रही है। कलाएं, सामाजिक अध्ययन के शिक्षण को क्रिया का आधार प्रदान करती है। इसके विपरीत कलाएं भी सामाजिक अध्ययन से रचनात्मक सामग्री प्राप्त करती है। कला का शिक्षण विभिन्न कलाकारों की कलाओं का उल्लेख करते समय कलाकारों के युग की

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक स्थितियों का उल्लेख अवश्य करता है। कलाकारों की अमर कृतियों के पीछे सम्बन्धित युग की छाया स्पष्ट रूप से नजर आती है। यह सामाजिक अध्ययन तथा कलाओं की परस्पर आदान प्रदान को ही सिद्ध करता है।

सामाजिक अध्ययन ज्ञान सम्बन्धों एवं अतः सम्बन्धों का अध्ययन है सामाजिक ज्ञान का अभिप्राय सामाजिक तथ्यों की जानकारी से है।

जॉन ड्यूवी के शब्दों में कहा जा सकता है कि ''विभिन्न अध्ययनों का वास्तविक केन्द्र मिलन बिन्दु उनका सामाजिक उद्गम और कार्य है''।

प्र–2 सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्य से आप क्या समझते है? सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्य क्या होने चाहिए?

What do you mean by objective of Social Studies?

उत्तर **जे.एम. फोरेस्टर**– ''सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य तथ्यात्मक सूचनाओं कों संग्रहीत करने की अपेक्षा मानदण्डों, वृत्तियों, आदर्शो तथा रूचियों का निर्माण करता है।''

- **राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद (N.C.E.R.T.)**– ''समाजशास्त्र का उद्देश्य बालकों के सम्मुख सामाजिक ढाँचे व सामाजिक प्रक्रिया को प्रस्तुत करना है जिससे उन्हें (वांछित) परिवर्तन के अनुकूल बनाया जा सकें''।
- **एम.पी. मुफात** ने अपनी पुस्तक **"Social Studies Instruction"** में सामाजिक अध्ययन के उद्देश्यों की तालिका निम्न रूप से दी है :–
  - प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण का ज्ञान देना।
  - छात्रों को संस्कृति व सभ्यता के साथ–साथ महापुरूषों की समाज के लिये देन आदि का भी ज्ञान कराना है।
  - मानव द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार से की जा सकती है। सामाजिक अध्ययन इसका ज्ञान कराता है।
  - छात्रों में मानवता के गुणों को विकसित करना।
  - छात्रों में विचार, कल्पना एवं तर्कशक्ति को विकसित करना।

माकेलिस के अनुसार सामाजिक अध्ययन विषय के शिक्षण के ध्येय इस प्रकार है–

- मानवीय सम्बन्धों से सम्बन्ध स्थापित कराना व इस आधार पर छात्रों में सामाजिक गुणों तथा कुशलताओं का विकास करना।
- मानसिक, बौद्धिक, चारित्रिक, आर्थिक नागरिक एवं प्रजातान्त्रिक प्रवृत्तियों का विकास करना।
- मानवीय हित की भावना का विकास करना।
- छात्रों में विश्व बन्धुत्व की भावना को विकसित करना।

आर.सी. एडविन ने सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों को निम्नलिखित रूप में बताया है–

- छात्रों को ज्ञान एवं समझदारी प्रदान करना।
- छात्रों का वातावरण के अनुसार कार्य करने की क्षमता प्रदान करना।
- वांछनीय प्रवत्तियों का विकास करना।
- सद्व्यवहार का प्रशिक्षण प्रदान करना।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

- आधारभूत कुशलताओं का विकास करना।
- तुलना, समालोचना, समीक्षा, मूल्यांकन इत्यादि का विकास करना।

इन उद्देश्यों में ज्ञानवर्द्धन, योग्यता सृजन तथा तार्किक एवं रचनात्मक दक्षताओं के विकास आदि की विविधता को महत्व दिया गया है।

बाईनिंग एवं बाईनिंग ने सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों को दो वर्गो में विभक्त किया गया है–

1. सामान्य लक्ष्य 2. मुख्य लक्ष्य

1. सामान्य लक्ष्य–

- बालकों को वातावरण, रूचि एवं योग्यतानुसार भावी जीवन की तैयारी के लिये शिक्षा व्यवस्था करना।
- छात्रों का प्रजातांत्रिक एवं लोकतात्रिंक विषयों का ज्ञान देना।
- छात्रों को सामाजिक विज्ञान के व्यवहारिक पक्ष का ज्ञान देना।
- छात्रों में सामाजिकता, सहनशीलता, सहयोग, धैर्य, नेतृत्व व मानवीय आदि गुणों का विकास करना।

2. मुख्य लक्ष्य–

- छात्रों को समाजशास्त्र के तत्वों का ज्ञान देना।
- बालकों को इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र तथा नागरिकशास्त्र का संयुक्त स्वरूप प्रस्तुत कर उसका ज्ञान देना।
- बालकों में स्वस्थ चिन्तन तथा तर्कशक्ति का विकास करना।
- छात्रों में स्वाध्याय की प्रवृति का विकास करना।
- छात्रों को आदर्श एवं नैतिक जीवन की कला का ज्ञान देना।
- छात्रों में विश्व–बन्धुत्व की भावना को विकसित करना।
- छात्रों में नैतिकता की भावना विकसित करना।

एडम्स वेस्ले ने सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों को निम्न प्रकार बताया है–

- व्यक्तित्व का विकास करना।
- सामाजिक विचारों का ज्ञान देना।
- सहयोग की भावना को विकसित करना।
- समाज के साथ सक्रियता के साथ सहयोग देना।
- परिवार एवं समाज को सहयोग देना।
- समाज के मूल्यो को मान्यता देना।
- लोगों के कार्यो का उचित मूल्यांकन करना।
- जाति, धर्म तथा वर्ग के भेदभाव को भूलाकार राष्ट्रीयता के प्रति छात्रों में प्रेम जागृत करना।
- वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को विकसित करना।
- मानसिक एवं बौद्धिक क्रियाओं को विकसित करना।
- बालकों में राजनैतिक विचारों को विकसित करना।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

- बालकों में विवेक–शक्ति को विकसित करना।
- छात्रों को एक योग्य, तटस्थ, नागरिक बनाना जिससे वे किसी घटना या कार्य का निष्पक्ष व बिना किसी पूर्व धारणा के आधार पर मूल्यांकन कर सकें।

सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्य–

1. **संस्कृति व सभ्यता सम्बन्धी ज्ञान प्रदान करना–** सामाजिक अध्ययन मानव के सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है। मानव सभ्यता का विकास और इसका प्राचीन इतिहास छात्रों को वांछित ज्ञान प्रदान करता है। इसके साथ साथ सामाजिक अध्ययन शिक्षण का मुख्य उद्देश्य रहन सहन तथा वेशभूषा, राष्ट्रीय, पर्व, उत्सव विभिन्न धर्मो के सामान्य सिद्धान्त आदि का ज्ञान छात्रों के लिये अति आवश्यक है तभी उन्हें समाज के व्यापक स्वरूप तथा सांस्कृतिक विविधता के साक्षात् दर्शन हो सकेंगे।
2. **प्रजातंत्र की शिक्षा प्रदान करना–** आज पूरे विश्व ने लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को अंगीकार कर लिया है यह लोगो के द्वारा तथा लोगो के लिये व्यवस्था है। चुनावों के द्वारा अपने प्रतिनिधियों का चुनना, सरकार बनाना तथा संतोषजनक कार्य न करने पर सरकार को हटाना, जनता के लिये कानून बनाना तथा उसमें आवश्यक संशोधन करना आदि कार्य कभी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नागरिकों के द्वारा ही किये जाते है दूसरे शब्दों में लोकतंत्र व्यवस्था की सफलता पूर्णतया नागरिकों पर ही निर्भर है।
3. **नागरिक गुणों का विकासः–** मनुष्य समाज के साथ–साथ राज्य का भी सदस्य होता है अतः किसी राज्य का नागरिक होने के नाते उसके कुछ नागरिक कर्त्तव्य भी है जिनका निर्वाह करना उसके लिये अनिवार्य है अपने इन कर्त्तव्यों का पालन करना इसके लिये कानूनी रूप से भी जरूरी हैं। इससे बालकों को अपने भावी जीवन के लिये नागरिकता की शिक्षा मिलती है तथा उनके आदर्श नागरिक बनने का मार्ग प्रशस्त होता है।
4. **सामाजिक आचरण का विकास–** सामाजिक अध्ययन शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में सामाजिक गुणों का विकास करना है जिससे उनके आचरण में स्वतः ही सामाजिकता का समावेश हो सके। मनुष्य स्वभाव से ही सामाजिक प्राणी है उसे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा सफल जीवन मापन के लिये हर पल और हर कदम समाज की आवश्यकता है। इन्हीं भावनाओं को विकसित करना और छात्रों के व्यवहार मे वांछित परिवर्तन लाना ही सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य है बालकों के मन में किसी भी कार्य को करते समय यह विचार आवश्यक है कि वे समाज का अंग है तथा उनके व्यवहार से अन्य किसी सदस्य को असुविधा न हो और न ही कटुता का वातावरण उत्पन्न हो, यह भावना विकसित करना ही सामाजिक अध्ययन शिक्षण का लक्ष्य है।
5. **सामाजिक विकास का ज्ञान–** सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य छात्रों के सम्मुख समाज के अतीत व विकास की स्पष्ट झांकी प्रस्तुत करना है जिससे वर्तमान ढाँचे को आसानी से समझा जा सके जैसे आदि मानव सभ्यता क्या थी, वे लोग कैसे रहते थे, क्या खाते थे, मानव सभ्यता का विकास धीरे धीरे कैसे हुआ तथा बदलती हुई परिस्थितियों में मनुष्य ने क्या–क्या प्रगति की है?
6. **सामाजिक ज्ञान की प्राप्ति–** सामाजिक अध्ययन की क्रियाओं का अध्ययन है इसमें छात्रों को समाज के रीति–रिवाजों, सभ्यता, संस्कृति व नियमों से परिचित कराया जाता है सामाजिक अध्ययन का उचित ज्ञान सम्पूर्ण इतिहास तथा मानव अनुभवों की परिवर्तन तथा विकास के माध्यम से रूप में दिखाता है जिससे छात्र अवगत हो जाते है कि वर्तमान समय में व्यक्ति के स्थान पर समाज का महत्व बढ रहा है क्योंकि वैज्ञानिक प्रगति के कारण सामाजिक परिवर्तन होना स्वाभाविक है।
7. **व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास–** सामाजिक अध्ययन द्वारा बच्चों को सामाजिक एवं भौतिक वातावरण का ज्ञान दिया जाता है सामाजिक समस्याओं से अवगत कराके उनमें परिस्थितियों के साथ समायोजन करने

की शक्ति का विकास किया जाता है, जो कि बच्चे के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करनें में सहायक होती है।

8. **छात्रों को सामाजिक एवं भौतिक वातावरण से परिचित करना–** छात्रों की सामाजिक एवं भौतिक वातावरण से अवगत होना आवश्यक है ये वे वातावरण है जिनमें रहकर बच्चे के व्यक्तित्व का विकास होता है। बच्चे के लिये यह जानना आवश्यक है कि वातावरण का निर्माण कैसे होता है, चारों तरफ का वातावरण कैसा है और उसे किस प्रकार सुधारा जा सकता है सामाजिक अध्ययन के एकीकृत विषय से छात्र वर्तमान तथा भूतकाल का ज्ञान प्राप्त करके भावी जीवन के लिये तैयार होते है।

9. **विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास–** वैज्ञानिक अविष्कारों तथा शब्दों के मध्य परस्पर निर्भरता ने आज के युग में अन्तर्राष्ट्रीयता के महत्व को उजागर किया है। मानव इतिहास ने उग्र राष्ट्रवाद के कारण विश्व युद्धों की कड़वाहट का स्वाद चखा है। तत्पश्चात् विश्व में शान्ति तथा सुरक्षा को कायम करने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे – ''लीग ऑफ नेशन्स'' तथा ''संयुक्त राष्ट्र संघ'' की स्थापना की गई। वर्तमान युग राष्ट्रीयता के संकुचित दायरें में कैद न होकर वसुधैव कुटुम्बकम के धरातल पर खडा है। अतः यही भावना छात्रों में जागृत करने की आवश्यकता है। इस भावना को जाग्रत करने में सामाजिक अध्ययन की महत्वपूर्ण भूमिका है।

10. **परस्पर निर्भरता के महत्व को दर्शाना–** वर्तमान युग में सभ्यता के आवश्यकताएं असीम हो गई है कोई व्यक्ति अथवा राष्ट्र अपनी इन आवश्यकताओं की पूर्ति अपने बलबूते पर नही कर सकता। आज विश्व व्यापार और विशिष्ट निर्मित वस्तुओं के आयात निर्यात के बगैर विश्व–अर्थव्यवस्था की कल्पना करना भी असम्भव है फिर यह परस्पर निर्भरता आर्थिक क्षेत्र अतिरिक्त सामाजिक तथा राजनैतिक आदि सभी क्षेत्रों में है इसलिये छात्रों के मस्तिष्क में इस भावना को जागृत करना तथा इसके महत्व को दर्शाना बहुत ही चिन्तन में सकारात्मक परिवर्तन आएगा और उनमें सहयोग, सहकारिता तथा भाईचारें के गुणों का विकास होगा। पारस्परिक निर्भरता की भावना को विकसित करने के उद्देश्य की पूर्ति सामाजिक अध्ययन शिक्षण द्वारा प्रभावी ढंग से हो जायेगी।

11. **तर्क और चिन्तन शक्ति का विकास–** सामाजिक अध्ययन शिक्षण का महत्वपूर्ण उद्देश्य बालकों में तर्क और चिन्तन शक्ति का विकास करना है। ठोस, तथ्यों, तुलनात्मक विश्लेषण तथा समस्या निवारण से सम्बन्धित विषय सामग्री छात्रों में स्पष्ट व निष्पक्ष चिन्तन के लिये मार्ग प्रशस्त करती है। व्यक्तिगत जीवन में आने वाली समस्याओं के समाधान में छात्रों को इस चिन्तन शक्ति और तर्क योग्यता में कदम कदम पर लाभ मिलेगा। इस प्रकार सामाजिक अध्ययन इस लक्ष्य की प्राप्ति में बहुत योगदान देता है।

12. **वातावरण के अनुसार स्वयं की ढालने की योग्यता–** सामाजिक अध्ययन शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में स्वयं को वातावरण तथा बदलते परिवेश के अनुसार ढालने की योग्यता का निर्माण करना हैं भूतकाल तथा वर्तमान में घटने वाली घटनाओं की पूर्ण जानकारी तथा अतीत में हुई ऐतिहासिक भूलों पर एक नजर उन्हें वातावरण के अनुसार ढलने की प्रेरणा देगी। भूतकाल में हुई विभिन्न संघर्षो और उनके परिणामों को भावी मार्गदर्शन प्रशस्त होगाा।

13. **सम्पूर्ण सामाजिक ज्ञान को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करना–** सामाजिक अध्ययन विभिन्न विषयों जैसे – इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र तथा अर्थशास्त्र का एकीकृत रूप हैं। सामाजिक अध्ययन उद्देश्य को उनके वातावरण सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने, मानवीय सम्बन्धों की समक्ष और ऐसे अभिमत तथा मूल्यों में सहायक होने से है जो समुदाय, राज्य, राष्ट्र तथा विश्व के मामलों में विवेकपूर्ण ढंग से भाग लेने के लिये उपयोगी है भारत में अच्छी नागरिकता तथा भावात्मक एकीकरण की स्थापना के लिये सामाजिक अध्ययन का प्रभावी कार्यक्रम अनिवार्य है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries

14. **अच्छी आदतों व उचित कौशल का विकास–** उचित अभिवृत्तियाँ व्यवहार का महत्वपूर्ण अंग है, अभिवृद्धि दो प्रकार की होती है जो बौद्धिक एवं अभिवृत्ति तथ्यों पर आधारित होती है। भावनात्मक अभिवृद्धि दिल से सम्बन्धित होती है इसलिये इसमें ईर्ष्या, सुस्ती, आज्ञा का उल्लघंन आदि तत्व आते है अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह छात्रों की उचित अभिवृति व कौशल विकास में सहायता करें।
15. **विद्यार्थी का समाजीकरण–** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज के बिना मनुष्य का कोई अस्तित्व नही, जो व्यक्ति समाज के बिना रह सकता है वह या तो पशु है या देव, समाज में रहने के लिये हर प्राणी में कुछ गुण अवश्य होना चाहिए जिससे वह अपने आपकों समाज के साथ समायोजित करके अच्छा नागरिक बना सके। सामाजिक अध्ययन छात्रों में सहयोग, सहकारिता भाईचारा, त्याग, सहनशीलता, नेतृत्व जैसे गुणों को विकसित करके उनका समाजीकरण करता है जिससे वह सुयोग्य नागरिक बन सकें।

■■■

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Unit – II

Curriculum and Planning

पाठ्यक्रम एवं योजना

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर–

प्र–1 पाठ्यक्रम का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

Describe the meaning of curriculum.

उत्तर पाठ्यक्रम या कुरीकुलम शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के शब्द क्यूरेर (Carrere) से हुई है, जिसका अर्थ है– दौड का मैदान, इस प्रकार पाठ्यक्रम दौड का मैदान है, जिसकी सीमाओं में दौड़कर छात्र शिक्षा के उद्देश्यो को प्राप्त करता है।

परिभाषाएं–

1. **कनिंघम–** ''पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक यन्त्र है जिससे वह अपनी सामग्री (विद्यार्थी) को अपने आदर्श (लक्ष्य) के अनुसार अपने कलागृह (विद्यालय) में मोड़ता है।''
2. **मुनरो–** ''पाठ्यक्रम में वे समस्त अनुभव निहित है जिनकों विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये उपयोग में लाया जाता है।''
3. **हेनरी व जे ओद्ये–** ''पाठयक्रम वह साधन है जिसके द्वारा हम बच्चों को शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के योग्य बनानें की आशा करते है।''
4. **एनन–** ''पाठ्यक्रम पर्यावरण में होने वाली क्रियाओं का योग है।''
5. **रूडयार्ड व हेनरी–** ''अपने व्यापक अर्थ में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सम्पूर्ण विद्यालय वातावरण आता है जिसमें सभी प्रकार के कोर्स (पाठ्य विषय), क्रियाएॅं, पढना तथा साहचर्य सम्मिलित है जो छात्रों को विद्यालय में प्राप्त होते है।''
6. **माध्यमिक शिक्षा आयोग–** ''पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक पाठ्य विषयों से नही है, जो विद्यालय में परम्परागत ढंग से पढाये जाते है, वरन् इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता निहित है जिसको छात्र विद्यालय, कक्षा कक्ष पुस्तकालय, वर्कशाप प्रयोगशाला और खेल के मैदान तथा शिक्षकों एवं शिष्यों के अगणित अनौपचारिक सम्पर्को से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम हो जाता है तो छात्रों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित कर सकता है और उनके सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास से सहायता देता है।''

प्र–2 पाठ्यक्रम और पाठ्यवस्तु में क्या अन्तर है?

What is the difference between curriculum and syllabus?

उत्तर वर्तमान समय में शिक्षा जगत में पाठ्यक्रम के लिये 'कुरीकूलम' के साथ साथ सिलेबस एवं कोर्स ऑफ स्टडी शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है परन्तु सूक्ष्मता से विवेचन करने पर इन तीनों शब्दों में स्पष्ट अन्तर परिलक्षित होता है। पाठ्यक्रम शब्द का उपयोग अब व्यापक अर्थ में होने लगा है क्योंकि पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वे सभी अनुभव आ जाते है, जिन्हें छात्र विद्यालयी जीवन में प्राप्त करता है, और जिनमें कक्षा के अन्दर एवं बाहर आयोजित होने वाली पाठ्य एवं पाठ्येत्तर क्रियाएं सम्मिलित होती है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

पाठ्यवस्तु पूर्ण शैक्षिक सत्र में विभिन्न विषयों में शिक्षक द्वारा छात्रों को दिये जाने वाले ज्ञान की मात्रा के विषय में निश्चित जानकारी प्रस्तुत करता है। शिक्षा शब्दकोश में पाठ्यवस्तु के लिये लिखा है– ''पाठ्यवस्तु अध्ययन की विषय वस्तु के मुख्य बिन्दुओं का कथन अथवा संक्षिप्त रूपरेखा है।''

क्रं.सं.	पाठ्यक्रम	पाठ्यवस्तु
1	विद्यालय व विद्यालय में होने वाली समस्त क्रियाओं से संबंधित होने वाले शब्द को पाठ्यक्रम कहते है।	पाठ्य वस्तु में सिर्फ विशेष पाठ्य वस्तुएं ही होती है।
2	पाठ्यक्रम बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास से सम्बन्धित होती है।	पाठ्यवस्तु मात्र विषय से सम्बन्धित विकास पर आधारित होती है।
3	पाठ्यक्रम का विषय–क्षेत्र व्यापक होता है।	पाठ्यवस्तु एक विषय तक सीमित होता है।
4	पाठ्यक्रम विषय वस्तु शिक्षण विधि सहायक सामग्री व तकनीकी का निर्धारण करता है।	पाठ्यवस्तु केवल शिक्षण की विषय वस्तु से सम्बन्धित होती है।
5	पाठ्यक्रम सम्पूर्णता से सम्बन्धित होता है।	पाठ्यवस्तु पाठ्यक्रम का अंश मात्र होता है।
6	पाठ्यक्रम में कक्षा व कक्षा के बाहर के अनुभवों को शामिल किया जाता है।	पाठ्यक्रम में कक्षा के अंदर के अनुभव को शामिल किया जाता है।
7	पाठ्यक्रम प्रदर्शित करता है कि शिक्षक किस प्रकार शैक्षिक क्रियाओं के द्वारा पाठ्यवस्तु की आवश्यकता की पूर्ति करेगा अर्थात् यह मूल्यांकन से सम्बन्धित है।	पाठ्यक्रम मात्र वह मुद्रित अंश है जो यह बताती हे कि छात्रों को क्या सिखाना है अर्थात् यह शिक्षालय वर्ष के दौरान विभिन्न विषयों शिक्षक द्वारा दिये जाने वाले ज्ञान की मात्रा में निश्चित जानकारी प्रस्तुत करता हैं अर्थात् यह मापन से सम्बन्धित है।

प्र–3 सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य क्या है?
What is the main objective of social studies curriculum?

उत्तर सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य है–

1. पाठ्यक्रम बालक के सम्पूर्ण विकास हेतु साधन प्रदान करता है, जिसकी सहायता से शिक्षण की क्रिया को सम्पादित करना है।
2. पाठ्यक्रम का मुख्य कार्य मानव जाति के अनुभवों को सम्मिलित रूप से स्पष्ट करके संस्कृति तथा सभ्यता का हस्तांरण एवं विकास करता है।
3. बालक में मित्रता, ईमानदारी, निष्कपटता, सहयोग, सहनशीलता, सहानुभूति एवं अनुशासन आदि गुणों को विकसित करके नैतिक चरित्र का निर्माण करना ही सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है।
4. बालक में मित्रता, ईमानदारी, निष्कपटता, सहयोग सहनशीलता, सहानुभूति एवं अनुशासन आदि गुणों को विकसित करके नैतिक चरित्र का निर्माण करना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।
5. बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाओं से सम्बन्धित सभी आवश्यकताओं, मनोवृतियों तथा क्षमताओं एवं योग्यताओं के अनुसार नाना प्रकार की सर्जनात्मक तथा रचनात्मक शक्तियों का विकास करना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

6. पाठ्यक्रम को सामाजिक तथा प्राकृतिक विज्ञानों एवं कलाओं तथा धर्मो के आवश्यक ज्ञान द्वारा ऐसे गतिशील तथा लचीले मस्तिष्क का निर्माण करना चाहिऐ जो प्रत्येक परिस्थिति में सम्पूर्ण तथा साहसपूर्ण बनकर नवीन मूल्यों का निर्माण करना है।
7. ज्ञान तथा खोज की सीमाओं को बढ़ाने के लिये अन्वेषकों का सृजन करना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।
8. विषयों तथा क्रियाओं के बीच की खाई को पाटकर बालक के सामने ऐसी क्रियाओं को प्रस्तुत करना जो उसके वर्तमान तथा भावी जीवन के लिये उपयोगी बनाये।
9. सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम मे बालक में जनजातीय भावना का विकास करना है।
10. पाठ्यक्रम शिक्षण प्रक्रियाओं तथा शिक्षक तथा छात्र के मध्य अन्तः किया के स्वरूप निर्धारित करना भी इसका उद्देश्य है।

प्र–4 सामाजिक अध्ययन में पाठ्यक्रम की क्या आवश्यकता है?

What is the need of Text book in Social Study?

उत्तर सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता निम्न है–

1. छात्रों का मानसिक स्तर इतना ऊचां नही होता कि वे विद्यालय में पढाई गई विषयवस्तु को एक बार में ही आत्मसात कर सकें। इन्हें विषय वस्तु को पुनः पढना पडता है और फिर कभी विषय वस्तु को दोहराना पडता हैं। इन सब कार्यो के लिये पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता पड़ती है।
2. शिक्षक तथा छात्रों दोनो का ही ज्ञान क्रमशः अव्यवस्थित एवं अपर्याप्त होता है शिक्षकों को ज्ञान को व्यवस्थित करने की आवश्यकता पड़ती है और छात्रों के ज्ञान को वर्णित करने की आवश्यकता पडती है पाठ्यपुस्तक इन दोनो ही व्यक्तियों के इन दोनों ही कार्यो में सहायता करती है।
3. पाठ्यपुस्तक छात्रों की विषयवस्तु को संकलित करने में सहायता करती है। दूसरे शब्दों में पाठ्यपुस्तक एक ऐसी सहायक सामग्री है जो छात्रों के सम्मुख अत्यन्त व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करती है।
4. माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी पाठ्यपुस्तक के महत्व एवं आवश्यकता को स्वीकार किया है।
5. परीक्षा के समय छात्रों की बडी सहायता करती है।
6. भारत एक निर्धन देश है यहां के अधिकांश विद्यालय की आर्थिक दशा खराब है उनके पुस्तकालय इस स्थिति में नही है कि वे एक ही विषय पर अनेक पुस्तके लिख सके। इसलिए विद्यालयों के लिये यही हितकर है कि वे अपने पुस्तकालय में पाठ्यपुस्तक रखें।
7. पाठ्यपुस्तक विषयवस्तु को अत्यन्त तार्किक ढंग से प्रस्तुत करती है जिससे विषयवस्तु सरल तथा सुगम हो जाती है।
8. पाठ्यपुस्तक शिक्षण के अनेक दोषो को दूर करती है कक्षा शिक्षण प्रणाली के अन्तर्गत प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान नही दिया जा सकता है। पाठ्यपुस्तकों की सहायता से छात्र व्यक्तिगत रूचि के अनुसार अध्ययन कर सकते है।

प्र–5 एक अच्छी सामाजिक अध्ययन पाठ्य पुस्तक की विशेषताएं संक्षेप में लिखिए।

Write in brief the characteristics of a good social studies text book?

उत्तर पाठ्यपुस्तक शिक्षण का सर्वोत्तम उपकरण है यह शिक्षकों को साथी तथा छात्रों का ज्ञानदाता है पाठ्यपुस्तक की ये सभी विशेषताएं समाप्त हो जाती है, यदि पाठ्यपुस्तक अच्छी न हो। इसके लिये आवश्यक है कि अच्छी पाठ्यपुस्तक का ही प्रयोग किया जाए। अच्छी पाठयपुस्तक में निम्न विशेषताएं होती है–

1. पुस्तक की बाह्य आकृति बच्चों की आयु के अनुसार होनी चाहिए। छोटे बालक चित्रों को देखने में आनन्द लेते है। अतः उनकी पाठ्यपुस्तक की बाह्य आकृति पूर्ण सजधज के साथ होनी चाहिए।
2. पुस्तक की जिल्द मजबूत तथा अच्छी हो।
3. पुस्तक का कागज साफ, चिकना तथा अच्छा होना चाहिए।
4. पुस्तक की छपाई में जो टाईप उपयोग में लाया जाए, वह बालकों की आयु के अनुसार हो, उनकी छपाई भी सुन्दर तथा आकर्षक होनी चाहिए।
5. सामाजिक अध्ययन एक ऐसा विषय है जिसका सम्बन्ध अतीत और वर्तमान दोनो से जुड़ा है। इसलिये पुस्तक ऐसी हो जो छात्रों को उस समय तक की सम्पूर्ण बातों का पर्याप्त ज्ञान दे।
6. पुस्तक का लेखक विषय का पूर्ण ज्ञाता हो। इसके अतिरिक्त वह व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त भी हो। जिससे वह पाठ्यपुस्तक की छात्रों की आयु, योग्यता, रूचि रूझाव आदि बातों के अनुसार प्रस्तुत कर सकें।
7. पाठ्यपुस्तक में पाठ्यवस्तु का व्यवस्थापन इस प्रकार किया जायें जिससे प्रकरणों तथा पाठों का तारतम्य बना रहे। वे एक दूसरे से सतत रूप से जुडे रहे।
8. पाठ्यपुस्तक की भाषा तथा शैली छात्रों की आयु तथा मानसिक योग्यता के अनुसार होनी चाहिए।
9. पाठ्यपुस्तक मे मुख्य तथा कठिन बातों को सरल तथा सुबोध बनाने के लिये उदाहरणों, चित्रों, ग्राफों, मानचित्रों आदि का उपयुक्त रूप से प्रयोग किया जाना चाहिए।
10. पाठ्यपुस्तक को सामाजिक अध्ययन के शिक्षण के लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को ध्यान में रखकर लिखी जानी चाहियें जिससे उसके अध्ययन से उनकी प्राप्ति हो सके।
11. पाठ्यपुस्तक का मूल्य यथोचित कम ही होनी चाहिए।

प्र–6 पाठ योजना का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
Explain the meaning of lesson plan.

उत्तर पाठ योजना शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– पाठ और योजना। सीधे सादे शब्दों में इसका अर्थ होगा– ''पाठ को आयोजित करना'' अतएव पाठ योजना का अभिप्राय उस पूर्व निर्धारित योजना से है जिसके अनुसार शिक्षक नए ज्ञान को रीतियों तथा सहायक के माध्यम से छात्रों के सामने एक निश्चित अवधि के अन्दर प्रस्तुत करता है। पाठ योजना का अर्थ स्पष्ट करने के लिये विभिन्न विद्वानों ने अलग अलग परिभाषाएं दी है–

1. **प्रो. बाइनिंग एवं बाइनिंग – "** पाठ योजना के निर्माण ने उद्देश्यों को परिभाषित करना, पाठ्य वस्तु का चयन करना तथा उसे क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करना और प्रस्तुतीकरण की विधियों का निर्माण करना प्रमुख है।''
2. **एन.एल. बासिंग – "**पाठ योजना प्राप्य उद्देश्यों के कथनों और उन्हें प्राप्त करने सम्बन्धी उन तरीकों को प्रदान किया गया शीर्षक है जिनके द्वारा किसी अवधि में की जाने वाली क्रियाओं के माध्यम से उन्हें प्राप्त किया जाता है।''
3. **शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय शब्द कोष –**''पाठ योजना किसी पाठ के महत्वपूर्ण बिन्दुओं से सम्बन्धित एक ऐसी रूपरेखा है जिसमें उनकों उसी क्रम में व्यवस्थित किया जाता है जिस क्रम में अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों के सामने उन्हें रखा जाता है।''
4. **एल.बी. सैन्ड्स–** ''पाठ योजना वास्तव में किए जाने वाले कार्य की एक करने के ढंग से सम्बन्धित, दर्शन, दर्शन सम्बन्धी उसके अपने ज्ञान, अपने विद्यार्थियों उसकी समझ, विषय वस्तु सम्बन्धी उसके ज्ञान तथा प्रभावपूर्ण विधियों को प्रयोग में लाने सम्बन्धी उसकी योग्यता आदि सभी बातों का समावेश होता है।''

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries.

यदि उपर्युक्त परिभाषाओं का विश्लेषण किया जाए तो पाठ योजना के विषय में निम्न विशेषताएं स्पष्ट होती है–

1. पाठ योजना अध्यापक द्वारा कक्षा शिक्षण में जाने से पूर्व बनाई जाती है।
2. विषय विशेष से सम्बन्धित जिस पाठ को एक निश्चित अवधि में पढाना है उसी के नियोजन से इसका सम्बन्ध होता है।
3. पाठ योजना की सहायता से अध्यापक को विषय विशेष तथा पाठ विशेष तथा पाठ विशेष के लिये प्राप्त उद्देश्यों को भली भांति प्राप्त करने में निर्धारित सुविधा होती है।
4. अध्यापक की कक्षा में शिक्षण अधिगम से सम्बन्धित क्या क्या क्रियाएं किस क्रम में होगी, इसकी चर्चा पाठ योजना में की जाती है।

प्र–7 इकाई योजना क्या है? इकाई योजनों बनाने के क्या लाभ व हानियां है?
What is unit plan? What are advantages of preparing 'Unit Plan'?

उत्तर इकाई शब्द को शिक्षा जगत में लाने का श्रेय हरबर्ट को जाता है किन्तु इसका व्यापक प्रयोग सन् 1929 के बाद ही हुआ। इकाई की अनेक विद्वानों ने अलग अलग परिभाषाएं दी है–

1. **रिस्क–** "इकाई किसी समस्या या योजना से सम्बन्धित सीखने वाली क्रियाओं की समानता या एकता को बताती है।"
2. **बॉसिंग–** "इकाई में सम्बन्धित तथा अर्थपूर्ण क्रियाओं की व्यापक श्रेणियां निहित है" जिनकों ऐसे ढंग से विकसित किया जाता है जिससे छात्र अभिप्रायों एवं शैक्षिक अनुभवों की प्राप्ति तथा स्वयं में व्यवहार सम्बन्धी परिवर्तन ला सके।
3. **मॉरिसन–** "इकाई वातावरण संगठित विज्ञान, कला यां आचरण का व्यापक एवं महत्वपूर्ण अंग है, जिसे सीखने से व्यक्तित्व में सामंजस्य आ जाता है।"
4. **सेम फोर्ड–** "इकाई सतर्कतापूर्वक चयन की गई विषय वस्तु की वह रूपरेखा है जो छात्रों की आवश्यकताओं तथा रूचियों के आधार पर अन्य विषय वस्तु से पृथक कर दी गई है।"

इकाई योजना के गुण–

1. **पाठ्यक्रम का उचित विभाजन –** पाठ्यक्रम का उचित विभाजन के द्वारा अधिगम प्रक्रिया को अधिक सुविधा जनक और सार्थक बनाने में सहायता मिलती है।
2. **क्रियाशीलता पर बल –** इसमें विद्यार्थी पूरी तरह से सक्रिय रहकर अधिगम अनुभव अर्जित करते है, अध्यापक द्वारा उन्हें आवश्यकतानुसार परामर्श या सहायता देने का ही प्रयत्न किया जाता है।
3. **रोचक एवं उपयोगी –** इकाई, योजना में पढाई का आधार वे इकाईयां होती है, जो विद्यार्थियों की रूचि, योग्यताओं, आवश्यकताओं तथा मानसिक शक्तियों को ध्यान में रखकर निर्मित की जाती है।
4. **समवायी शिक्षण –** इकाई योजना समवायी दृष्टि से शिक्षण देने तथा अधिगम अनुभव अर्जित करने की एक सफल विधि है।

इकाई योजना के दोष :–

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

1. **आंशिक उपयोगिता :** सामाजिक अध्ययन के विषय के लिये नियत किसी श्रेणी विशेष के पाठ्यक्रम को निश्चित इकाईयों के अन्दर उचित विभाजन नही किया जा सकता।
2. **क्रमिक शिक्षण का अभाव :** इकाई योजना में पाठ्यक्रम को इकाईयों में विभक्त होकर दिया जाता है परन्तु उनमें आपस में तालमेल बिठाकर इस प्रकार व्यवस्थित करके पढाना कठिन है।
3. **अध्यापक को कठिनाई** – इकाई योजना के लिये अध्यापक का सक्रिय और विद्वान होना आवश्यक है किसी इकाई को केन्द्र बनाकर उससे सम्बन्धित सभी प्रकार का आवश्यक ज्ञान देना कोई सरल कार्य नही है। इन सब कार्यो के लिये एक अच्छे योग्य ओर अनुभवी अध्यापक की आवश्यकता पडती है।

प्र–8 पाठ योजना को परिभाषित कीजिए व उसका प्रारूप देते हुए उसके विभिन्न सोपानों की विवेचन कीजिए।

Define lesson plan. Draw paradign of daily lesson plan and explain its various steps.

उत्तर अनेक विद्वानों ने अलग अलग ढंग से पाठ योजना के परिभाषित किया है कुछ विद्वान दैनिक पाठ योजना के शिक्षण का 'ब्लू–प्रिटं' कहते है, तो कुछ इसे 'सृजनात्मक कार्य' कहते है।

1. **बाइनिंग तथा बाईनिंग –** "दैनिक पाठ योजना के निर्माण में उद्देश्यों को परिभाषित करना, पाठ्यवस्तु का चयन करना और क्रमबद्ध करना तथा प्रस्तुतीकरण की विधियों का निर्णय करना प्रमुख है।"
2. **डेवीस–** "कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक को पूरी तैयारी कर लेनी इतनी बाधक नहीं है जितनी की शिक्षण की अपूर्ण तैयारी है।"
3. **एम.पी. मुफात–** "सफल शिक्षण में प्रकरण, समस्या, सीखने की क्रियाएं तथा अन्य स्त्रोत सामग्री सम्मिलित है इनके द्वारा छात्रों की प्रतिक्रिया अभ्यास तथा अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन की प्राप्ति संभव है।"

दैनिक पाठ योजना का प्रारूप
विषय – सामाजिक अध्ययन

इकाई –.............................. **दिनांक–..........................**
कक्षा– .... **समय–.............................**
प्रकरण–............................. **कालाशं–.........................**
विद्यालय का नाम–......................................
पाठ के उद्देश्य–...
1. **ज्ञानात्मक**
2. **अवबोधात्मक**
3. **कौशलात्मक**

पूर्व ज्ञान – ....
पद्धति...
सहायक सामग्री............................
प्रस्तावना ....
उद्देश्य कथन ....

पाठ का प्रस्तुतीकरण

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

शिक्षण बिन्दु	उद्देश्य	छात्राध्यापिका क्रियाएं	छात्र क्रियाएं	श्यामपट्ट कार्य

पुनरावृति एवं अभ्यास कार्य...

गृहकार्य...

दैनिक पाठ योजना के उपरोक्त सोपानों का वर्णन इस प्रकार है –

1. **उद्देश्य–** पाठ पढाने के उद्देश्य छात्रों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों से घनिष्ट रूप से सम्बन्धित होते है।
2. **सहायक सामग्री–** पाठ पढाते समय अध्यापक को जिस प्रकार की सहायक सामग्री के प्रयोग करने की आवश्यकता होती है, उस सामग्री का उल्लेख इसके अन्तर्गत किया जाता है।
3. **पूर्व ज्ञान–** पूर्व ज्ञान का अर्थ पाठ से सम्बन्धित उन बातों से है जिन्हें विद्यार्थी पहले से ही जानते है।
4. **पूर्व ज्ञान परीक्षा एवं प्रस्तावना–** इसमें पूर्व ज्ञान की परीक्षा के लिये उचित प्रश्नों का चुनाव किया जाता है।
5. **उद्देश्य कथन–** प्रस्तावना समाप्त होने के पश्चात समस्या का हल पता लगाने और नवीन पाठ पढने की आवश्कता का अनुभव हो तब संक्षिप्त और सरल शब्दों में उद्देश्य की घोषणा की जाती है।
6. **प्रस्तुीकरण–** विषय वस्तु या पाठ्य सामग्री को विद्यार्थियों के सामने इस सोपान के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जाता है। जिस तरह का विषय प्रकरण और पाठ्य सामग्री होती है प्रस्तुतीकरण का तरीका भी उसी के अनुकूल बनाया जाता है।
7. **पुनरावृति एवं अभ्याय कार्य–** पाठ की एक सम्पूर्ण इकाई या दिये गये अधिगम अनुभवों को स्थाई रूप प्रदान करने के लिये पुनरावृति या अभ्यास कार्य किया जाता है।
8. **मूल्यांकन प्रश्न–**
9. **गृह कार्य–** इसमें अन्तिम चरण में पाठ से सम्बन्धित कुछ कार्य बालकों को घर पर करने के लिये दिया जाता है।

प्र–8 शिक्षण सूत्र से क्या अभिप्राय है? सामाजिक अध्ययन विषय के अध्यापक को अपने विषय के शिक्षण में किन शिक्षण सूत्र को महत्व देना चाहिए।

What are teaching Maxims? A Social Study Teacher should gives importance to which Teaching Maxims.

उत्तर शिक्षण की प्रक्रिया में व्याप्त जटिलताओं को दूर करने के लिये शिक्षा–शास्त्रियों ने समय समय पर अनेक उक्तियों, तथ्यों को खोजा जिनसे शिक्षण कार्य अधिक सरल और रोचक बन जाता है। उन तथ्यों को शिक्षण सूत्र कहा जाता है।

इस प्रकार शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु निम्नांकित शिक्षण सूत्र का उल्लेख किया है–

1. **ज्ञात से अज्ञात की ओर–** बालक अपने पूर्व ज्ञान के आधार बालक के सामने नई विषय वस्तु, प्रस्तुत करने से पूर्व इस बात का पता लगावे कि बालक को उस पाठ के बारें में प्रारम्भिक ज्ञान कितना है उस ज्ञान को आधार मानकर नवीन विषयवस्तु का ज्ञान प्रदान करना चाहिए।
2. **सरल से जटिल की ओर–** पाठ्यवस्तु के सरल भागों का पता लगाना इसके पश्चात् धीरे–धीरे विषय वस्तु के जटिल भागों को प्रस्तुत कर पाठ का विकास करना चाहिए।
3. **सरल से कठिन की ओर–** जिस पाठ्यवस्तु में मानसिक प्रक्रिया सरल हो उसे प्रस्तुत किया जाना चाहिए और गूढ व कठिन मानसिक क्रियाओं वाले अंश उत्तरोत्तर प्रस्तुत किये जाने चाहिए।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

4. **स्थूल से सूक्ष्म की ओर–** कोई सूक्ष्म विचार बताने से पहले कोई स्थूल विचार बताएं जो शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी हो, इसमें बालकों की रूचि, भावना तथा विचारों के साथ तात्कालिक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। **हरबर्ट स्पेन्सर** ने कहा है कि– ''पहले पाठ स्थूल वस्तुओं से प्रारम्भ होने चाहिये और सूक्ष्म बातों में समाप्त होना चाहियें''।
5. **विशेष से सामान्य की ओर–**इसमें पाठ्यवस्तु की विशेष बाते पहले रखी जाती है उनके आधार पर सामान्य नियमों का निरूपण कर शिक्षण किया जाता है।
6. **अधिगम अनुभव से तर्क की ओर–** बालक के अनुभव को आधार बना कर निरीक्षण व परीक्षण द्वारा उनकी तर्क शक्तियों का विकास इस सूत्र द्वारा किया जाता है।
7. **पूर्ण से अंश की ओर –** पूर्ण पाठ्यवस्तु या तथ्य को एक साथ प्रस्तुत कर धीरे धीरे उसके अंशों के ज्ञान की ओर अग्रसर होना ही इस सूत्र का उद्देश्य है।
8. **अनिश्चित से निश्चित की ओर–**कई विषयों से बालक के मस्तिष्क में अनिश्चित या अस्पष्ट जानकारी होती है अध्यापक इसकी जानकारी कर उसके अनिश्चित विचारों को जब निश्चित आधार प्रस्तुत करता है तो उसका ज्ञान परिपक्व हो जाता है।
9. **विश्लेषण से संश्लेषण की ओर–** जटिल समस्या को सुलझानें में या जटिल विषय को समझाने में अध्यापक को उसके तत्वों का विश्लेषण करना आवश्यक होता है इन तत्वों को समझ लेने पर सश्लिष्ट रूप में समग्र समस्या को हल कराया जाता है।

प्र–9 शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों का विस्तृत रूप से वर्णन कीजिए।

Describe the General Principles Teaching in detailed.

उत्तर शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त इस प्रकार है–

1. **क्रियाशीलता का सिद्धान्त–** बालक में शारीरिक और मानसिक क्रियाशीलता अधिक पायी जाती है। क्रियाशीलता के सिद्धान्त को प्रमुखता देने के कारण उनकी शिक्षण विधियों, जैसे प्रोजेक्ट, माण्टेसरी किंडरगार्टन आदि का प्रचलन हुआ। रायबर्न ने इस सिद्धान्त को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया है।
2. **प्रेरणा का सिद्धान्त–** यदि बालक को किसी कार्य को सीखने के लिये प्रेरित किया जाता है, तो सीखने का काम आसान हो जाता है।
3. **रूचि का सिद्धान्त–** इस सिद्धान्त से आशय यह है कि जब बालक की किसी पाठ के प्रति रूचि उत्पन्न हो जाती है, तो उसके लिये उपयोगी है।
4. **चयन का सिद्धान्त–**शिक्षक को उस ज्ञान का चयन करना चाहियें जो बालक के लिये उपयोगी है।
5. **नियोजन का सिद्धान्त–** इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षक कों अपना शिक्षण कार्य प्रारम्भ करने से पहले नियोजन कर लेना चाहिये।
6. **वैयक्तिक विभिन्निताओं का सिद्धान्तः–** सभी बालक बुद्धि, योग्यता, क्षमता और अभिरूचि में समान नही होते है इस कारण यह आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षण कार्य करते समय बच्चों की वैयक्तिक विभिन्निताओं को ध्यान में रखे।
7. **विभाजन का सिद्धान्त–** शिक्षक को अपना पाठ पढाने से पूर्व सुविधानुसार उसे विभिन्न सोपानों में विभाजित कर लेना चाहिए।
8. **आवृति का सिद्धान्त–** इस सिद्धान्त से आशय है कि शिक्षक को अपना पाठ पढाने से पूर्व सुविधानुसार उसे विभिन्न सोपानों में विभाजित कर लेना चाहिए।
9. **निर्माण एवं मनोरंजन का सिद्धांत–**छात्रों से जो क्रियाएं सम्पन्न कराई जाएं वे रचनात्मक होनी चाहिए उससे छात्रों का किसी न किसी तरह का मनोरजंन होता है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

प्र–10 **वार्षिक योजना, इकाई योजना, दैनिक पाठ योजना से आप क्या समझते है?**

What do you understand by yearly plan, unit plan and daily lesson plan?

उत्तर किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक करते हुए निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन योजना कहलाता है योजना से कार्य की अनुमानित रूपरेखा के बारें में मार्गदर्शन मिलता है।

वार्षिक योजना– कार्य की योजना जो अध्यापक द्वारा अपनी डायरी में सत्र पर्यन्त शिक्षण कार्य एवं अन्य करणीय कार्यो की जो रूपरेखा तैयार की जाती है, उसे वार्षिक योजना कहते है वार्षिक योजना तैयार करने से पूर्व विद्यालय की स्थिति, कार्य क्षमता छात्रों की बौद्धिक, स्तर, शैक्षिक उपकरण पाठ्यक्रम एवं समय सीमा आदि सभी पक्षों को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है।

इकाई योजना– सबसे पहले अध्यापक को सम्पूर्ण पाठ से सम्बन्धित इकाई योजना का निर्माण करना होता है तत्पश्चात् दैनिक शिक्षण के लिय दैनिक पाठ योजना का निर्माण करना पडता है, इस प्रकार की योजना बनानें में शिक्षकों को शैक्षिक कार्य एवं सम्बन्धित सहायक सामग्री का पूर्व में ज्ञान हो जाता है। इकाई योजना बनानें से शिक्षक विषय वस्तु को क्रमबद्ध व्यवस्थित करके शिक्षण कार्य कराने में सक्षम हो जाता है एक ही आधार पर आधारित विभिन्न पाठों कों एकत्रित किया जाता है, फिर उन पाठों को एक इकाई मानकर विभिन्न पाठ्याशं बनाये जाते है इस एक इकाई के पाठ्याशों पर हम एक सप्ताह तक बालकों से कार्य करवा सकते है इसी योजना को हम इकाई पाठ योजना कहते है।

दैनिक पाठ योजना– किसी इकाई को कक्षा में पढाने के लिये कई दैनिक पाठों में विभक्त करना होता है तथा प्रत्येक कालांश के लिये दैनिक पाठ योजना बनाई जाती है विषय वस्तु के दैनिक शिक्षण के सफलता एवं प्रभावी उत्पादकता प्रदान करनें के लिये पाठ योजना अत्यावश्यक है पाठ योजना के निर्माण में शिक्षण बिन्दुओं की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है दैनिक पाठ एक इकाई के कई पाठ रूपों का स्थान लेता है।

प्र–11 **आप वार्षिक योजना किस प्रकार तैयार करेंगे। इसका प्रारूप कीजिए।**

How will you prepare yearly plan? Draw paradign of it?

उत्तर विद्यालय के सम्पूर्ण सत्र में आयोजित होने वाली शैक्षिक/सह शैक्षिक प्रवृतियों आदि कों दृष्टिगत रखकर विषय की वार्षिक योजना की जानी चाहिए। वार्षिक योजना से शिक्षक को सम्पूर्ण विषय के सत्र पर्यन्त पूर्ण करने वाले कार्य की स्पष्ट जानकारी होती है कि सत्र पर्यन्त किस अवधि में क्या क्या कार्य पूरा कर लेना है।

पूर्व आयोजन से सर्वप्रथम वर्ष भर के कार्य का आयोजन महत्वपूर्ण है बोर्ड अथवा शिक्षा विभाग द्वारा सत्र का पाठ्यक्रम निश्चित रहता है। विद्यालयों में सभी विषयों को एक समान समय नही दिया जाता। अज्ञात और आकस्मिक कारणों से विद्यालय अथवा अध्यापक के कार्य न कर सकने से शिक्षण में व्यवधान आ जाता है। अतः इन बातों पर ध्यान रखकर पूरे वर्ष भर के अध्यापन कार्य का नियोजन लाभप्रद रहता है। इसे वार्षिक योजना या सेमेस्टर योजना कहा गया है।

वार्षिक योजना का प्रारूप

विद्यालय का नाम................................ सत्र..................

विषय....................................... सत्र के कुल कार्य दिवस...........

कक्षा.................................... शिक्षण हेतु कालांश......................

विषय की सम्पूर्ण इकाईयों की संख्या........................

सत्र के उपसत्रों की संख्या	शिक्षण हेतु उपलब्ध कार्य दिवस व कालांश	उप सत्रवार शिक्षण इकाई एवं उप इकाई	इकाईयों / उप इकाईयों से सम्बन्धित उद्देश्य एवं उप इकाई	आवश्यक एवं संयुक्त की जाने वाली शिक्षण सहायक सामग्री	प्रधानाध्यापक द्वारा टिप्पणी
प्रथम सत्र					
द्वितीय उपसत्र					
तृतीय उपसत्र					

प्र–12 **सामाजिक अध्ययन में इकाई योजना एवं पाठयोजना मे क्या मुख्य अन्तर है? स्पष्ट कीजिए।**

Explain the main difference between unit plan and lesson plan in social studies.

उत्तर **Explain the main difference between unit plan and lesson plan in social studies.**

क्र.सं.	इकाई योजना	दैनिक पाठ योजना
1	इकाई योजना सम्पूर्ण इकाई कों ध्यान में रखते हुए तैयार की जाती हैं इसमें सम्पूर्ण इकाई को कितने कालांश, कितने शीर्षक तथा किस किस दिन पढाया जाएगा एवं सहायक सामग्री तथा क्रियाएं क्या क्या होगी एवं मूल्यांकन किस प्रकार होगा इन सबका वर्णन होता है।	दैनिक पाठ योजना किसी एक शीर्षक अथवा खण्ड को पढाने के लिये एक कालांश के लिये बनाई जाती है।
2	इकाई योजना उद्देश्य, रूचि, आवश्यक आदि में से किसी एक पर आधारित होती है।	दैनिक योजना तीनों बिन्दुओं पर आधारित होती है।
3	इकाई योजना का अध्ययन सम्पूर्ण इकाई को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है।	पाठ योजना एक निर्धारित समय (35–40 मिनट) के लिये होती है।
4	इकाई योजना में पाठ्य वस्तु के संगठन को महत्व दिया जाता है।	दैनिक पाठ योजना में प्रस्तुतीकरण को महत्व प्रदान किया जाता है।
5	इकाई योजना किसी इकाई के लिये अपने आप में पूर्ण होती है।	दैनिक पाठ योजना इकाई योजना का एक अंग होती है।
6	इकाई योजना का स्वरूप विषय वस्तु की	दैनिक पाठ योजना किसी एक शीर्षक के आधार पर

GURUKPO Get Instant Access to your Study Related Queries.

	प्रकृति तथा शिक्षण उद्देश्यों पर आधारित होता है, जिसमें सम्पूर्ण इकाई से सम्बन्धित विषय वस्तु होती है।	बनाई जाती है तथा इसमें इस शीर्षक सम्बन्धित विषय वस्तु तथा शिक्षण उद्देश्य सम्मिलित होते है।

प्र–13 सामाजिक अध्ययन का पाठ्यक्रम तैयार करनें में किन–किन सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाता है राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा माध्यमिक कक्षाओं के लिये निर्धारित सामाजिक अध्ययन विषय के पाठ्यक्रम का आलोचनात्मक विवरण लिखिए।

What principles are kept in mind while preparing syllabus of social studies? Write a critical review of the present social studies syllabus precribed the board of Secondary Education Rajasthan for its Secondary Classes.

उत्तर सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम का निर्माण करना एक जटिल कार्य है, क्योंकि इसमें विभिन्न विषयों जैसे– नागरिक शास्त्र, इतिहास समाजशास्त्र आदि को किस प्रकार समन्वित करना होता है कि सामाजिक अध्ययन शिक्षण उद्देश्य की पूर्ति हो सके। इन सभी विषयों के उचित उपकरणों का चयन एवं गठन एक कठिन कार्य है ज्ञान के विस्फोट तथा निश्चित अवधि में पढानें की सीमा ने सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम के निर्माण को और भी अधिक जटिल बना दिया है।

इस कार्य को पूर्ण करनें में निम्नलिखित सिद्धांतों का ध्यान रखा जाना चाहिए–

1. **बालक को केन्द्र मानने का सिद्धान्त–** पाठ्यक्रम बाल केन्द्रित होना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि सामाजिक अध्ययन मे किसी भी स्तर के पाठ्यक्रम के निर्माण के लिये उस स्तर से सम्बन्धित बालकों की आयु, उनकी योग्यताओं, क्षमताओं, रूचियों तथा ज्ञान आदि का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए।
2. **क्रियाशीलता का सिद्धांत–** बालक स्वभाव से ही क्रियाशील होते है, अतः पाठ्यक्रम के लिये उनकी इस स्वाभाविक प्रवृति के पोषण की ओर ध्यान रखना आवयश्यक है इस दृष्टि से पाठ्यक्रम में ऐसी ही पाठ्य सामग्री, प्रकरण और अधिगम अनुभवों को स्थान दिया जाना चाहिए।
3. **पर्यायवरण को केन्द्र मानने का सिद्धान्त–** सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम का निर्माण बालकों के भौतिक और सामाजिक पर्यावरण को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से बालकों के पारिवारिक, भौतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक और परिवार के बाहर फैले हुए सामाजिक वातावरण को ध्यान में रखा जाना चाहिए।
4. **मानव सम्बन्धों को समझनें सम्बन्धी सिद्धान्त–** सामाजिक अध्ययन के शिक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य मानव सम्बन्धों को जानने, समझनें तथा अपेक्षित सम्बन्ध बनानें के लिये आवश्यक कौशलों तथा अभिवृत्तियों को विकसित करना है।
5. **समुदाय को केन्द्र मानने का सिद्धान्त–** समुदाय बालकों के भविष्य कों संभालनें में तो योगदान देता ही है, बालकों से भी ये अपेक्षा की जाती है कि वे अपने समुदाय विशेष को समझनें, उसमें व्यवस्थित होने तथा उसके कल्याण के लिये अपना रचनात्मक सहयोग प्रदान कर सकें।
6. **समवाय का सिद्धान्त–** सामाजिक अध्ययन में समवाय से तात्पर्य जो भी पढाया जाए उसका सम्बन्ध बालकों के वातावरण, उनके दैनिक जीवन की क्रियाओं तथा विद्यालय में सम्पन्न सभी प्रकार के कार्यक्रमों तथा अनुभवों के साथ स्थापित किया जा सके। इस तरह बालक सामाजिक अध्ययन के साथ स्थापित किया जा सके। इस तरह बालक सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित ज्ञान एवं अनुभवों की अलग अलग

करके नही बल्कि एकीकृत एवं संगठित रूप से ग्रहण कर सके, इस बात की भी पूरी चेष्टा पाठ्यक्रम निर्माण के समय की जानी चाहिए।

7. **रूचि का सिद्धान्त–** सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय यह बात नही भूलनी चाहिए कि पाठ्यक्रम में ऐसी सामग्री और अनुभवों का समावेश हो जिससे विद्यार्थियों की रूचि विषय के अध्ययन में बनी रहे और वे उत्साह एवं लगन के साथ आवश्यक अधिगम अनुभवों को ग्रहण करते रहे।
8. **व्यक्तिगत विभिन्नता का सिद्धान्त–** पाठ्यक्रम की रचना में विभिन्न प्रकार के बालकों की रूचियों और आवश्यक कलाओं का ऐसे संतुलित ढंग से ध्यान रखा जाना चाहिए कि उनके अध्ययन और विकास के कार्यक्रमों में कोई रूकावट न आए और वे अपनी स्वाभाविक गति से प्रगति करते जाए।
9. **उपयोगिता का सिद्धान्त–** इस सिद्धान्त के अनुसार सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में उन प्रकरणों विषय सामग्री एवं अनुभवों को सम्मिलित किया जाना चाहिए जो व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी हो।
10. **उच्च कक्षाओं की आवश्यकता पूर्ति का सिद्धान्त–** सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में उन सभी बातों का समावेश किया जाना आवश्यक हो जाता है जो आगे की कक्षाओं या स्तर के पाठ्यक्रम का आधार बन सके।
11. **दूरदर्शिता का सिद्धान्त–** पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो न केवल बालकों के वर्तमान आवश्यकताओं की मांग को पूरा करता हो बल्कि उन्हें अपने भावी जीवन को ठीक प्रकार से जीने के लिये तैयार भी कर सके।
12. **लचीलेपन का सिद्धान्त–** पाठ्यक्रम में जडता तथा अपरिवर्तनशीलता के स्थान पर लचीलेपन का गुण होना चाहिए जिससे इसमें समय की मांग के अनुसार आवश्यक परिवर्तन व संशोधन लाया जा सके। पाठ्यक्रम में अधिगम अनुभव प्रदान करने की पूर्ण स्वतन्त्र भी होनी चाहिए ताकि पाठ्यक्रम का अधिक रचनात्मक ढंग से उपयोग किया जा सके।
13. **अध्यापक से परामर्श का सिद्धान्त–** किसी भी स्तर के पाठ्यक्रम निर्माण मे ंअध्यापक से परामर्श लेना बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। पाठ्यक्रम निर्माण के लिये अनुभवी अध्यापकों के सुझावों, निर्देशन एवं परामर्श आदि का पूरा पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए और इस दृष्टि से उनकी पाठ्यक्रम निर्माण कमेटी आदि में प्रतिनिधित्व भी दिया जाना चाहिए। हमारें देश के माध्यमिक विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन का जो पाठ्यक्रम प्रचलित है उसमें विषयवस्तु, क्षेत्र, उद्देश्य की पूर्ति हेतु मार्ग निर्देशन इत्यादि की दृष्टि से काफी कमियां नजर आती है।

उदाहरण के तौर पर अगर हम राजस्थान के विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर प्रचलित पाठ्यक्रम जिसका निर्माण राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के तत्वाधान में किया गया है, के विश्लेषण करने का प्रयास करें, तो हमें उसमें निम्नलिखित दोष नजर आते है :

1. **पाठ्यक्रम में विस्तृत अनुभवों की कमी है–** पाठ्यक्रम हमारा मार्गदर्शन करता है परन्तु वर्तमान समय में अगर पाठ्यक्रम को देखा जाए तो इसमें विस्तृत अनुभवों की कमी है इस कारण जिस मानस को लेकर हम पाठ्यक्रम का निर्माण करते है वह पूर्ण नहीं हो पा रहा है।
2. **पाठ्यक्रम में पर्यावरण केन्द्रिता का अभाव है–** बालकों को भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक पर्यावरण से पर्याप्त तालमेल रखनें के प्रयत्नों में भी प्रचलित पाठ्यक्रम ठीक प्रकार सफल नही हो पाया है। इसके अध्ययन से बालकों को अपने चारों ओर के पर्यायवरण तथा अपनी सांस्कृतिक विरासत को भली भांति जानने और समझने के समुचित अवसर प्राप्त नही होते।
3. **पाठ्यक्रम दैनिक जीवन की आवश्यकताओं से सम्बन्धित नही है–** पाठ्यक्रम बालकों को इस दृष्टि से सक्षम बनानें में असमर्थ है कि वे अपने दैनिक जीवन से सम्बन्धित सामाजिक समस्याओं का उचित निराकरण कर सकें तथा सामाजिक कार्यो एवं कर्त्तव्यों के ठीक निर्वाह करनें के योग्य बन सकें।

4. **राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता के भावों के पोषण में असमर्थ है–** प्रचलित पाठ्यक्रम इतना सशक्त और समर्थ नही बन पाया है कि वह विद्यार्थियों को जाति, धर्म, भाषा और प्रान्तवाद की संकीर्ण मनोवृतियों को उभार कर न केवल राष्ट्रीयता के सत्र में पिरोनें सम्बन्धी भावों कों विकसित करें बल्कि उन्हें आगे सम्पूर्ण विश्व ही एक कुटम्ब की विचारधारा में लाकर विश्व शान्ति का मार्ग प्रशस्त करें तथा मानवीय सम्बन्धों की नींव को मजबूत करनें मे मदद करें।
5. **पाठ्यक्रम में व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ध्यान नही रखा गया है–** बालकों में जों स्वाभाविक व्यक्तिगत भेद पाये जाते है उनको ध्यान में रखकर इसका निर्माण नही किया गया है साथ ही प्रतिभाशाली और पिछडे हुए बालकों के लिये उसके अन्दर कोई उचित प्रावधान रखनें के प्रयत्न भी किये गये है।
6. **पाठ्यक्रम में शिक्षण विधियों, शिक्षण सामग्री, मूल्यांकन आदि का उचित उल्लेख नही है–** इस पाठ्यक्रम में अधिगम अनुभवों को प्रदान करने से सम्बन्धित दिशा निर्देशों और सुझावों का भी अभाव स्पष्ट झलकता हैं शिक्षण साधनों और सहायक सामग्री के प्रयोग तथा मूल्यांकन करनें से सम्बन्धित बातों के उल्लेख का भी इसमें अभाव है।
7. **पाठ्यक्रम निर्माण में समवाय के सिद्धान्त का उचित पालन नही किया गया है–** जीवन भौतिक और सामाजिक वातावरण पाठ्यक्रम के अन्य विषयों आदि से समवाय और पाठ्यक्रम निर्माण करनें के कार्य में भी प्रचलित पाठ्यक्रम खरा नही उतर चुका है।
8. **पाठ्यक्रम में प्रकरणों विषयवस्तु एवं अनुभवों का उचित एकीकरण एवं समन्वय नही है–** सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम में जो विषयवस्तु प्रकरण एवं अनुभव सामाजिक विज्ञानों के विभिन्न विषयों या अध्ययन क्षेत्रों से लिये गये है उनमें उचित तालमेल बैठाकर उन्हें एकीकृत और समन्वित करनें का प्रयास नही किया गया है।
9. **लचीलेपन का अभाव–** पाठ्यक्रम में लचीलापन न होकर रूढिवादिता कठोरता तथा जडता है जो एक बार लिपिबद्ध कर दिया जाता है उसका अक्षरशः पालन विद्यार्थी, अध्यापक तथा परीक्षकों द्वारा परीक्षा योजना बनानें के लिये किया जाता है। इसके अन्तर्गत परिस्थितियों के अनुसार उचित परिवर्तन और परिमार्जन करनें की स्वतन्त्रता प्रदान करने का कोई प्रावधान नहीं है।
10. **पाठ्यक्रम व्यावहारिक न होकर सैद्धान्तिक है–** प्रचलित पाठ्यक्रम में व्यावहारिकता की अपेक्षा सैद्धान्तिकता की अधिक छाप है पुस्तकीय ज्ञान पर ज्यादा जोर है, परन्तु सही अर्थो में सामाजिक अध्ययन के शिक्षण तथा जिस प्रकार के सामाजिक तथा मानवीय गुणों का समावेश बच्चों में होना चाहिए।
11. **क्रियाशीलता तथा रूचि सम्बन्धी सिद्धान्तों का ध्यान नही रखा गया है–** पाठयक्रम का अनुसरण भली भांति नही किया गया है उपयोगी क्रियाओं तथा व्याहारिक गतिविधियों के आधार पर अधिगम अनुभवों का संगठित नही किया गया है और न बालकों की स्वाभाविक प्रवृतियों तथा विभिन्न रूचियों के पोषण को ही शिक्षण का आधार बनानें का प्रयत्न इसके अन्तर्गत किया गया है।

पाठ्यक्रम में सुधार हेतु सुझाव– उपरोक्त दोषों के आधार पर यह स्पष्ट है कि माध्यमिक कक्षाओं के लिये निर्मित वर्तमान पाठ्यक्रम सामाजिक अध्ययन शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों की ठीक प्रकार से पूर्ति करना एक तरह से असफल ही प्रतीत होता है। सहयोग देने का जो आदर्श सामाजिक अध्ययन के शिक्षण द्वारा पूरा हो सकता है उसे सार्थक बनानें में यह असमर्थ है। अतः इसमें पर्याप्त सुधार की आवश्यकता हैं इसके सुधार हेतु निम्न सुझाव उपयोगी सिद्ध हो सकते है–

1. सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों का पाठ्यक्रम निर्माण समिति द्वारा पूरी तरह मनन और विश्लेषण कर ही पाठ्यक्रम निर्माण किया जाना चाहिए।
2. पाठ्यक्रम निर्माण समिति में अनुभव अध्यापको शिक्षा विदों तथा समाजशास्त्रियों को उचित प्रतिनिधित्व देने की व्यवस्था होनी चाहिए।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

3. सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम में विषयवस्तु जिन जिन विषयों से ली जाए प्रस्तुतीकरण एकीकृत एवं समन्वित ढंग से ही किया जाना चाहिए, पृथक–पृथक रूप से नही।
4. पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिकता और व्यवहारिकता दोनों का ही उचित समन्वय एवं तालमेल करना चाहिए।
5. पाठ्यक्रम में वातावरण केन्द्रितता क्रियाशीलता, रूचि, जीवन के प्रति सम्बद्धता समवाय, लचीलापन आदि सिद्धान्तों का पर्याप्त अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. पाठ्यक्रम विषय केन्द्रित न होकर बाल केन्द्रित होना चाहिए।
7. पाठ्यक्रम में ऐसे अनुभवों का समावेश होना चाहिए जो बालकों को न केवल उनकी सांस्कृतिक विरासत से परिचित करायें बल्कि उनको अपने चारों ओर की दुनिया और सामाजिक समस्याओं से अवगत करा सकें।
8. पाठ्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षण विधियों, शिक्षण सामग्री तथा मूल्यांकन सम्बन्धी आवश्यक बातों का भली भांति उल्लेख किया जाना चाहिए।
9. पाठ्यक्रम समय तथा साधनों को ध्यान में रखकर ही निर्मित किया जाना चाहियें ताकि न तो बच्चों को यह बोझिल प्रतीत हो और न इसे समाप्त करनें में उन्हें और अध्यापक को विशेष कठिनाई का सामना करना पडे।

प्र–14 ''एक सुनिश्चित कार्यक्रम किसी भी कार्य की सफलता को सुनिश्चित करता है'' इस कथन के आलोक में अध्यापक के लिये दैनिक पाठ योजना के महत्व पर चर्चा कीजिए।

A Planned programme in any activity ensures success". In the light of this statement discuss the importance of daily lesson plan for a teacher.

उत्तर पाठ योजना पाठ को पढानें से पूर्व की गई तैयारी और नियोजन की ओर संकेत करती है इस प्रकार की पूर्व तैयारी और नियोजन किसी भी कार्य को सही ढंग से करने के लिये आवश्यक होता है जिस कार्य को बिना सोचे समझे तथा यह तय किये हुए कि यह क्यों करना है कैसे करना है तथा किस किस को करना है, वैसे ही शुरू कर दिया जाता है, उसके सम्बन्ध में अच्छें परिणामों की आशा करना व्यर्थ ही है। इसीलियें किसी विषय विशेष पाठ को पढाकर उससे उचित लाभ प्राप्त करने की दृष्टि से यह आवश्यक हो जाता है कि अध्यापक कक्षा में जाने से पूर्व उसकी आवश्यक तैयारी पाठ योजना बनाकर कर ले। एक अध्यापक को पाठ योजना बनाना निम्न कारणों से लाभकारी होता है।

1. **उद्देश्य की स्पष्टता–** पाठ से सम्बन्धित अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को पाठ योजना स्पष्ट रूप से अध्यापक के सामनें ला देती है। उद्देश्यों की स्पष्टता उसे सफलतापूर्वक आगे बढानें में काफी सहायक साधनों का उपयोग आदि सभी कार्य उन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर करने का प्रयत्न करता है तथा व्यर्थ इधर उधर की बातें कर समय नष्ट नही करता।
2. **बाल केन्द्रित शिक्षण–** आज के अध्यापक की मांग उसका बाल केन्द्रित होना है। पाठ योजना का निर्माण करते समय अध्यापक विद्यार्थियों के विषय और पाठ सम्बन्धी पूर्व ज्ञान, रूचियों तथा उनकी योग्यताओं आदि के बारें में अपनी पूरी तरह स्पष्ट धारणा बनाकर ही आगे बढता है। वह उनके पूर्व ज्ञान की परीक्षा कर यह देख लेता है कि जिस पाठ को पढाया जा रहा है, उसके ग्रहण करने हेतु बालकों में अपेक्षित योग्यता है या नहीं। बालकों की रूचि और योग्यताओं को आधार बनाकर उचित शिक्षण प्रदान करनें में इस तरह की पाठ योजना काफी सहायता कर सकती है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

3. **उचित अभिप्रेरणा एवं रूचि उत्पन्न करना–** अभिप्रेरणा सफल अधिगम की कुंजी है बालकों को पाठ को पढानें की आवश्यकता का अनुभव कराना तथा उनमें उसके पढनें के प्रति पर्याप्त रूचि और उत्साह जाग्रत करना शिक्षण कार्य में सफलता के लिये काफी आवश्यक कार्य है। पाठ योजना अध्यापक की इस कार्य मे ंपूरी पूरी मदद करती है। पाठ कों ठीक प्रकार से प्रस्तावित कर बालकों को पाठ के पढने के प्रति अभिप्रेरित करने में तथा पाठ्य सामग्री पाठ्य विधि, शिक्षण सामग्री तथा क्रियाओं आदि के उचित चुनाव द्वारा एक अच्छी पाठ योजना छात्रों की रूचि को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बराबर बनाए रखती है।
4. **विषय सामग्री का उपयुक्त चयन एवं संगठन–** एक पाठ योजना शिक्षण उद्देश्यों तथा बालकों की योग्यता तथा रूचियों को ध्यान में रखते हुए पढाये जाने वाले पाठ के लिये उपयुक्त विषय सामग्री के चुनाव का पूरा पूरा ध्यान रखती है। ''सरल से कठिन की ओर'' स्थूल से सूक्ष्म की ओर'' तथा ''क्रिया से सिद्धान्त की ओर'' इन बातों का ध्यान रखकर पाठ्य वस्तु के उचित मनोवैज्ञानिक एवं क्रमिक संगठन मे ंपाठ योजना काफी सहायक होती है। पाठ योजना की सहायता से बालकों को पाठ से सम्बन्धित बातों का क्रमिक और व्यवस्थित ज्ञान करानें में अध्यापक को बहुत सुविधा हो जाती है।
5. **विषय वस्तु पर अधिकार–** पाठ योजना बनाते समय एक अध्यापक को पढाये जाने वाली विषय वस्तु को बार बार अपने सामने रखकर उचित योजना बनानी होती है विषय वस्तु के इस प्रकार दोहराये जाने से उसका उस पर अधिकार होना स्वाभाविक ही है।
6. **पाठ्य सामग्री के उचित प्रस्तुतीकरण में सहायक–** पाठ योजना के द्वारा इस बात का निर्णय पहले से ही लिया जाता है कि पाठ्य सामग्री के उचित प्रस्तुतीकरण में किस प्रकार की शिक्षण विधि उपयुक्त होगी, किस प्रकार की शिक्षण सामग्री और साधनों का उपयोग कब और कैसे किया जाएगा। इसी प्रकार की सभी बातों का पूर्व निर्धारण पाठ्य सामग्री के प्रभावपूर्ण प्रस्तुतीकरण में सहायक होता है।
7. **कक्षा समस्याओं के उचित हल में सहायक–** पाठ योजना के माध्यम से एक अध्यापक कक्षा शिक्षण में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का पहलें से ही पूर्वानुमान लगाकार उनके समाधान सम्बन्धी उपाय सोच लेता है और इस तरह इन समस्याओं का सामना करने के लिये पहले से ही उचित तैयारी कर लेता है। ये समस्याएं सभी प्रकार की हो सकती है जैसे कक्षा का वातावरण अध्ययनमय बनानें की समस्या बैठनें का उचित प्रबन्ध आदि। पाठ योजना इन सबके उचित समाधान मे अध्यापक की पूरी पूरी मदद कर सकती है।
8. **अर्जित ज्ञान कों स्थायित्व प्रदान करनें में सहायक–** पाठ योजना योजना पाठ्य सामग्री के उचित प्रस्तुतीकरण में ही सहायक नहीं होती बल्कि यह सम्बन्धित अधिगम अनुभवों को ंविद्यार्थियों के मस्तिष्क में ठीक प्रकार बिठानें और उनका उपयोग कर सकनें में भी उचित सहायता प्रदान करनें का कार्य करती है। विषय वस्तु का उचित सारांश देने तथा पुनरावृति, अभ्याय कार्य तथा गृहकार्य आदि को ठीक ढंग से आयोजित करने के कार्य को भली भांति सम्पन्न करना अर्जित ज्ञान के स्पष्टीकरण में काफी सहायक सिद्ध हो सकता है।
9. **मूल्यांकन प्रक्रिया में सहायक–** मूल्यांकन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक प्रमुख अंग है। एक अच्छी पाठ योजना इस प्रक्रिया से सम्बन्धित सभी कार्यो का उचित मूल्यांकन करनें में अध्यापक और विद्यार्थी दोनो को ही काफी सहायक सिद्ध होता है पाठ योजना में अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को निर्मित करते समय, पाठ्य सामग्री तथा शिक्षण विधियों आदि का चुनाव करते समय विभिन्न पक्षों के मूल्यांकन पर उचित ध्यान रखा जाता है इन सभी में मूल्यांकन प्रक्रिया सहायक होती है।
10. **समय एवं शक्ति की बचत में सहायक–** जो कुछ अध्यापक तथा विद्यार्थियों को करना होता है वह पाठ योजना के माध्यम से अध्यापक के सामनें बिलकुल स्पष्ट रहता है इस तरह लक्ष्य और लक्ष्य प्राप्ति के

लिये किए जाने वाले प्रयत्नों की पूर्ण स्पष्टता उन्हें निरूद्देश्य इधर–उधर भटकनें से बचाकर उनके समय और शक्ति के उचित उपयोग में पूरी तरह सहायक सिद्ध होती है।

11. **आत्मविश्वास की वृद्धि में सहायक–** आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है जिस अध्यापक में अपने पाठ को ठीक प्रकार से पढानें हेतु उचित आत्मविश्वास नही होता वह कभी भी अपने शिक्षण के साथ पूरा न्याय नही कर सकता। पाठ योजना यहां अध्यापक का साथ देने के लिये आगे बढती है। अपने पाठ को पढायें जाने के सम्बन्ध में सभी बातों को ठीक प्रकार सोचनें और शिक्षण कार्य को उचित ढंग से नियोजित करनें से अध्यापक को जो कुछ भी कक्षा में करना है उसके लिये वह पहलें से ही न केवल मानसिक रूप से तैयार हो जाता है बल्कि शिक्षण कार्य को सम्पन्न करनें के लिये आत्मविश्वास के साथ कक्षा शिक्षण के लिये जाता है पाठ योजना द्वारा प्रदत्त इस प्रकार का आत्मविश्वास निःसन्देह उसकी सफलता में काफी सहायक सिद्ध हो सकता है।

निष्कर्ष– इस प्रकार पाठ योजना शिक्षण अधिगम कार्य की सफलता में सभी दृष्टि से सहयोगी सिद्ध होकर एक अध्यापक की उसके शिक्षण कार्य में पूरी पूरी मदद कर सकने का सामर्थ्य रखती है। एक अध्यापक जो कक्षा शिक्षण के लिये जाने से पूर्व पढायें जाने वाले पाठों की नियमित रूप से पाठ योजनाएं तैयार करता है और उन्हीं के अनुसार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को एक निश्चित दिशा प्रदान करने का प्रयत्न करता है वह कभी भी अपने शिक्षण में असफलता का मुंह नही देख सकता। एक अच्छी पाठ योजना का निर्माण उसे कुशल नाविक की भांति सदा ही अपनी शिक्षण रूपी नौका को उद्देश्यों रूपी तट तक खेने में सफलता अर्जित कराता है इसीलिये सामाजिक अध्ययन के विषय को ठीक प्रकार पढानें हेतु सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को सदैव ही उपयुक्त पाठ योजनाओं के निर्माण की और ध्यान देते रहना चाहिए। ताकि उसे कक्षा की गतिविधियों पर पूर्ण नियंत्रण रखते हुए सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों की प्रभावपूर्ण प्राप्ति में पूरी–पूरी सहायता मिल सके।

प्र–15 अपने विचार में सामाजिक अध्ययन विषय के शिक्षण में क्या आवश्यक गुण होने चाहियें तथा उनके कौन से प्रमुख कार्य है?

In your opinion what should be the essential qualities and main function of a teacher of social studies?

उत्तर सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को अनेक कार्य करने होते है एक ओर उसे शिक्षण कार्य करते हुए सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों को पूरा करना होता है एव छात्र को समुचित विकास की ओर अग्रसर करना होता है तथा दूसरी ओर सामाजिक सम्बन्धों को विषय व्याख्याता होने के नाते उसे स्थानीय समुदाय का उचित मार्गदर्शन भी करना होता है। वह विद्यालय एवं समुदाय में सेतु का कार्य करता है। विद्यालय एवं समुदाय को एक दूसरे के निकट लानें में उसे विशेष भूमिका निभानी पडती है। इन सभी कार्यो को करनें के लिये उसमें ऐसे गुणों का होना आवश्यक है जो उसे कुशलतापूर्वक एवं प्रभावशाली ढंग से कार्य करनें में आवश्यक सिद्ध हो। इन गुणों का अध्ययन निम्न शीर्षकों में किया जा सकता है–

व्यक्तित्व से सम्बन्धित गुण–

1. **मानवीय गुण–** एक अध्यापक के लिये अच्छा अध्यापक बनने से पहलें अच्छा मानव बनना बहुत आवश्यक है उसके अन्दर ज्ञान कूट–कूट कर भरा होना चाहिए। वह कई दोनों में काम करने वाला हों। सभी प्रकार के लोगों के साथ उसके मित्रतापूर्ण सम्बन्ध होने चाहियें। उसके अन्दर किसी प्रकार का पूर्वाग्रह नही होना चाहिए। वह सभ्य हो ताकि अपनी सभ्यता को आने वाली पीढियों तक भी पहुंचा सकें।
2. **शिक्षा सम्बन्धी गुण–**एक सामाजिक अध्ययन का अध्यापक काफी योग्य होना चाहियें ऐसा इसलियें आवश्यक है कि आधुनिक युग के बच्चें तेजी से बदलतें हुए युग में बडें हो रहें है। आधुनिक युग के बच्चों

को ज्ञान की आवश्यकता है वे अपने आसपास के विश्व को समझना चाहते है। उन्हें सामाजिक अध्ययन से सम्बन्धित सभी विषयों के ज्ञान की आवश्यकता हैं। उसे परिवार, समुदाय, राज्य राष्ट्र और विश्व के बारें में ज्ञान की आवश्यकता है क्योंकि समाज तेजी से बदल रहा है इसलियें सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को भी लगातार अधिगम करते रहना चाहियें। सामाजिक अध्ययन समाज से सम्बन्ध रखता है इसलियें इस विषय के अध्यापक के पास तो समाज सम्बन्धी नवीनतम ज्ञान होना चाहियें। इसके अन्दर तो हर एक सामाजिक समस्या के बारें में अपने विचार प्रकट करनें की क्षमता होनी चाहियें।

3. **रचनात्मक दृष्टिकोण–** एक सामाजिक अध्ययन के अध्यापक में जीवन के प्रति रचनात्मक दृष्टिकोण होना चाहियें। यदि नये विचार उत्तम है तो उन्हें ग्रहण करने के लिये वह हमेशा तैयार रहें। उसका अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण होना चाहियें। यदि आधुनिक खोज ने उसके सामने कुछ नये तथ्य प्रस्तुत किये है तो उसे मानने में उसे झिझकना नही चाहियें उसे सदा नये ज्ञान प्राप्त करनें के लिये तत्पर रहना चाहियें।
4. **शिक्षण विधियों में निपुण–** सामाजिक अध्ययन एक ऐसा विषय नहीं है जिसमें केवल बच्चों को ज्ञान देना है इसमें तो बच्चों के अन्दर उचित कौशल और दृष्टिकोण भी उत्पन्न करते है। इसलिये अध्यापकों को सभी विधियाँ आनी चाहियें जिससे वह छात्रों की रूचियों को जाग्रत कर सके। उन्हें खोज करने की प्रेरणा दे सके क्योंकि प्रजातन्त्र तब तक सफल नही हो सकता जब तक अध्यापक, छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन, आपसी अध्ययन अवसर की समानता सहयोग और तर्क को प्रस्तुत करने की आदत का अध्ययन न करें। वह कक्षा कक्ष में ऐसी विधियों का प्रयोग करें कि कक्षा कक्ष कठिन परिणाम का स्थान बन जायें।
5. **एक अच्छा नागरिक–** सामाजिक अध्ययन के अध्यापक का सारे समुदाय के प्रति एक विशेष उत्तरदायित्व है इसको सार्वजनिक कार्यो में ज्ञान और नेतृत्व प्रदान करना है उसे नागरिकता और कर्त्तव्यों का ज्ञान होना चाहियें और छात्रों के अन्दर भी वह अच्छी नागरिकता की भावना पैदा करने का प्रयत्न करें।
6. **सामाजिक समस्याओं का ज्ञान–** सामाजिक अध्ययन विषय में अधिकांश सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण हैं इसलियें छात्रों को समाज की अधिकतम समस्याओं से अवगत कराना शिक्षक का पहला कर्त्तव्य है सामाजिक समस्याओं से अवगत कराना शिक्षक का पहला कर्तव्य है सामाजिक अध्ययन एक व्यवहारिक शास्त्र है इससे सिद्धान्तों को व्यवहारिक जीवन में अपनानें हेतु समाज की वास्तविकताओं से अवगत होना आवश्यक है।
7. **विनोदप्रियता तथा बुद्धि चातुर्य–** सामाजिक अध्ययन पर शुष्कता एवं नीरसता का दोष लगाया जाता है विनोदप्रियता तथा बुद्धि चातुर्य से अध्यापक कठिन से कठिन विषय भी सुबोध एवं सरल बन सकता है।
8. **धैर्य एवं आत्म संयम–** धैर्य एवं आत्म संयम वे गुण है जिनसे मैत्रीपूर्ण एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार प्रस्फुटित होता है अत्यन्त उत्तेजक स्थिति में भी जो अध्यापक धैर्य और आत्म संयम नही छोड़ता वह निश्चित रूप से स्थिति पर नियन्त्रण कर लेता है।
9. **मैत्रीपूर्ण एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार–** सामाजिक अध्ययन एक व्यापक विषय है इसके कई प्रकरण रोचक एवं सरल होते है तो कई प्रकरण कठिन तथा दुर्बोध होते है इसके लिये विद्यार्थियों के प्रति अध्यापक का मैत्रीपूर्ण तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार होना चाहियें।
10. **लोकतान्त्रिक एवं व्यापक दृष्टिकोणः–** विद्यार्थियों में लोकतत्रात्मक प्रवृतियों एवं व्यापक दृष्टिकोण विकसित करना सामाजिक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है इस उद्देश्य की पूर्ति पुस्तकों तथा शिक्षण क्रियाओं से तभी सम्भव हो सकती है जब अध्यापक का अपना दृष्टिकोण लोकतन्त्रातक एवं व्यापक है।
11. **ईमानदारी एवं गाम्भीर्य–** अध्यापक के कार्यकलाप में ईमानदारी तथा गम्भीरता की झलक मिलनी चाहियें। विद्यार्थी बहुत कुछ अपने अध्यापक का अनुकरण करके सीखते है।
12. **मानसिक स्वास्थ्यः–** किसी भी शिक्षक के लिये मानसिक रूप से स्वस्थ होना बहुत आवश्यक है वह शिक्षण उतना ही अच्छा होगा जितना कि उसका मानसिक स्वास्थ्य।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

13. **विषय और व्यवसाय के प्रति निष्ठा**–सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को अपने आप पर और अपने विषय पर छात्रों में निष्ठा होनी चाहिए। साथ ही प्रजातान्त्रिक आदेशों के प्रति विश्वास होना चाहियें।
14. **समसामयिक घटनाओं का ज्ञान**–सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को समसामयिक घटनाओं से पूर्ण रूप से परिचित रहना आवश्यक है। सामाजिक जीवन पर धार्मिक, राजनीतिक आर्थिक परिवर्तनों का प्रभाव पडता है। सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को इन सबका पता होना चाहियें।

व्यवसायिक गुण–

1. **विषय का ज्ञान**– सामाजिक अध्ययन के शिक्षक को सभी सामाजिक विषयों के आधार भूत नियमों एवं तथ्यों का ज्ञान होना आवश्यक है छात्रों को अपने व्यापक ज्ञान से प्रभावित करने के लिये यह आवश्यक है कि अध्यापक को विषय का ज्ञान प्राप्त हो।
2. **व्यावसायिक प्रशिक्षण**– सफलतापूर्वक अध्यापक के लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण बहुत आवश्यक है व्यावसायिक प्रशिक्षण में छात्रों को न केवल शिक्षा के उद्देश्य शिक्षण विधियों और पाठ्यक्रम को चुनने के सिद्धान्त बतायें जाते है अच्छा अध्यापक एक जन्मजात शक्ति है जिसे प्रशिक्षण से और भी सुधारा जा सकता है।
3. **सतत प्रयत्नशीलता एवं अध्ययनशीलता**– सामाजिक अध्ययन एक प्रतिनिधित्व विषय है और शिक्षण निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है सामाजिक अध्ययन का अध्यापक अपने विषय तथा शिक्षण व्यवसाय के साथ साथ अध्ययन कर सकता है जब उसमें अपनी योग्यता को निरन्तर सुधारने की लालसा हो।
4. **प्रचलित समस्याओं का ज्ञान**– सामाजिक अध्ययन एक तेजी से विकसित होने वाला विषय है इसलिये सामाजिक वातावरण में जों परिवर्तन आ रहा है शिक्षक को उनकी पूरी जानकारी होनी चाहियें।
5. **दूसरों के साथ अच्छें सम्बन्ध**– सामाजिक अध्ययन के अध्यापक का अपने विद्यार्थियों के साथ तो मैत्रीपूर्ण तथा सहयोगात्मक सम्बन्ध होना चाहिए। दूसरे अध्यापकों तथा कर्मचारियों के साथ भी अच्छे सम्बन्ध होने चाहियें।

प्र–16 अपनी पसन्द के किसी एक प्रकरण पर पाठ योजना बनाइए।

Make a lesson plan on the topic of your choice.

उत्तर दिनांकः.......................................कक्षा.........................वर्ग.....................कालांश ....

विद्यालय...समय...........................

विषय सामाजिक अध्ययन..प्रकरण...

पाठ क्रमांक...प्रस्तुत पाठ सहित अब तक पढ़ाये गये पाठों की कुल संख्या।

क्र.सं.	उद्देश्य	उद्देश्य में व्यवहारगत परिवर्तन
1	ज्ञान	1. छात्र उपभोक्ता जागरूकता से सम्बन्धित तथ्यों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे। 2. छात्र उपभोक्ता जागरूकता से सम्बन्धित तथ्यों का प्रत्याभिज्ञान कर सकेंगे।
2	अवबोध	1. छात्र जागरूक उपभोक्ता के अर्थ की व्याख्या कर सकेंगे। 2. छात्र उपभोक्ता उपभोक्ता के अर्थ की व्याख्या कर सकेंगे।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries.

3	**ज्ञानोपयोग**	1. छात्र उपभोक्ता के अधिकारों एवं कर्त्तव्य की परस्पर तुलना कर सकेंगे। 2. छात्र उपभोक्ता के कर्त्तव्यों से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त कर उसें भविष्य में उपयोग कर सकेंगे।
4	**कौशल**	1. छात्र उपभोक्ता के अधिकारों को चार्ट बनाकर दर्शाने की कुशलता अर्जित कर सकेंगे। 2. छात्र उपभोक्ता के कर्तव्यों को चार्ट द्वारा दर्शा सकेंगे।
5	**अभिरूचि**	1. छात्र उपभोक्ता जागरूकता से सम्बन्धित तथ्यों में रूचि ले सकेंगे। 2. छात्र उपभोक्ता के अधिकारों व कर्तव्यों से सम्बन्धित जानकारी पत्रिकाओं, टी.वी. अखबार आदि से ले सकेंगे।
6	**अभिवृत्ति**	1. छात्र उपभोक्ता जागरूकता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपना सकेंगे। 2. छात्र उपभोक्ता के अधिकारों को जानकर उपभोक्ता शोषण दूर करनें का प्रयास करेंगे।

सहायक सामग्री–

1. उपभोक्ता के अधिकारों से सम्बन्धित चार्ट।
2. उपभोक्ता के कर्तव्यों से सम्बन्धित चार्ट।
3. अन्य सहायक सामग्री।

पूर्व ज्ञान– छात्र उपभोक्ता जागरूकता से सम्बन्धित तथ्यों की सामान्य जानकारी रखते है।

प्रस्तावनाः–

प्र–1 दैनिक जीवन में काम आने वाली वाली वस्तुएं हम कहां से खरीदते है।

प्र–2 बाजार में वस्तुओं का लेन देन करने वाला व्यक्ति क्या कहलाता है?

प्र–3 व्यापारी से वस्तुएं खरीदनें वाला व्यक्ति क्या कहलाता है?

प्र–4 वर्तमान में उपभोक्ता को कैसा होना चाहिये।

प्र–5 जागरूकता उपभोक्ता के सन्दर्भ में आप क्या जानते है?

समस्यात्मक

उद्देश्य कथनः– आज हम उपभोक्ता के अर्थ, अधिकारों एवं कर्त्तव्यों से सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

उद्देश्यमय व्यवहारगत परिवर्तन / शिक्षण बिन्दु	अध्ययन– अध्यापन क्रिया	श्यामपट्ट सार
	विकासात्मक प्रश्न– प्रश्न:1 वस्तुओं को उपयोग में लेना क्या कहलाता है? – उपभोग करना प्रश्न:2 उपभोग करने वाला व्यक्ति क्या कहलाता है? – उपभोक्ता प्रश्न:3 उपभोक्ता का अर्थ क्या होता है? – समस्यात्मक	
उपभोक्ता का अर्थ।	**छात्राध्यापिका कथन–** कीमत देकर वस्तु का प्रत्यक्ष एवं अन्तिम उपभोग करने वाला व्यक्ति उपभोक्ता कहलाता है। उपभोक्ता आर्थिक क्रियाओं का केन्द्र बिन्दु होता है। अर्थात् उपभोक्ता से आशय उस व्यक्ति से है जो प्रतिफल के बदले कोई वस्तु या सेवा क्रय करता है या उसका उपभोग करता है। व्यापारिक उद्देश्य के लिये माल या सेवा क्रय करने वाला व्यक्ति उपभोक्ता की श्रेणी में नही आता है यदि कोई अपनी आजीविका चलाने हेतु कोई माल का उपयोग करता है तो वह भी उपभोक्ता की श्रेणी में ही आता है।	उपभोक्ता का अर्थ :– कीमत देकर वस्तु या सेवा का प्रत्यक्ष एवं अन्तिम उपभोग करने वाला व्यक्ति उपभोक्ता कहलाता है।
	बोध प्रश्न– प्रश्न:1 उपभोक्ता किसका केन्द्र बिन्दु होता है? – आर्थिक क्रियाओं का प्रश्न:2 कीमत देकर वस्तु का उपभोग करने वाला व्यक्ति कहलाता है? – उपभोक्ता	आर्थिक क्रियाओं का। उपभोक्ता
	विकासात्मक प्रश्न– प्रश्न:1 व्यापारी उपभोक्ता का क्या करते है? – शोषण प्रश्न:2 शोषण से बचने के लिये सरकार ने क्या निर्धारित किये है? – उपभोक्ता अधिकार	

GURUKPO Get Instant Access to your Study Related Queries...

उद्देश्यमय व्यवहारगत परिवर्तन/शिक्षण बिन्दु	अध्ययन– अध्यापन क्रिया	श्यामपट्ट सार
	प्रश्न:3 उपभोक्ता अधिकार कौन कौन से है?	
उपभोक्ता के अधिकार	समस्यात्मक छात्राध्यापिका कथन– आजकल अधिकांश व्यापारी उपभोक्ता का शोषण करते है। सरकार ने उपभोक्ता के समस्या निवारण हेतु छः अधिकार निर्धारित किये है इन अधिकारों का प्रयोग करके उपभोक्ता व्यापारियों के शोषण से बच सकता है ये अधिकार है – सूचना :– इसके तहत वस्तु से संबंधित सूचना प्राप्त करने का अधिकार 2. सुरक्षा – वस्तु जो व्यक्ति की सम्पत्ति को नुकसान पहुंचायें, सुरक्षा प्राप्त करने का अधिकार 3. चयन: पंसद की वस्तु के चयन का अधिकार 4. शिकायत: अपनी शिकायत व सुनवाई का अधिकार 5. क्षतिपूर्ति उपचार का अधिकार 6. उपभोक्ता शिक्षा– वस्तु के प्रति जानकारी का अधिकार।	उपभोक्ता अधिकार:– 1. सूचना 2. सुरक्षा 3. चयन 4. शिकायत 5. क्षतिपूर्ति 6. उपभोक्ता शिक्षा
	बोध प्रश्न– प्रश्न:1 उपभोक्ता समस्या निवारण हेतु कितने अधिकार निर्धारित किये गये है? प्रश्न:2 वस्तुओं से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने हेतु कौनसा अधिकार निर्धारित है – सूचना का अधिकार	छः सूचना का अधिकार
	विकासात्मक प्रश्न: प्रश्न:1 व्यापारियों के शोषण से बचने हेतु उपभोक्ता के लिये सरकार ने क्या निर्धारित किये है ? – उपभोक्ता अधिकार प्रश्न:2 अधिकार प्राप्त करने हेतु उपभोक्ता को पालन करना चाहिय? कर्तव्यों का। प्रश्न:3 उपभोक्ता के कर्तव्य कौन	

उद्देश्यमय व्यवहारगत परिवर्तन/शिक्षण बिन्दु	अध्ययन– अध्यापन क्रिया	श्यामपट्ट सार
	से है? – समस्यात्मक	
उपभोक्ता के कर्त्तव्य।	**छात्राध्यापिका कथन–** अधिकारों को प्राप्त करने हेतु उपभोक्ता को अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना आवश्यक है उपभोक्ता को खरीदे हुये माल की रसीद अवश्य लेनी चाहिये। पैकिंग पर लिखे विवरण को ध्यान से पढना चाहियें। मानकीकृत वस्तुओं को प्राथमिकता देनी चाहिये। वस्तु या सेवा के दोष की शिकायत करनी चाहिये उपभोक्ता संरक्षण हेतु बनाये गये नियमों व कानूनों की जानकारी होनी चाहियें। वस्तुओं को सही माप तौल देखकर ही खरीदना चाहिये।	उपभोक्ता कर्त्तव्यः– 1. खरीदे माल का बिल प्राप्त करें। 2. मानकीकृत वस्तुओं को प्राथमिकता दे। 3. वस्तु के दोष की शिकायत करें।
	बोध प्रश्न– प्रश्नः1 उपभोक्ता को खरीदे हुये माल का क्या लेना चाहिये? – बिल/रसीद प्रश्नः2 उपभोक्ता को कैसी वस्तुओं को हमेशा प्राथमिकता देनी चाहिये? – मानकीकृत	बिल/रसीद मानकीकृत

पुनरावृत्ति प्रश्न–

प्रश्न–1 उपभोक्ता का अर्थ बताईयें।

प्रश्न–2 उपभोक्ता के कोई दो अधिकारो के नाम बताईये।

प्रश्न–2 उपभोक्ता को किन किन कर्तव्यों का पालन करना चाहिये।

मूल्यांकन प्रश्न–

निर्देशः निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

सही विकल्प का चयन करें।

प्रश्न–1 सरकार ने उपभोक्ताओं हेतु कितने अधिकार निर्धारित किये है?

(अ) दो (ब) छः (स) पांच (द) तीन ( )

प्रश्न–2 अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिये उपभोक्ताओं को किसका पालन करना चाहिये?

(अ) कर्त्तव्य (ब) शोषण (स) अधिकार (द) कानून ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति करों :

प्रश्न–3 कीमत देकर वस्तु का उपभोग करने वाला ....कहलाता है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

प्रश्न–4 सरकार ने उपभोक्ता की समस्या के समाधान हेतु ....निर्धारित किये है।
प्रश्न–5 उपभोक्ता को कोई भी वस्तु कैसे खरीदनी चाहिये?
प्रश्न–6 उपभोक्ता को कब शिकायत करनी चाहिये?
गृह कार्य :7
उपभोक्ता के अर्थ, अधिकारों व कर्त्तव्यों को स्पष्ट कीजिये।

GURUKPO
Get Instant Access to Your Study Related Queries...

प्रश्नः सामाजिक अध्ययन शिक्षण में एक इकाई को लेते हुए इकाई योजना बनाइए। (Draw a Unit Plan on any unit of Social Study Teaching).

उत्तरः

इकाई योजना की रूपरेखा

विषयः सामाजिक अध्ययन — **कक्षा : दसवीं**

इकाई का नाम/शीर्षक : उपभोक्ता — **वर्ग :**

उपइकाई का नाम : उपभोक्ता जागरूकता
उपभोक्ता शोषण
उपभोक्ता शिकायत प्रक्रिया
जिला मंच

उत्प्रेक्षण उपक्रम एवं स्वरूपः

उद्योतन सामग्री :

विषय वस्तु सार

विषय वस्तु विश्लेषण	उप इकाई व शिक्षण बिन्दु	उद्देश्य व्यवहार गत परिवर्तन	सहायक सामग्री	अध्ययन अध्यापन की स्थितियां (छात्राध्यापिका की विद्यार्थियों की)		श्यामपट्ट सारांश	मूल्यांकन	गृह कार्य
उपभोक्ता जागरूकता	1. उपभोक्ता का अर्थ। 2. उपभोक्ता के अधिकार। 3. उपभोक्ता के कर्त्तव्य।	1. ज्ञान– छात्र उपभोक्ता से संबंधित तथ्यों का प्रत्यास्मरण व प्रत्याभिज्ञान कर सकेंगे। 2. अवबोधः छात्र उपभोक्ता से सम्बन्धित तथ्यों की व्याख्या व परस्पर तुलना कर सकेंगे।	1. उपभोक्ता के अधिकारों से सम्बन्धित चार्ट। 2. उपभोक्ता के कर्तव्यों से सम्बन्धित चार्ट।	1. छात्राध्यापिका प्रश्नोत्तर विधि द्वारा प्रस्तावना प्रश्न पूछेगी। 2. छात्राध्यापिका ने उद्देश्य उपकथन दिया। 3. छात्राध्यापिका ने अपेन विषय के शिक्षण बिन्दुओं के अनुसार पाठ्यसामग्री को विस्तार से पढाया। 4. छात्राध्यापिका ने मूल्यांकन प्रश्न पूछे। 5. छात्राध्यापिका ने गृह कार्य दिया।	1. विद्यार्थियों ने उचित उत्तर दिये। 2. विद्यार्थियों ने धैयेपूर्वक सुना। 3. विद्यार्थियों ने छात्राध्यापिका के भावानुसार प्रति क्रिया दी। 4. विद्यार्थियों ने उत्तर दिये। 5. विद्यार्थियों ने गृहकार्य को उत्तर पुस्तिका में नोट किया।	उपभोक्ता का अर्थः कीमत देकर वस्तु या सेवा का प्रत्यक्ष व अन्तिम उपभोग करने वाला व्यक्ति उपभोक्ता कहलाता है। उपभोक्ता शोषण के प्रकारः 1. अधिक मूल्य 2. नकली मूल्य 3. मिलावट 4. सुरक्षा उपायों का अभाव उपभोक्ता शिकायत प्रक्रियाः उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम कानून के अनुसार न्यायालय में शिकायत करनी चाहिए जिला मंच के क्षेत्राधिकार	रिक्त स्थान भरो 1. कीमत देकर वस्तु का उपभोग करने वाला ....कहलाता है। 2. सरकार ने उपभोक्ता समस्या समाधान हेतु .... निर्धारित किये है।	उपभोक्ता का अर्थ अधिकारों व इनके कर्तव्यों को स्पष्ट कीजिए।
उपभोक्ता शोषण	1. उपभोक्ता शोषण का अर्थ। 2. उपभोक्ता शोषण के प्रकार। 3. उपभोक्ता शोषण के कारण।	3. ज्ञानोपयोगः छात्र उपभोक्ता के तथ्यों से संबंधित ज्ञान का उपयोग उच्च अध्ययन में कर सकेंगे। 4. कौशलः– छात्र	1. उपभोक्ता शोषण के प्रकारों से सम्बन्धित चार्ट। 2. उपभोक्ता शोषण के कारणों से सम्बन्धित चार्ट।				सही गलत बताईयें। 1. क्या व्यापारी माल में मिलावट करते है। 2. क्या विज्ञापनों के माध्यम से	उपभोक्ता के शोषण इनके प्रकार, अर्थ व शोषण के कारणों की विवेचना कीजियें।

GURUKPO Get Instant Access to your Study related Queries...

		उपभोक्ता से सम्बन्धित तथ्यों को चार्ट के द्वारा				:— 1. आर्थिक आधार 2. भौगोलिक आधार।	उपभोक्ताओं का शोषण किया जाता है।	
उपभोक्ता शिकायत प्रक्रिया	1. शिकायत करने की प्रक्रिया। 2. शिकायत पत्र का प्रारूप 3. शिकायत निवारण की प्रक्रिया।	दर्शा सकेंगे। 5. अभिरूचिः छात्र उपभोक्ता से सम्बन्धित तथ्यों में रूचि ले सकेंगे। 6. अभिवृत्तिः छात्र उपभोक्ता तथ्यों से सम्बन्धित तथ्यों की प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपना सकेंगे।	1. उपभोक्ता शिकायत पत्र सम्बन्धित चार्ट। 2. उपभोक्ता शिकायत निवारण प्रक्रिया से सम्बन्धित चार्ट।				सही विकल्प चुनिये। 1. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम बनाया गया (अ) 1986 (ब) 1996 (स) 2006 (द) 2005 2. शिकायत पत्र होना चाहिए। (अ) लिखित (ब) मौखिक	उपभोक्ता शिकायत प्रक्रिया, शिकायत पत्र प्रारूप व शिकायत निवारण की प्रक्रिया को समझाइयें
जिला मंच	1. जिला मंच का गठन। 2. जिला मंच के क्षेत्राधिकार। 3. जिला मंच के विरूद्ध अपील।		1. जिला मंच के गठन से सम्बन्धित चार्ट। 2. जिला मंच के क्षेत्राधिकार से संबंधित चार्ट।				एक पंक्ति में उत्तर दो। 1. जिला मंच का गठन कौन करता है। 2. उपभोक्ता कितने दिन के भीतर अपील कर सकता है।	जिला मंच के गठन, क्षेत्राधिकार व अपील प्रक्रिया का वर्णन करें।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Unit III

Instructional Strategies, Methods and Approaches

अनुदेशात्मक व्यूह रचना, विधियॉ एवं अध्ययन

प्र–1 शिक्षण विधि का क्या अर्थ है? उसका महत्व की बताइयें?
What is the meaning of teaching method? Explain its importance.

उत्तर शिक्षण विधि से तात्पर्य शिक्षक द्वारा निर्देशित ऐसी क्रियाओं से है जिनकें परिणामस्वरूप छात्र कुछ सीखते हैं इस प्रकार शिक्षण विधि अनेक क्रियाओं का एक पुंज है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप छात्र कुछ ज्ञानार्जन करता है। शिक्षण विधि में प्रक्रिया होने के कारण इसमें कई सोपान होते है कई सोपान ऐसे होते है जो कई शिक्षण विधियों में पायें जाते है इन सोपानों को ठीक से व्यवस्थित करना शिक्षक का कार्य है।

शिक्षण विधि का महत्व किसी विषय के शिक्षण में वही महत्त्व है जो किसी निर्दिष्ट स्थान तक पंहुचनें के लिये मार्ग होता है एक सैनिक को जिस प्रकार विभिन्न अस्त्र शस्त्रों का ज्ञान होना आवश्यक है उसी प्रकार उसे उन अस्त्र शस्त्रों के प्रयोग की विधियों से अवगत होना भी आवश्यक है। तभी वह युद्ध क्षेत्र में कुछ कर सकता है इस प्रकार शिक्षक को विषयवस्तु व पद्धति दोनो का ही ज्ञान होना आवश्यक है शिक्षण विधि के महत्त्व अलग अलग विद्धानों ने इस प्रकार किया है–

1. **जान डी.पी.**– ''निष्कर्ष के विकास के लिये पद्धति पाठ्यवस्तु को सुव्यस्थित करने की विधि है।''
2. **वेस्ले तथा रोवेस्की**– '' शिक्षक को जहां विषय वस्तु का ज्ञान होना आवश्यक है, वहीं उसे शिक्षण विधि का भी ज्ञान होना चाहिए। शिक्षण विधि वस्तु के माध्यम से कार्य करती है और वस्तु तभी कार्य कर सकती है जब उसमें किसी शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाए''
3. **बाईनिंग एवं बाईनिंग**– शिक्षण शास्त्र को शिक्षण की प्रक्रिया का स्थिर पहले न माना जाए, वरन् उसे शिक्षा के गत्यात्मक कार्य के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए।
4. **सैकण्डरी एजूकेशन कमीशन**– ''चाहे जितना उत्तम पाठ्यक्रम बनाया जाए, चाहे जितने वैज्ञानिक पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाए, जब तक अच्छी शिक्षण विधि का प्रयोग अच्छे शिक्षक द्वारा नही किया जाता है, सब व्यर्थ हैं।''

इस प्रकार शिक्षक के लिये जहां विषय वस्तु का ज्ञान आवश्यक है, वहीं उसे आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का ज्ञान होना भी आवश्यक है इन आधुनिक पद्धतियों में उसे उचित तथा अच्छी पद्धति का चयन करना चाहिए।

प्र–2 सामाजिक अध्ययन शिक्षण में कौन–कौन सी विधियां अपनाई जाती है?

उत्तर सामाजिक अध्ययन शिक्षण में प्रयुक्त की जाने वाली प्रमुख विधियां निम्न है–

1. पाठ्यक्रम विधि
2. व्याख्यान विधि
3. समस्या समाधान विधि

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries.

4. वाद विवाद विधि
5. योजना विधि
6. प्रयोगशाला विधि
7. निरीक्षित अध्ययन विधि
8. समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि
9. स्त्रोत विधि
10. इकाई विधि

उपर्युक्त शिक्षण विधियों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. **परम्परागत विधियॉ–** इस शिक्षण विधि के अन्तर्गत पाठ्यपुस्तक विधि को रखा गया है पाठ्यपुस्तक को परम्परागत रूप से एक साधन के रूप मे ंप्रयोग किया जा रहा है।
2. **शिक्षक प्रधान विधियॉ–** इसके अन्तर्गत व्याख्यान विधि कहानी विधि आदि विधियों को रखा गया है।
3. **बालक प्रधान विधियांा–** इन विधियों में बालक की भूमिका प्रमुख होती है शिक्षक एक मार्गदर्शक एवं वातावरण के निर्माता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। वस्तुतः इसमें शिक्षक एक सुविधा प्रदान करने वाले के रूप में कार्य करता है इसमें बालक सक्रिय होकर सीखता है। बालक प्रधान विधियों को आधुनिक शिक्षण विधियां भी कहा जाता है क्योंकि आधुनिक शिक्षा बालक को शिक्षण अथवा सीखने की प्रक्रिया में प्रमुख स्थान प्रदान करने का समर्थन करती है इसके अन्तर्गत समस्या समाधान विधि, योजना विधि, प्रयोगशाला विधि, निरीक्षण अध्ययन विधि, विचार विमर्श विधि आदि को रखा जाता है।

प्र–3 अच्छी शिक्षण विधि की विशेषताओं का उल्लेख करों।

Discuss the characteristic of a good teaching method.

उत्तर एक अच्छी शिक्षण विधि की विशेषताऍ निम्न प्रकार है–

1. **मनोवैज्ञानिकता–** एक अच्छी शिक्षण विधि में मनोवैज्ञानिकता का गुण पाया जाना स्वाभाविक है यह विषय केन्द्रित न होकर बाल केन्द्रित होती है तथा उनकी रूचियों, आवश्यकताओं, योग्यताओं का ध्यान रखा जाता है।
2. **व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक–** एक अच्छी विधि सब प्रकार से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के शारीरिक मानसिक नैतिक एवं संवेगात्मक पक्षों के संतुलित विकास में सहयोगी होनी चाहियें।
3. **अध्यापक और विद्यार्थी के मधुर सम्बन्ध–** एक अच्छी विधि में पढने का स्वस्थ वातावरण निर्मित होता है तथा विद्यार्थी और अध्यापक दोनो एक दूसरे के पर्याप्त तालमेल रखते हुए विषय शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहते है।
4. **क्रियाशीलता–** एक अच्छी शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण विधि ऐसे अवसर प्रदान करती है कि अध्यापक विद्यार्थियों के ऊपर ठीक प्रकार से व्यक्तिगत ध्यान देने मे ंसमर्थ हो सके।
5. **व्यक्तिगत ध्यान देने में सहायक–** एक अच्छी शिक्षण विधि ऐसे अवसर प्रदान करती है कि अध्यापक विद्यार्थियों के ऊपर ठीक प्रकार से व्यक्तिगत ध्यान देने में समर्थ हो सकें।
6. **विषय शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक–** एक अच्छी शिक्षण विधि ऐसे अवसर प्रदान करती है कि अध्यापक विद्यार्थियों के ऊपर ठीक प्रकार से व्यक्तिगत ध्यान देने में समर्थ हो सकें।
7. **कक्षा शिक्षण सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं से मुक्त रहने में सहायक–** कक्षा शिक्षण में अध्यापक और विद्यार्थी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बिना किसी तनाव और समस्या का शिकार हुए अपने लक्ष्य की ओर बढते रहे, इस प्रकार का वातावरण बनाए रखना एक अच्छी शिक्षण विधि का उत्तरदायित्व है।
8. **व्यावहारिकता एवं प्रयोगशाला–** एक अच्छी विधि शिक्षण के लिये प्रयोग में लाए जाने की दृष्टि से पूर्ण व्यवहारिक एवं सक्षम होती है इस दृष्टि से एक अच्छी विधि को निम्न विशेषताओं से मुक्त होना चाहिए।

1. इस दृष्टि से एक अच्छी विधि को निम्न विशेषताओं से युक्त होना चाहिये।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries

2. इस विधि पर आधारित पाठ्यवस्तुए भली भांति उपलब्ध होनी चाहिए।
3. इस विधि में प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी नही खटकनी चाहिए।
4. वर्तमान कक्षा परिस्थितियों जैसे कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या अधिक होना, पुस्तकालय तथा प्रयोगशाला आदि की व्यवस्था न होना, शिक्षण सामग्री तथा उपकरणों का उचित मात्रा में उपलब्ध न होना आदि जैसी प्रतिकूल शिक्षण परिस्थितियों में भी यथा संभव अच्छे परिणाम बनाए रखने में यह समर्थ होनी चाहिए।
5. समय, शक्ति और धन के उपयोग की दृष्टि में यह अधिक खर्चीली नही होनी चाहिए।

प्र–4 व्याख्यान विधि से आप क्या समझते है? सामाजिक अध्ययन शिक्षण में लाभ और हानियां बताइयें।
What do you understand by lecture method? Write down the advantages and disadvantages of it is Social Study Teaching.

उत्तर व्याख्यान विधि के अर्थ को समझनें के लिये निम्न परिभाषा इस प्रकार है–

1. **थॉमस एम रिस्क**– ''व्याख्यान तथ्यों, सिद्धान्तों या अन्य सम्बन्धों का प्रतिपादन है जिनको शिक्षक अपने सुनने वालों को समझाना चाहता है।''
2. **जेम्स एम.बी.**– ''व्याख्यान शिक्षण शास्त्रीय विधि है जिसमें शिक्षक औपचारिक रूप से नियोजित रूप में किसी प्रकरण या समस्या पर भाषण देता है।''

व्याख्यान विधि की विशेषताएं–

1. इससे बालकों को ध्यान केन्द्रित करने की आदत पडती है।
2. इससे समय की बचत होती है कम समय में अधिक विषय वस्तु का बोध करवाया जा सकता है।
3. पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल दिया जाता है।
4. शिक्षक के गुणों एवं योग्यताओं का विशेष प्रभाव पड़ता है व्याख्या की सजीवता से बालकों को सीखने के लिये प्रेरणा मिलती है।
5. पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य संदर्भ जानकारी दी जा सकती है।
6. बालकों को नवीनतम तथ्यों की जानकारी दी जा सकती है।

व्याख्यान पद्धति के लाभ–

1. प्रस्तुत पाठ्यवस्तु का उच्च गुणात्मक स्तर।
2. एक ही विषय पर विभिन्न रूप से चिन्तन करने, भिन्न भिन्न पहलुओं से विचार करने की अन्तदृष्टि का विकास।
3. छात्र समस्याओं का तुरन्त समाधान सम्भव।
4. शिक्षक अपने प्रत्यक्ष प्रभाव से छात्रों की ग्राह्यता के स्तर में वृद्धि कर सकता है।
5. अच्छे व्याख्यान से प्रत्यक्षतः छात्र अन्तः क्रियाओं की, एकाग्रता की, एकाग्रता के नोट्स लेने ओर प्रश्नोत्तर आदि कुशलताओं का विकास होता है।
6. पाठ्यवस्तु सगंठन के मनौवेज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित।
7. विद्यार्थी की सुनकर समझने की आदतों की विकास।
8. कम समय में अधिक विषयवस्तु की प्रस्तुति सम्भव।
9. उच्च कक्षाओं के शिक्षण की सर्वाधिक सुगम विधि।
10. कम खर्चीली प्रणाली, कम साधनों से शिक्षण सम्भव।
11. ज्ञानात्मक पहलुओं के प्रशिक्षण हेतु श्रेष्ठ विद्या।

व्याख्यान पद्धति की हानियां–

1. लम्बे समय तक, कई कालांशों तक व्याख्यान करना शिक्षक की कार्यक्षमता एवं गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव डालता है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

2. एक स्तर पर पहुंचते पहुंचते व्याख्यान नीरस लगने लगता है कक्षा का वातावरण भी निष्क्रिय होने का अंदेशा रहता है।
3. व्याख्यान का केन्द्र बिन्दु शिक्षक है न कि छात्र, जिसमें शिक्षक ज्ञान उडेल देता है।
4. विषय के सभी पक्षों के शिक्षण हेतु यह विद्या अनुपयुक्त है।
5. यह एक स्मरण सम्प्रेषण विधि है जिसमें शिक्षण अनुदेशन के द्विपक्षीय एवं त्रि–पक्षीय सिद्धान्तों की पूर्ति नहीं होती।
6. माध्यमिक और निम्न माध्यमिक स्तर की कक्षाओं के अनुपयुक्त विद्या है।
7. सभी शिक्षक अच्छे व्याख्यान प्रस्तुतकर्ता नही हो सकते।
8. कमजोर छात्रों के लिये उपयुक्त नहीं है।
9. प्रभावी व्याख्यान हेतु उपयुक्त प्रदर्शन सामग्री और सन्दर्भ पुस्तकें सामान्य सभी विद्यालयों में उपलब्ध नही होती।
10. यह 'सुनने पर आधारित विद्या है जिसमें छात्र अधिगम सीमित ही रह पाता है।

प्र–5 अभिक्रमित अनुदेशन क्या है? इसके सिद्धान्त, लाभ तथा सीमाएं लिखिए।

What is the meaning of programmed instruction? Discuss its principles, advantages and limitations.

उत्तर अभिक्रमित अनुदेशन की परिभाषा

1. **फ्रेड स्टोफेल**– ''ज्ञान के छोटे छोटे घटकों को तर्कसम्मत क्रम में व्यवस्थित करने के अभिकम तथा इसकी सम्पूर्ण प्रक्रिया को अभिक्रमित अधिगम कहते है।''
2. **आर.सी. मेहता**– ''अभिक्रमित अनुदेश से तात्पर्य उन स्वशिक्षण प्रविधियों, शिक्षण मशीनों या स्वचलित अनुदेशन तकनीकों से है जिनमें किसी प्रकार का अनुशिक्षणात्मक या सुकरात पद्धति का शिक्षण निहित है।''

अभिक्रमित अनुदेशन विधि की विशेषताएं–

1. अभिक्रमित अध्ययन विधि में विषय वस्तु को छोटे छोटे पदों में विभक्त कर उसें क्रमबद्ध तरीकें से व्यवस्थित किया जाता है।
2. इस विधि में विद्यार्थी सक्रिय अनुक्रिया करते है।
3. विद्यार्थी को अनुक्रिया के पश्चात् तुरन्त पृष्ठ पोषण प्रदान किया जाता है।
4. विद्यार्थी को स्वगति से अग्रसित होने की स्वतंत्रता होती है।
5. विद्यार्थी अपना मूल्यांकन स्वंय करता चला जाता है।

अभिक्रमत अनुदेशन की सिद्धान्त

स्किनर ने अभिक्रमित अनुदेशन व्यूह रचना के पांच मौलिक सिद्धान्त दिये है, जिनका प्रतिपादन मनोविज्ञान की प्रयोगशाला के शोध कार्यो के निष्कर्षों के आधार पर किया गया है–

1. छोटे पदों का सिद्धान्त
2. तत्परता अनुक्रिया का सिद्धान्त
3. तत्कालीन पुष्टि का सिद्धान्त
4. स्वंय गति का सिद्धान्त
5. छात्र परीक्षा का सिद्धान्त

अभिक्रमित अनुदेशन के लाभ

1. शिक्षक उपस्थिति की समाप्ति
2. करके सीखने का उद्देश्य

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

3. तार्किक तथा नियोजित ढंग से विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण
4. स्वगति का उद्देश्य
5. स्व–मूल्यांकन का उद्देश्य

अभिक्रमित अनुदेशन की सीमाएं –

1. अभिक्रमित अनुदेशन के द्वारा केवल ज्ञानात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति ही सम्भव है, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष के उद्देश्यों को प्राप्त नही किया जा सकता।
2. इस पद्धति में छात्रों को अनुक्रियाओं के लिये स्वतन्त्रता नही होती है, छात्र नियन्त्रित परिस्थितियों में अधिगम करते है।
3. इसका प्रयोग व्याख्यात्मक प्रकृति की पाठ्यवस्तु के लिये ही किया जा सकता है तथ्यात्मक पाठ्यक्रम के लिय यह उपयोगी नहीं है।
4. अभिक्रमित अनुदेशन का निर्माण अत्यन्त कठिन है, इस पद्धति का प्रयोग केवल अध्यापक कर सकता है जो इसमें दक्ष एवं अनुभवी है।
5. अभिक्रमित अनुदेशन शिक्षण में काफी समय लगता है।
6. प्रतिभाशाली छात्रों की दृष्टि से यह विधि अधिक उपयोगी नहीं है।
7. अभिक्रमित अनुदेशन का प्रयोग छोटी कक्षाओं के लिये अधिक उपयुक्त नहीं है, केवल बडी कक्षाओं के लिये ही यह उपयोगी है।

प्र–6 प्रयोजना विधि का अर्थ क्या है? इसके विभिन्नि सोपानों का वर्णन करते हुए इसके गुण दोषों पर प्रकाश डालिए।

What is the meaning of project method? Discuss the various steps involved in the use of this method. Throw light on its merits and demerits.

उत्तरः इस विधि का अर्थ निम्नलिखित समाजशास्त्रियों द्वारा स्पष्ट किया गया है–

1. **डॉ. डब्ल्यू.एच. किलपैट्रिक–** ''योजना एक ऐसी सोद्देश्य क्रिया है जो सामाजिक वातावरण में पूर्ण दिलचस्पी से सम्पन्न की जाती है।''
2. **जे.ए. स्टीवेन्सन–** ''योजना एक ऐसा समस्यात्मक कार्य है जो प्राकृतिक अवस्थाओं में पूरा किया जाता है।''

इन परिभाषाओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि योजना विधि बालकों द्वारा वास्तविक कार्य या क्रिया पर अधिक बल देती है उन पर बलपूर्वक अध्यापक द्वारा भी कुछ नही लाया जाता। इस विधि में प्रयोग करते हुए सीखनें पर बल दिया जाता है।

एक अच्छी प्रयोजना विधि की विशेंषताएं–

1. आर्थिक रूप से दुर्बल भारत देश में यदि हम योजना पद्धति अपनायें तो सदैव ध्यान रखना चाहिए कि योजना मितव्ययी हो। अच्छी योजना मितव्ययी होनी चाहिए।
2. अच्छी योजना में छात्र सक्रिय रहते है।
3. योजना के अन्तर्गत चुनी गयी समस्या ऐसी हो, जिस पर सफलता से प्रयोग किये जा सके। समस्या सैद्धान्तिक नही होनी चाहिए।
4. अच्छी योजना छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होती है।
5. योजना की परिभाषा में जैसा कहा गया है योजना में कुछ उपयोगिता होनी चाहिए। यदि योजना उपयोगी हो तो अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कर पायेगी।
6. योजना नये नये अनुभव प्रदान करने वाली हो तथा पूर्व अनुभवों पर आधारित हो।

प्रोजेक्ट विधि के विभिन्न चरण–योजना विधि को काम में लाने हेतु निम्न छः सोपानों से गुजरना पडता है–

1. परिस्थिति प्रदान करना।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries

2. योजना का चुनाव।
3. योजना में नियोजन।
4. योजना का क्रियान्वयन।
5. योजना का मूल्यांकन करना।
6. योजना का लेखा जोखा रखना।

योजना विधि के आधारभूत सिद्धान्तः–

1. उद्देश्यपूर्णता का सिद्धान्त
2. क्रियाशीलता का सिद्धान्त
3. अनुभव का सिद्धान्त
4. वास्तविकता का सिद्धान्त
5. स्वतन्त्रता का सिद्धान्त
6. उपयोगिता का सिद्धान्त

प्रायोजना पद्धति के गुण–

1. प्रायोजना विधि एक मनोवैज्ञानिक विधि है।
2. यह जनतांत्रिक जीवनयापन का प्रशिक्षण देती है।
3. प्रयोजना विधि सामाजिक गुणों के विकास में सहायक है।
4. यह विधि विद्यार्थियों में श्रम का महत्व स्थापित करती है।
5. योजना विधि बहुत ही स्वाभाविक ढंग से सामाजिक अध्ययन कर जीवन एवं कार्यानुभव सम्बन्धी क्रियाओं के साथ समवाय करने का अवसर प्रदान करती है।
6. योजना विधि करके सीखने के सिद्धान्त पर बल देती है व रटने की प्रकृति को निरूत्साहित करती है।
7. प्रायोजना विधि सामाजिक समायोजन हेतु प्रशिक्षण प्रदान करती है।
8. क्रियात्मक एवं व्यवहारात्मक ढंग से ज्ञान प्रदान करती है।

प्रायोजना विधि की सीमाएं

1. प्रायोजना विधि सम्पूर्ण पाठ्यक्रम हेतु उपयुक्त नहीं है।
2. इस विधि का अन्य दोष है कि यह क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित ज्ञान प्राप्ति में सहायक नही है।
3. यह विधि अत्यन्त खर्चीली है।
4. इस विधि में विद्यालय कार्य अव्यस्थित हो जाता है।
5. इस विधि में शिक्षकों में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पडता है।
6. पाठ्यक्रम समय पर समाप्त होना अत्यन्त कठिन है।
7. विद्यालय में विद्यमान परिस्थितियों के लिये अनुपयुक्त है।

प्र–7 **सामाजिक अध्ययन शिक्षण में समस्या समाधान विधि को परिभाषित कीजिए तथा इसके गुणों व सीमाओं का वर्णन कीजिए।**

Define problem solving method in teaching of social studies. Describe its merits and limitations.

उत्तर समस्या समाधान विधि शिक्षण की नवीन पद्धति है इसके अन्तर्गत मानसिक निष्कर्षो पर अधिक बल दिया जाता है यह एक ऐसी क्रिया विधि है जिसमें छात्रों के सम्मुख कोई भी चुनौतीपूर्ण समस्या रखकर उसके समाधान का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

परिभाषाएं

1. **राबर्ट गेने :–** ''दो या दो से अधिक सीखे गये प्रत्यय या प्रन्नियमों को एक उच्च स्तरीय प्रन्नियम के रूप में विकसित किया जाता है, उसे समस्या समाधान अधिगम कहते है।''
2. **वेस्ले व रोवेस्की** – ''समस्या एक ऐसी चुनौती है जिसका सामना करने के लिये अध्ययन व खोज की आवश्यकता पडती है''

समस्या समाधान पद्धति के सोपान–

1. सर्वप्रथम समस्या का निर्माण किया जाता है।
2. तत्पश्चात् आवश्यक तथ्यों का संकलन किया जाता है।
3. समस्या के समाधान के लिये तथ्यों का चयन किया जाता है।
4. अन्त में मूल्यांकन किया जाता है।

समस्या समाधान पद्धति के गुण–

1. इस विधि से शिक्षण कें छात्र सक्रिय रहते है।
2. छात्रों में रूचि व प्रेरणा बनी रहती है।
3. छात्रों में चिन्तन प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिलता रहता है।
4. यह विधि विश्लेषण व संश्लेषण का अभ्यास करवाती है।
5. वैयक्तिक भिन्नता पर आधारित रहती है।
6. समस्या समाधान विधि भावी जीवन के लिये तैयार करती हैं
7. यह एक मानसिक विधि है।

समस्या समाधान विधि की सीमाएॅं–

1. इस विधि में श्रम व समय अधिक लगता है।
2. इसमें कोई निश्चित व व्यवस्थित कार्यक्रम नही होता है।
3. यह उच्च स्तर के लिये बहुत उपयोगी विधि है।
4. इसकी क्रियान्विति प्रभावशाली है, इसके लिये वाद विवाद का उपयोग होना आवश्यक है।
5. पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त यदि अध्ययन सामग्री न हो तो, इसका उपयोग होना कठिन होता है।
6. इसकी क्रियान्विति में शिक्षक कुशल होना चाहिए।

प्र–8 सामाजिक अध्ययन शिक्षण में कहानी कथन विधि से आप क्या समझते है? सामाजिक अध्ययन शिक्षण में इसके क्या लाभ व हानिंया है लिखिए?

What do you mean by story telling method in social studies teaching? Write down the advantages and disadvantages of it in social studies teaching.

उत्तर कहानी कथन विधि छोटी कक्षाओं के लिये उपयुक्त हैं छोटी कक्षाओं में सामाजिक तथ्यों से अवगत कराने के लिये छोटी छोटी कहानियों का सहारा लेना चाहिए। बालकों का स्वभाव कौतूहलपूर्ण होता है। कहानी के द्वारा बालक की न केवल कल्पना शक्ति का विकास होता है। वरन् गम्भीर से गम्भीर विचारों व समस्याओं को रोचक तरीके से सहजता से समझ लेते है कहानी से विषय वस्तु बोधगम्य हो जाती है उच्च कक्षाओं में भी इसका प्रयोग संभव हो सकता है। विषय वस्तु का अच्छा ज्ञान हो तो कहानी के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

दीक्षित एवं बधेला ने कहानी कथन विधि के बारें में लिखा है कि बिना उपकरणों का सहारा लिये सबसे अधिक व्यवहृत विधि जो आज भी स्थलों मे प्रयोग में लाई जाती है वह कहानी कथन विधि है यदि इस विधि का सही ढंग से प्रयोग किया जाए तो यह विधि अत्यधिक लाभ प्रद है। सामाजिक अध्ययन के विवरणात्मक पक्ष को कहानी कथन विधि के माध्यम से सही रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

कहानी एक कला है, कुछ व्यक्तियों में कहानी कहने की कला जन्मजात होती है तथा खुद कहानी कहना सीख लेते है।

कहानी कथन विधि के लाभ–

1. यह पद्धति छोटे बच्चों के लिये अत्यन्त उपयोगी है क्योंकि उनमें कहानियों के प्रति स्वाभाविक रूचि होती हैं ।
2. यह पद्धति ऐतिहासिक तथ्यों को रोचक ढंग से प्रस्तुत करती है क्योंकि कहानी में तथ्यों के मध्य तारतम्यता बनी रहती है।
3. कहानी कथन पद्धति बालकों में कल्पना शक्ति का विकास करने का सशक्त साधन हैं
4. कहानी कथन पद्धति अनुशासनहीनता की समस्या तथा छात्रों में उठती जिज्ञासा को शान्त करती है।
5. कहानियों के आधार पर बालक नए विचार बनाते है जिससे उनमें सृजनात्मकता की प्रवृति का विकास होता है।

कहानी कथन विधि के दोष–

1. यह विधि मौखिक विधि है फलतः इसकी सफलता कहानीकार पर निर्भर करती हैं ।
2. छात्रों की आयु एवं स्तर के अनुरूप कहानी नही होगी तो छात्र उसमें रूचि नही लेंगे फलतः अवधन केन्द्रित नही होगा।
3. प्रत्येक प्रसंग को कहानी विधि से पढाया जाना सम्भव नहीं है।
4. कहानी कथन विधि में शिक्षक कहानीकार होता है और छात्र केवल श्रोता। फलतः छात्रों की अन्य ज्ञानेन्द्रिया निष्क्रिय रहती हैं
5. यह विधि छोटे बच्चों के लिये अधिक उपयोगी है, माध्यमिक स्तर के छात्र इस विधि में कम रूचि लेते है।

प्र–9 समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि का क्या अर्थ है। इसके गुण व अवगुण भी बताईयें।
What do you meay by social recitation method? Give merits and demerits of it.

उत्तर यह सामाजिक अध्ययन शिक्षण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण विधि है इस विधि द्वारा बालक के समाजीकरण की नींव रखी जाती है शिक्षा का एक आधारभूत उद्देश्य है – बालक में सामाजिक क्षमताओं का विकास करना। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु यह एक सार्थक विधि है।

परिभाषाएं–

1. **बेस्ले**– ''सामाजिक अभिव्यक्ति एक आदर्श है, जो शिक्षण में ऐसे प्रयोग की कल्पना करता है जिससें कक्षा के समस्त छात्र सहयोग एवं सद्भावना से ज्ञान अर्जित कर सके ''
2. **प्रो. बाइनिंग एवं बाइनिंग**– ''किसी भी कक्षा कक्ष में जहा समूह चेतना दृष्टिगत होती है तथा प्रत्येक समूह के लिये जिम्मेदारी का भाव रखता है, समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि है''।

समाजीकृति अभिव्यक्ति विधि के गुण–

1. छात्र योजना बनाना सीख जाते है।
2. छात्रों के उद्देश्यों व रूचियों की समान रूप से खोज हो जाती है।
3. छात्रों की प्रेरणा शक्ति को प्रोत्साहन मिलता है।
4. छात्रों में निर्णय लेने की शक्ति की विकास होता है।
5. छात्रों में वाद–विवाद में भाग लेने की शक्ति का विकास होता है।
6. छात्र स्वंय विचार विमर्श करना सीखते जाते है।
7. छात्रों में आत्म विश्वास उत्पन्न होता है।

8. छात्र के साथ शिक्षक भी अपने छात्रों से विषय की जानकारी प्राप्त कर सकते है वे उनके गुण दोषों से अवगत होते है।
9. छात्रों में परस्पर सहयोग की भावना का विकास होता है।
10. समाजीकृत अभिव्यक्ति औपचारिक व परम्परागत कक्षा शिक्षण की सीमाओं से परे है।
11. छात्र अपने विचारों व निर्णयों को संगठित व लिखित रूप में संकलित करना सीखते हे।
12. यह विधि पूरी तरह से मनौवेज्ञानिक विधि है।
13. इस विधि के द्वारा शिक्षक व छात्रों मे ंपरस्पर आदर की भावना उत्पन्न होती हैं दोनों में अच्छें संबंधों की स्थापना होती है।

समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि की दोष–

1. **बाइनिंग व बाइंनिंग** के अनुसार यह विषय वस्तु पर समुचित अधिकार करने के लिये उपयुक्त नहीं है।
2. इसका प्रयोग करके छात्र व्यर्थ के वाद विवाद में अपना समय नष्ट करते है।
3. इस विधि का सबसे बडा दोष यह है कि छात्र ही इसके मुख्य पात्र होते है समस्त कार्य वे ही संचालित करते है अन्य छात्र इसके लाभ से वंचित रह जाते है।

प्र–10 समस्या समाधान एवं योजना विधि में अन्तर क्या है?

What is the difference betwen problem solving and project method?

उत्तर

क्र.सं.	योजना विधि	समस्या समाधान विधि
1	इसमें समस्या केन्द्रित शिक्षण की व्यवस्था है।	इसमें भी समस्या केन्द्रित शिक्षण की व्यवस्था है परन्तु सीखे हुए ज्ञान के आधार पर उस क्षेत्र की मौलिक, समस्याओं का अध्ययन करके अपने मौलिक विचार दिये जाते है।
2	योजना विधि में शारीरिक तथा मानसिक क्रियाओं पर बल दिया जाता है ।	समस्या समाधान विधि का क्षेत्र केवल मानसिक स्तर पर समस्याओं के चिंतन तक ही सीमित रहता है।
3	इस विधि के पाठ्यक्रम के ज्ञान की जानकारी तथा उसका बोध कराया जाता है।	इस विधि में मौलिक तथा सृजनात्मक चिन्तन को प्रधानता दी जाती है।
4.	इस विधि का लक्ष्य ज्ञान तथा इन्द्रियों को प्रशिक्षण देना है।	इसमें मौलिक आलोचनात्मक और सृजनात्मक चिन्तन को अधिक महत्व दिया जाता है।
5	यह विधि प्रयोजनवादी विचार धाराओं पर आधारित है।	यह विधि मनोविज्ञान की आधुनिक विचारधाराओं पर आधारित है।
6	योजना विधि का परिणाम 'उत्पादन' के रूप में होता है।	इसका परिणाम समस्या के लिये समस्या के निष्कर्ष के रूप में होता है जिसे शिक्षार्थी के मौलिक विचार तथा उनका योगदान माना जाता है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

7	योजना विधि करके सीखने के सिद्धान्त पर कार्य करती है।	समस्या समाधान विधि में छात्रों के चिन्तन व निर्णय की शक्तियों का विकास करने का लक्ष्य होता है।
8	प्रयोजना विधि के प्रवर्तक जॉन डी.वी. तथा किल्पैट्रिक थे।	समस्या समाधान विधि वाद विवाद या विचार विमर्श की परम्परागत विधि का ही नवीन रूप है।
9	इस विधि में न्यूनतम साधन सामग्री अपेक्षित होती है।	इस विधि में ऐसी कोई आवश्यकता नही होती।

GURUKPO
Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Unit–4
Instructional Support System
अनुदेशनात्मक सहायक प्रणाली

प्रश्न–1 सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला की आवश्यकता बताते हुए प्रयोगशाला कक्ष की रूपरेखा बनाइए।
Enumerate the plan of a Social Studies Laboratory with its need.

उत्तर **प्रयोगशाला की आवश्यकता**– प्रायोगिक विज्ञानों में प्रयोगशाला एक आवश्यक अंग है। वर्तमानकाल में सामाजिक अध्ययन शिक्षण हेतु भी प्रयोगशाला की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। अनेक स्थानों पर इस प्रकार के उपक्रम की शुरूआत भी हो चुकी है।

1. प्रयोगशाला की आवश्यकता इसलिए है कि शिक्षण के अनेकानेक साधन यथा–चित्र, मानचित्र, ग्लोब, चार्ट स्लाइड्स, आदि साधनों को एक स्थान से कक्षा में ले जाने व लाने में उपकरणों के नष्ट होने का खतरा बना रहता है।
2. प्रयोगशाला में साधनों का प्रदर्शन किया जाता है, जिनके आधार पर छात्र कार्य करते है। इस कारण भी प्रयोगशाला कक्ष आवश्यक है।
3. छात्र प्रतिवर्ष मानचित्रादि उत्पादन कार्य करते है। जिनकी सम्भाल आवश्यक है।
4. मानचित्र बनाने के लिए ट्रसिंग मेज, टेप, चेन लाइट, कम्पास आदि उपकरणों की आवश्यकता है। इन सभी को कक्षा में लाना सम्भव नहीं है। अतः पृथक प्रयोगशाला जरूरी है।
5. प्रयोगशाला कक्ष रूचि, स्वाध्याय, क्षमता तथा कौशलों को बढ़ाता है, अतः छात्र इससे अधिक सीखते है।
6. प्रायोगिक कार्य हेतु स्थान समय की आवश्यकता के कारण कक्षा में उक्त कार्य सम्भव नहीं है।
7. कक्षाओं में सामग्री के हस्तान्तरण का कार्य कठिन है। अतः त्रुटि की सम्भावना होती है।

प्रयोगशाला कक्ष की रूपरेखा– सामाजिक अध्ययन की प्रयोगशाला में अनेक कक्ष होते है, यथा–

1. **विस्तृत हॉल**– इस कक्ष में 40–50 छात्रों के बैठने की व्यवस्था होती है। यह कक्ष प्रकाशयुक्त व हवादार होना चाहिए। हॉल में आलमारियॉ होनी चाहिए, जिसमें विभिन्न प्रकार की सामग्री होती है। जैसे चित्र, मानचित्र, ग्लोब, चार्ट आदि। कमरे में अध्यापक की मेज के पास (बगल) में ओवर हेड प्रोजेक्टर, स्लाईड प्रोजेक्टर होना चाहिए।
2. **अन्धेरा कमरा**– इस कमरे में फिल्म प्रोजेक्टर होता है। आवश्यकता पड़ने पर एक छोटे गवाक्ष से मुख्य हॉल में स्थित परदे पर फिल्म प्रदर्शन किया जा सके।
3. **भण्डार घर**– इसमें छात्रों को बनाए हुए मानचित्र, चित्र तथा चार्टों का संग्रहण होता है।
4. **कार्यशाला**– यह वह स्थान होता है, जहॉ छात्र बैठकर कार्य करते हे। मॉडल आदि बनाते है। प्रायः मिट्टी आदि के मॉडल इसी स्थान पर बनाये जाते है।
5. **पुस्तकालय**– पुस्तकालय पुस्तकें रखने का स्थान होता है। जहॉ सन्दर्भ ग्रन्थ तथा पत्रिकाऍ रखी जाती है। जिनसे छात्र नोट्स बनाते है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries.

प्रश्न–2 सामाजिक अध्ययन शिक्षण में सामुदायिक स्त्रोतों के लाभ बताइए।
Write down the merits of Community Sources in Social Study Teaching.

उत्तर सामाजिक अध्ययन शिक्षण में सामुदायिक स्त्रोतों के लाभ निम्नलिखित है–

1. **नवीन अनुभवों की उपलब्धि–** समुदाय साधनों के द्वारा बच्चों को नवीन अनुभव प्राप्त होते है। जैसे– रेल्वे स्टेशन, हवाई अड्डा मन्दिर, मस्जिद, चिड़ियाघर, सरकारी भवन और ऐतिहासिक भवनों को देखकर छात्रों को नये अनुभव प्राप्त होते है। जिसके आधार पर उनके ज्ञान में वृद्धि होती है।
2. **कार्यों में रूचि जागृत करना–** समुदाय का सम्पूर्ण ज्ञान देने के लिए जब अध्यापक बच्चों को सामुदायिक स्थानों को दिखाने के लिए भ्रमण पर ले जाते है तो बच्चें भौगोलिक ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि स्थानों को देखते है तथा लोगों को काम करते देखते है, तो उनमें भी विभिन्न कार्यो के प्रति रूचि उत्पन्न होती है।
3. **व्यावसायिक चयन का अवसर–** सामुदायिक स्थानों पर लोगों को विभिन्न कार्यों में व्यस्त देखकर छात्रों को विभिन्न व्यवसायें का ज्ञान प्राप्त होता है बड़े होकर अपनी रूचि के अनुसार व्यवसाय चुनने का उन्हें अवसर मिलता है।
4. **नवीन सूचनाओं की प्राप्ति–** समय–समय पर स्कूलों में विशिष्ट व्यक्तियों के भाषण, राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय समस्याओं पर वार्ता, नाट्य, प्रदर्शन आदि का आयोजन करके बच्चों को नवीन सूचनाओं का ज्ञान दिया जाता है।
5. **समुदाय का व्यावहारिक ज्ञान–** सामुदायिक साधन बच्चों को पुस्तकीय ज्ञान ही प्रदान नहीं करते,बल्कि उन्हें जीवन से सम्बन्धित व्यावहारिक ज्ञान भी दिया जाता है।
6. **खाली समय का सदुपयोग–** सामुदायिक साधन बच्चों को स्कूल छोड़ने के बाद भी खाली समय का सदुपयोग करना सिखाते है। जैसे– कागज के खिलौने बनाना, रंगाई करना, पेंटिंग बनाना आदि
7. **आदर्शों का निर्माण–** सामुदायिक साधनों के द्वारा छात्रों में जीवन के प्रति आदर्शों का निर्माण किया जाता है, जैसे– अनुशासन में रहना, सत्य बोलना, सार्वजनिक सम्पत्ति को नष्ट न करना आदि।

इस प्रकार सामाजिक अध्ययन शिक्षण में सामुदायिक स्त्रोतों के द्वारा बालक को नवीन अनुभव प्राप्त होते है। उनमें काम करने की रूचि जागृत होती है और एक अच्छा नागरिक बनने के गुणों का विकास होता है

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries.

प्रश्न–3 सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला में समुचित उपयोग के लिए सुझाव बताइये।
Give suggestions for the appropriate use of laboratories social studies teaching.

उत्तर सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला में अनुचित उपयोग के लिए सुझाव निम्नलिखित है–

1. सामाजिक अध्ययन का शिक्षण सदैव सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला में ही होना चाहिए।
2. छात्रों को भौगोलिक, आर्थिक, ऐतिहासिक मानचित्र, चित्र, रेखाचित्र मॉडल आदि सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला में बनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
3. सामाजिक अध्ययन प्रयोगशाला में यदा–कदा ऐतिहासिक घटनाओं में ड्रामें या अभिनय भी कराये जाने चाहिये।
4. भौगोलिक आर्थिक ऐतिहासिक सामग्री एवं उपकरणों की समुचित देखरेख करनी चाहिए

5. छात्रों को विभिन्न मौसम में मौसम की जानकारी कराने के लिए मौसम यन्त्रों का प्रयोग करना सिखाया जाना चाहिए।
6. प्रयोगशाला में शिक्षण के समय भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सॉस्कृतिक समस्याओं के स्पष्टीकरण हेतु प्रदर्शन अवश्य किए जाने चाहिए।
7. उपयोग के उपरान्त शिक्षण उपकरणों को यथा स्थान रखना चाहिए।

प्रश्न–4 उपग्रह अनुदेशनात्मक दूरदर्शन प्रयोग की उपयोगिता बताइए।
Write down the uses of Satellite Instructional Channel.

उत्तर भारत में सम्प्रेषण माध्यम (Media) एक नया सम्प्रत्यय है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावशाली सम्प्रेषण आवश्यक है। दूरदर्शन का विस्तार सीमित है, लेकिन उपग्रह की सहायता से उसका विस्तार बढ़ा दिया गया है।

पूर्व में उपग्रह द्वारा शिक्षा देने का कार्य केवल राष्ट्रीय चैनल (N.C.E.R.T.) के माध्यम से किया जाता था। परन्तु अब 21वीं शताब्दी में निजी चैनलों की बाढ़ सी आ गई है। इन चैनलों के द्वारा विद्यार्थियों को सामाजिक अध्ययन में विभिन्न पक्षों से अवगत करवाया जा रहा है।

उपग्रह दूरदर्शन योजना के निम्नलिखित उपयोग सम्भव है।

1. इसका प्रयोग कक्षा में तथा कक्षा से बाहर किया जा सकता है।
2. इसमें विभिन्न विषयों के विशिष्ट ज्ञान का प्रसारण किया जा सकता है।
3. इसके माध्यम से 'दूरस्था शिक्षा' प्रदान की जा रही है।
4. प्रौढ़ शिक्षा तथा अनौपचारिक शिक्षा में प्रभावशाली ढ़ंग से प्रयोग किया जा रहा है।
5. दिन प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में उपयोग किया जा रहा है।
6. ग्रामीण जनसंख्या को शैक्षिक ज्ञान देने हेतु प्रयुक्त किया जा सकता है।
7. इस योजना का उपयोग आर्थिक विकास के अतिरिक्त सामाजिक मूल्यों के विकास के लिए भी किया जा सकता है।

भारत वर्ष में उपगृह दूरदर्शन योजना पर जो प्रयोग किये गये है। उनके परिणामों से यह ज्ञात होता है कि अनुदेशनात्मक प्रक्रिया तथा सम्प्रेषण माध्यम को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। अतः शैक्षिक प्रणाली तथा कक्षा वातावरण के लिए इस योजना का विशेष महत्व है।

प्रश्न–5 बहुमाध्यम उपागम से क्या तात्पर्य है? सामाजिक अध्ययन शिक्षण में बहुमाध्यम प्रयोग का वर्णन कीजिए।
What do you mean by multimedia approach? Explain the uses of multimedia in social studies teaching.

उत्तर **बहुमाध्यम का अर्थ–** अनुदेशन माध्यम एक प्रविधि है, जिसकी सहायता से अनुदेशन सामग्री को सीखने के लिए छात्रों तक पहुँचाया जाता है। अनुदेशन माध्यम एक साधन है, जिससे अनुदेशन का प्रसार किया जाता है। अनुदेशन माध्यम से छात्रों की दूरी की समस्या का समाधान होता है यह दो प्रकार होते है–(1) प्रक्षेपित और (2) अप्रेक्षित। अप्रक्षेपित शिक्षण सामग्री को विविध रूपों में एक पाठ्य वस्तु के लिए भी प्रस्तुत किया जा सकता है। जिसे हम बहुमाध्यम उपागम कहा जाता है।

इनका प्रयोग विद्यार्थी शिक्षक की अनुपस्थिति में भी कर सकते है, इनका प्रयोग जटिल व्यक्तिगत अधिगम अनुभवों के लिए किया जाता है। शिक्षण में बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग को ''अनुदेशनात्मक विकास'' भी कहते है। इसके प्रयोग से शिक्षण अधिगम की समस्याओं का समाधान आसानी से किया जा सकता हे।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

बहुमाध्यम प्रयोग की प्रक्रिया– प्रभावशाली शिक्षण अधिगम के लिए बहुमाध्यम पद्धति के प्रयोग हेतु निम्न कार्य करने होते है–

1. अधिगम उद्देश्यों का चयन एवं उन्हें परिभाषित करना।
2. पाठ्यवस्तु विश्लेषण तथा क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थापित करना।
3. शिक्षण विधि एवं व्यूहरचना का चयन करना।
4. मूल्यांकन प्रविधियों का चयन करना।
5. छात्रों के निदान के आधार पर सुधारात्मक अनुदेशन की व्यवस्था करना तथा पृष्ठपोषण व पुनर्बलन देना।

भारत वर्ष में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण परिषद में बहुमाध्यम उपागम का व्यापक प्रयोग किया जा रहा है। इसमें दूरदर्शन, रेड़ियों एवं कम्प्यूटर द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को शिक्षित एवं प्रशिक्षित किया जा रहा है।

प्रश्न–5 समाज शास्त्र शिक्षण में सामुदायिक स्त्रोतों का उपयोग करने की विधियॉ बताइये।
Describe the method for use of community resources in Social teaching?

उत्तर– अपने वातावरण का ज्ञान बालक स्थानीय समुदाय में रहकर करता हैं। जहॉ वह जीवनयापन का प्रथम पाठ पढ़ता हैं। समुदाय का यह चित्र बालक के मस्तिष्क में समय के अनुसार विकसित होता चला जाता हैं। समाज शास्त्र का ज्ञान इसी विकसित क्षेत्र का अध्ययन करता हें। अपने समुदाय का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् ही बालक उस ज्ञान के आधर पर अन्य समुदाय में व्यवस्थित होना सीखता हैं। जितना अधिक और सुखद बालक को अपने समुदाय का ज्ञान होगा, उतना ही अच्छा ज्ञान उसे अन्य समुदाय का होगा।

सामुदायिक साधन से तात्पर्य सामुदायिक जीवन से सम्बन्धित सभी तत्वों से हैं वास्तव में ये सभी तत्व पाठ्यक्रम के अन्य पक्षों से भी सम्बन्धित हो सकते हैं, क्योंकि समाज शास्त्र को प्रभावित करने वाले वे तत्व हैं, जो मानव सम्बन्धों की व्याख्या करते हैं। ये तत्व भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, सॉस्कृतिक आदि होते हैं।

सामुदायिक स्त्रोतों का उपयोग करने की विधियॉ (Methods for use of community resources)– सामुदायिक स्त्रोतों का उपयोग करने की निम्नलिखित दो विधियॉ प्रचलित हैं–

1. **विद्यालय को समुदाय के निकट ले जाना (Taking the school nearer to the community)**–
2. **समुदाय को विद्यालय के निकट ले जाना (Taking the community nearer to the school)**–

1. **विद्यालय को समुदाय के निकट ले जाना (Taking the school nearer to the community)**–
   अध्यापक विद्यालय को सामुदायिक जीवन का केन्द्र बनाने के लिए तथा विद्यालय को समुदाय के निकट ले जाने के लिए निम्नलिखित प्रयास करता हैं–
   i. **समाज सेवा कार्यक्रम (Social Service Programme)**– विद्यालय में अनेक प्रकार की समाज–सेवा क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता हें।
   ii. **साक्षात्कार (Interviews)**– प्रत्यक्ष ज्ञान की प्राप्ति के लिए साक्षात्कार आधार का कार्य करते है। बच्चे समुदाय के विभिन्न लोगों का साक्षात्कार करके विभिन्न प्रकार की सूचनाऍ प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही समुदाय के बहुत लोग उनको प्रकाशित साहित्य, श्रृव्य–दृश्य सामग्री प्रदान करके महत्वपूर्ण सूचनाऍ प्रदान कर सकते हैं।

iii. **क्षेत्र–पर्यटन (Field Trips)**– क्षेत्रीय पर्यटनों के माध्यम से छात्रों को समुदाय में ले जाया जा सकता हैं। पर्यटन का उद्देश्य मन–बदलाव के लिए कक्षा से बाहर लाना नहीं होना चाहिए, वरन् विषय के स्पष्टीकरण या समस्या का समाधान खोजना होना चाहिए। पर्यटनों के माध्यम से छात्र स्थानीय स्थितियों का प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण करने में समर्थ होते हैं।

iv. **समुदाय सेवा का आयोजन (Arrangement of Community)**– समुदाय सेवा प्रोजेक्ट्स द्वारा विद्यार्थी समुदाय की सेवा करते समय अनेक नवीन अनुभव प्राप्त करते हैं, तो ये और भी स्थायी होते हैं। इससे विद्यार्थियों का सर्वांगिण विकास होता हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना जो कि देश के सभी महाविद्यालयों में अपनाई गई है। सेवा भावना का विकास करने के लिए यह उत्तम रास्ता हैं। पाठशालाओं में भी इसी प्रकार के कार्य प्रारम्भ किये जा सकते हैं। जैसे–विद्यालय फुलवाड़ी की देखभाल। इसी प्रकार विद्यालय के बाहर भी विद्यार्थी कुछ प्रोजेक्ट्स ले सकते हैं। जिससे एक तो विद्यार्थी को स्कूल की चारदीवारी से बाहर समुदाय के सदस्यों से मिलने का अवसर मिल सकेगा और मनोरंजन के अतिरिक्त वे वास्तविक शिक्षा भी ग्रहण करेंगे। विद्यालय समुदाय में कुछ इस प्रकार के प्रोजेक्ट्स भी ले सकते हैं। जैसे– वृक्षारोपण करना, प्रौढ़ शिक्षा, कुओं, परिवार कल्याण का प्रचार।

v. **सामाजिक सर्वेक्षण क्लबों का संगठन**– के.जी. सैयद के अनुसार– "अध्यापक को विद्यालय में सामाजिक सर्वेक्षण क्लब संगठित करने चाहिए, जो अपने आस–पास के सामुदायिक जीवन की कुछ तात्कालिक आवश्यकताओं तथा समस्याओं के बारे मे छानबीन करने का काम करे।"

उदाहरणार्थ– सड़कों की दशा, रोग फैलने के कारण।

उपर्युक्त उपायों के माध्यम से विद्यालय समुदाय के पास और समुदाय विद्यालय के निकट आ सकता हैं।

2. **समुदाय को विद्यालय के निकट ले जाना (Taking the community nearer to the School)**– इस विधि के अन्तर्गत समुदाय के मानवीय एवं प्राकृतिक स्त्रोतों को कक्षा–कक्ष लाकर विषय वस्तु का स्पष्टीकरण अध्यापक द्वारा किया जाता हैं, इसके अग्रलिखित प्रकार हैं–

i. **मेले एवं पर्व**– मेलों में जाकर बालकों को सामाजिक उत्तरदायित्व के कार्यों के संचालन का महत्व बताया जा सकता हैं और समाज सेवा के व्यावहारिक अनुभव देते हुए अनेक लाभों को प्रकट किया जा सकता हैं। इसी प्रकार सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पर्वों पर अनेक आयोजन स्थलों पर ले जाकर बालकों को तत्सम्बन्धी इतिहास संस्कारों, संस्कृति, परम्परा आदि की जानकारी दी जा सकती हैं। ये मेले व उत्सव निम्नलिखित प्रकार के होते हैं–

अ. शैक्षिक समारोह
ब. राष्ट्रीय समारोह
स. धार्मिक उत्सव
द. विद्यालय उत्सव

ii. **अनुरंजनात्मक सामुदायिक प्रवृत्तियॉं**– कुछ अवसरों पर सामाजिक जीवन में इस प्रकार की सामुदायिक विभिन्न प्रवृत्तियों का आयोजन होता हें, जिनमें शिक्षार्थियों को सम्भागी बनाकर उन्हें सामाजिक व्यवहारिक वृत्तियों को अपनाने की सहज प्रेरणा दी जा सकती हैं। समाज के अधिकांश लोग 'प्रदर्शनी' एवं नाट्य देखने के लिए उत्सुक होते हैं। यदि विद्यालयों में प्रदर्शनी एवं नाटकों का आयोजन किया जाए तो बालकों का मनोरंजन होगा, उनकी अभिरूचियॉं विकसित होंगी। साथ ही अभिभावकों को विद्यालय को समझने में सहायता मिलेगी।

iii. **पंचायत, नगरपालिका, डाकघर और प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र**– पंचायत नगरपालिका, डाक–घर प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र आदि में ले जाकर कार्य प्रणाली, व्यवस्था एवं सुविधा आदि सम्बन्धित जानकारी स्पष्ट और प्रभावोत्पादक परिस्थितियों में करायी जा सकती हैं।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries

iv. **विशिष्ट व्यक्तियों की वार्त्ताएँ**– सामुदायिक शिक्षण स्त्रोतों में समाज के विशिष्ट व्यक्तियों की सामाजिक तथ्यों पर आधारित वार्त्ताओं के आयोजन का भी प्रमुख स्थान हैं। विशिष्ट व्यक्तियों को आमन्त्रित कर नागरिक शास्त्र विषय के किसी व्यावहारिक पक्ष पर वार्ताएँ आयोजित कर विद्यार्थियों के अनुभवों को सामुदायिक जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के बारे में समृद्ध किया जा सकता हैं। छात्रों को सामुदायिक उत्तरदायित्व निभाने के लिए तैयार किया जा सकता हैं।

v. **चिड़ियाघर और संग्रहालय**– चिड़ियाघर में ले जाकर विभिन्न औद्योगिक प्रदेशों के पर्यावरण और उसके प्राणियों पर पड़ने वाले प्रभावों का बड़ा रूचिकर परिस्थितियों में ज्ञान कराया जा सकता हैं। संग्रहालय में ले जाकर अपने राज्य की इतिहास सम्बन्धी बातों एवं लोक–जीवन तथा सॉस्कृतिक जीवन के विभिन्न पक्षों के बारे में बताया जा सकता हैं।

vi. **सार्वजनिक पुस्तकालय एवं वाचलनालय**– विद्यालय शिक्षा की दृष्टि से सार्वजनिक पुस्तकालय एवं वाचनालय का सामुदायिक शिक्षण स्त्रोत के रूप में उपयोग किया जाना यथेष्ट हें यथा– सामयिक घटनाओं, एवं पारस्परिक मेल–जोल आदि वृत्तियों का विकास।

vii. **रेडक्रॉस, स्काउट एवं गाइड्स**– स्कूल में रेडक्रॉस स्काउट एवं गाइड्स की व्यवस्था होती हें। यदि ये संगठन समुदाय द्वारा मनाए जाने वाले कार्यक्रम में भाग ले तो समुदाय और विद्यालय के सम्बन्ध मधुर बनेंगें।

viii. **अभिभावक शिक्षक संघ**– विद्यालयों को सामुदायिक जीवन का केन्द्र बनाने हेतु विद्यालय में अभिभावक शिक्षक संघ स्थापित किए जा सकते है। यह समुदाय के साधन के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

अतः स्पष्ट हें कि विद्यालय एवं समुदाय के आपसी सहयोग से ही समुदाय और विद्यालय का अस्तित्व सुरक्षित हैं, इसके लिए अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

प्रश्न–6 **समाज शास्त्र शिक्षण में सहायक सामग्री का अर्थ एवं इसकी आवश्यकता एवं महत्व को स्पष्ट कीजिये।**
Describe the meaning of Teaching Aid and its need importance.

उत्तर– सहायक सामग्री अनुभव प्रदान करती हैं, साथ ही शब्द एवं वस्तु में सम्बन्ध स्थापित करती हैं। यह छात्र के समय में बचत करती हैं सरल एवं विश्वसनीय सूचना प्रदान करती हैं, सौन्दर्यात्मक ज्ञान का विकास एवं अभिवृद्धि करती हैं, मनमोहक मनोरंजन प्रदान करती हैं। जटिल प्रदतों को सरल दृष्टिकोण प्रदान करती हैं, कल्पना को उत्तेजित करती हें। तथा छात्रों की निरीक्षण–शक्ति का विकास करती है।

विनिंग एण्ड विनिंग– ''विभिन्न प्रकार की दृश्य युक्तियॉ अमूर्त को मूर्त बनाने में हैं तथा अध्ययन में रूचि जगाने में प्रयुक्त की जा सकती हैं, जिसके बिना अध्ययन नीरस तथा अवास्तविक होगा।''

सहायक सामग्री की आवश्यकता (Need of Teaching Aids) –

शिक्षण प्रक्रिया में शैक्षिक साधनों की आवश्यकता निम्न कारणों से हैं–

1. इनसे कक्षा समय की बचत होती हैं।
2. इनसे व्यक्तिगत विभिन्नताओं की सन्तुष्टि होती हैं।
3. इसकी सहायता से अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप प्रदान किया जा सकता हैं।
4. छात्रों के सीखने की गति में भी तीव्र रूप से वृद्धि हो जाती हैं।
5. इनकी सहायता से छात्र ज्ञान के सैद्धान्तिक पक्ष से ही नहीं, वरन् व्यावहारिक पक्ष से भी अवगत हो जाते हैं।
6. सहायक ज्ञान के माध्यम से उत्तम शिक्षण प्रदान किया जा सकता हैं।
7. इनकी सहायता से शैक्षिक क्रियाओं को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता हैं।
8. इनकी सहायता से कक्षा में छात्रों के सीखने में एकरूपता आ जाती हैं।
9. इनकी सहायता से छात्र रूचिपूर्वक एवं उत्साहपूर्वक सीखते हैं।

10. इनसे छात्रों की कल्पना–शक्ति का विकास किया जा सकता हैं।
11. छात्र सीखी हुई बातों को देर तक स्मरण रख सकते हैं।

सहायक सामग्री का महत्व–

सहायक सामग्री के महत्व का विवेचन निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता हैं–

1. सहायक सामग्री के प्रयोग के द्वारा जटिल व अरूचिकर विषय को रोचक सरल व स्पष्ट बनाया जा सकता हैं।
2. इनकी सहायता से शिक्षक एक साथ अनेक छात्रों की समस्याओं का समाधान कर सकता हैं।
3. इनकी सहायता से छात्रों के ध्यान को एक बिन्दु पर केन्द्रित किया जा सकता हैं।
4. इनके द्वारा छोटी आयु के बालकों के ज्ञान को उन्नत बनाया जा सकता हैं।
5. इनके माध्यम से छात्रों की शब्दावली में उन्नति होती हैं।
6. ये छात्रों की जिज्ञासा में वृद्धि करती है, जिससे सीखने में प्रोत्साहन मिलता हैं।
7. इनके प्रयोग से छात्रों को विभिन्न प्रकार की क्रियाओं को करने के अवसर प्राप्त होते हैं, इससे वे कठिन बातों को भी सरलतापूर्वक सीख लेते हैं।
8. इसके द्वारा छात्रों में प्रत्यक्ष अनुभव का प्रतिनिधित्व सम्भव होता है।
9. इनकी सहायता से प्राप्त ज्ञान स्थायी व निश्चित बन जाता हैं।
10. इनकी सहायता से छात्र ज्ञान को स्पष्ट रूप में ग्रहण करते हैं।
11. विशेष रूप से मन्द बुद्धि बालकों को इनके माध्यम से सीखने में बहुत सहायता मिलती हैं।
12. इनके प्रयोग से विषय विशेषज्ञों की कमी भी पूरी हो सकती हैं, जैसे– दूरदर्शन पर सामाजिक अध्ययन व विज्ञान के पाठों का प्रदर्शन आदि।

प्रश्न–7 कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन का अर्थ बताते हुए, इसके गुण व दोष बताइए।
Write down the meaning of CAI with its merits and demerits.

उत्तर कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन जैसा कि नाम से ही विदित होता है एक ऐसे अनुदेशन की ओर संकेत करता है, जिसे कम्प्यूटर मशीनरी की मदद से सम्पादित किया जाता है। अनुदेशन प्रक्रिया को स्वः अनुदेशित तथा वैयक्तिक बनाने में इस प्रकार के अनुदेशन को शिक्षण मशीन द्वारा संचालित अनुदेशन से एक कदम आगे तथा अभिक्रमित पाठ्य–पुस्तकों द्वारा प्रदत्त अनुदेशन से दो गदम आगे का नावाचार माना जा सकता है।

हिलगार्ड एवं बाउर के अनुसार– ''कम्प्यूटर सहायता अनुदेशन का क्षेत्र अब इतना विस्तृत हो गया है कि अब इन्हें मात्र स्किनर द्वारा प्रतिपादित अभिक्रमित अधिगम तथा शिक्षण मशीन के अनुप्रयोग के रूप में नहीं समझा जा सकता''।

"Computer assisted instruction has now taken as see many dimensions hat it can no longer be considered as simple derivature of the teaching machine or the kind of programmed learning that skenner introduced".

कम्प्यूटर सहायता अनुदेशन की विशेषताएँ–

1. **श्रृखंलीय अथवा शाखीय–** यह कार्यक्रम निम्नतम स्तर पर श्रृंखलीय अथवा शाखीय होता है जो उच्चतर स्तर पर अन्य माध्यम अथवा अधिक जटिल कार्य की शाखाओं में परिवर्तित हो जाता है।
2. **विविधता–** कम्प्यूटर सहायता अनुदेशन कम्प्यूटर के कार्यक्रम के अनुसार बदलता रहता है, क्योंकि कम्प्यूटर शिक्षार्थी के अनुसार नये कार्यक्रम का चुनाव करता है।
3. **बड़ा या छोटा–** कम्प्यूटर के साथ इलेक्ट्रॉनिक–टाईपराइटर या अन्य कोई सम्प्रेषण उपकरण लगाया जाता है।

GURUKPO Get Insight Access to your Study Related Queries...

4. **कार्यक्रम की कीमत**– कार्यक्रम की कीमत भी बहुत अधिक होती है। क्योंकि इसमें टेप तैयार करनी होती है और उसमें बहुत सूचना भरनी होती है। इस पर बहुत खर्च आता है।

कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन की विधियॉं–

1. **कम्प्यूटर प्रबन्धित अनुदेशन**– इस प्रकार का अनुदेशन विद्यार्थी के ज्ञान के वर्तमान स्तर की जॉच में सहायता करता है। ये विद्यार्थी की अधिगम सम्बन्धी कमजोरियों को भी दर्शाता है।
2. **कम्प्यूटर आधारित अनुदेशनात्मक अनुरूपण**– कम्प्यूटर आधारित अनुदेशनात्मक अनुरूपण कम्प्यूटर प्रयोग की सशक्त विधि है। यह वास्तविक जीवन की यथार्थ–स्थितियों को प्रस्तुत करती है। ये अनुरूपण स्थाई भी हो सकते है और गतिशील भी। विद्यार्थियों की पृष्ठपोषक क्रियाओं एवं अनुक्रियाओं के फलस्वरूप इनकी स्थितियों में परिवर्तन भी हो सकता है।

कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन के लाभ/गुण–

1. **तत्कालीन पृष्ठ पोषण**– अन्तर्क्रिया टर्मीनलों द्वारा प्रस्तुत किया गया। तत्कालीन पृष्ठ पोषण विद्यार्थियों को परस्पर अन्तर्क्रिया करने तथा प्रयत्न करते रहने में व्यस्त रखता है।
2. **अन्तर्सक्रिय रेखाचित्र**– अन्तर्सक्रिय रेखाचित्रों से सचित्र नमूनों की रचना सम्भव हो सकती है।
3. **रेखाचित्र सुविधा**– कम्प्यूटर में रेखा–चित्र प्रस्तुत करने की सुविधा होती है। यह उपक्रम को बढ़ाने का सशक्त साधन है।
4. **धैर्यशील**– कम्प्यूटर उत्तर धीरता से प्रतीक्षा करता है और गलत उत्तर पर इसे कोई परेशानी नहीं होती।
5. **सक्रिय सहभागिता**– कमजोर विद्यार्थी भी इसमें सक्रिय रूप से भाग लेते है। ऐसे विद्यार्थी भाषण–विधि द्वारा किये गये शिक्षण में निष्क्रिय हो जाते है।
6. **कोर्स की संवृद्धि**– इस नई विधि से विविधता के समावेश द्वारा कोर्स को संवृद्ध बनवा जा सकता है।
7. **सही तथ्य**– कम्प्यूटर में विपुल तथ्यों का सही प्रयोग किया जा सकता है और वह भी बिना श्रम के।

कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन की सीमा/दोष–

1. **देखभाल की समस्या**– इसमें अधिगम प्रणाली को प्रभावशाली ढ़ंग से सीखाने की समस्या खड़ी हो जाती है।
2. **बहुत महॅंगा**– कम्प्यूटर–सहायक अनुदेशन बहुत महंगा है। हमारे कई विश्वविद्यालय तथा शिक्षा संस्थान अभी कई वर्षो तक कम्प्यूटर नहीं खरीद सकते। कम्प्यूटर की मरम्मत के कारण भी कई प्रकार की समस्यायें खड़ी हो जाती है।
3. **भावात्मक वातावरण का अभाव**– इस पर सबसे बड़ा दोष यह लगाया जाता है कि अध्यापक अपने व्यवहार तथा विद्यार्थियों के साथ अन्तर्क्रिया से कक्षा में स्नेहात्मक एवं भावात्मक वातावरण का निर्माण करता है।
4. **अधिगम– प्रणाली की व्यवस्था में कठिनाई**– व्यक्तिगत अधिगम प्रक्रिया के लिए वास्तविक रूप से उपयोगी अधिगम प्रणाली की व्यवस्था करना बहुत कठिन है।
5. **समस्याओं का समाधान नहीं**– कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन अपने आप में मनोविज्ञान एवं शैक्षिक समस्याओं का समाधान नहीं करता है। यह केवल इतना बताता है कि समस्या का समाधान हुआ है या नहीं।
6. **मानवीय गुण का अभाव**– कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन में मानवीय गुण का अभाव है। यह नई तकनीकी मनुष्य को यान्त्रिक बना देगी।
7. **भावात्मक उद्धेश्यों की पूर्ति नहीं**– कम्प्यूटर अनुदेशन का प्रयोग केवल ज्ञानात्मक एवं मनो–क्रियात्मक उद्देश्यों के लिए ही किया जा सकता है, इससे भावात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती।

प्रश्न–8 सामाजिक अध्ययन शिक्षण में मुद्रित साधन तथा अमुद्रित साधनों की उपयोगिता बताइए।

Describe the utility of Print Media and Non Print Media in the field of Social Studies Teaching.

उत्तर **मुद्रित साधन (Print Media)-**

पाठ्य पुस्तक (Text Book)– शिक्षण सामग्री में सर्वप्रमुख स्थान पाठ्य पुस्तक को प्राप्त है। वर्तमान शिक्षा–प्रणाली में पाठ्य पुस्तक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पाठ्य पुस्तक के द्वारा छात्र विषय–वस्तु को एकत्रित, संगठित व्यवस्थित कर सुगम बनाता है। पाठ्य पुस्तक के बाहर अध्यापक नहीं पढ़ाते हैं। इसकी सहायता से पाठ्यक्रम एवं पाठ योजना का ज्ञान होता है। इसके अलावा पुस्तकें संचित ज्ञान का भण्डार है। इसके द्वारा छात्रों को विभिन्न लेखकों के विचारों का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता–

1. भारत में वर्तमान युग में योग्य एवं प्रशिक्षित अध्यापकों का अभाव है। शिक्षकों को अपने विषय का भी पर्याप्त ज्ञान नहीं हैं। अध्यापक अपनी इस कमजोरी को पाठ्य पुस्तकों के अध्ययन से दूर करते हैं।
2. पुस्तकें पठन योग्य सामग्री को अत्यन्त मनोवैज्ञानिक रूप से प्रस्तुत करती हैं इस प्रकार ये छात्र एवं अध्यापक दोनों के समय की बचत करती है।
3. पुस्तक लेखक छात्रों के सीमित ज्ञान को आधार बनाकर पुस्तक लिखता है। इसलिये अपनी भाषा शैली में वह सरल भाषा का प्रयोग करता है।
4. भारत एक निर्धन देश हैं। अधिकांश स्कूलों की आर्थिक अवस्था दयनीय होने के कारण पुसतकालयों का स्कूलों में अभाव है। अतः जहॉं पर पुस्तकालय है, वहॉं पर उचित पुस्तकों का अभाव है।

पाठ्य पुस्तक चुनाव के सिद्धान्त–

1. **लेखक**– पुस्तक का चुनाव करते समय सर्वप्रथम उसके लेखक का ध्यान रखना चाहिये। लेखक के ज्ञान, अनुभव एवं प्रस्तुतिकला इत्यादि का प्रभाव पुस्तक पर पड़ता है।
2. **भाषा शैली**– पुस्तक जिसका चयन किया जाये, भाषा सरल स्पष्ट तथा स्तर के अनुकूल होनी चाहिए। पुस्तक में मुख्य स्थान विषय–वस्तु को दिया जाए न कि भाषा को।
3. **पाठ्य पुस्तक का स्तर**– पाठ्य पुस्तक के स्तर का ध्यान चुनाव करते समय अवश्य रखना चाहिए। पाठ्य पुस्तक अमुक कक्षा के लिए उचित है या नहीं इस बात को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता हैं। पुस्तक छात्रों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर लिखी गई है या नहीं।
4. **गेट अप**– गेट अप से तात्पर्य पुस्तक की बाहरी बनावट से है। पुस्तक का बाह्य रूप आकर्षक तथा विषय–वस्तु से सम्बन्धित होना चाहिए। अमेरीकन पुस्तकों का कागज प्रायः इतना चमकीला होता है कि रात को पढ़ने में असुविधा होती हे। अतः कागज ऐसा न हो।
5. **विषय वस्तु**– पुस्तक की विषय वस्तु पूर्ण होनी चाहिए। उसे छात्रों की समस्त आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए, पुस्तक पढ़ने के बाद छात्रों को अन्य पुस्तकों के अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। विषय वस्तु के हिसाब से पुस्तक अपने में पूर्ण होनी चाहिए।
6. **विचारधाराएॅं**– पुस्तक आधुनिक विचारधाराओं तथा सिद्धान्तों के अनुसार लिखी होनी चाहिए। लेखक को वर्तमान मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए पुस्तक की रचना की जानी चाहिये।

पुस्तकों के दयनीय स्तर के कारण– पुस्तकों की दशा अत्यन्त खराब होने के कारण निम्न है–

1. पुस्तकें राज्य आधार पर प्रान्तीय भाषा में प्रस्तुत की जाती है, इससे इन्हें अधिक प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं करना पड़ता।
2. लेखक अपनी योग्यता पर ध्यान न देते हुए चार–छः पुस्तकों को मिलाकर उनका सारांश लिख देते है और इस प्रकार नवीन पुस्तक की रचना हो जाती है, इस प्रकार के कार्य में विभिन्न पुस्तकों में प्रस्तुत सामग्री को अपनी पुस्तक में संगठित कर प्रस्तुत नहीं कर पाते है।

3. कुछ दिनों से पुस्तक व्यापार क्षेत्र में नये–नये प्रकाशकों ने प्रवेश किया है। ये प्रकाशन नये है अधिक से अधिक पुस्तकों को कम से कम समय में प्रकाशित कर देना चाहते हे। फलतः प्रकाशन सम्बन्धी त्रुटियॉं पुस्तकों में देखी जाती है।
4. प्रकाशन अधिक से अधिक पैसा कमाने की दृष्टि से मूल्य अधिक रखते है। कागज खराब लगाते है। लेखकों को कम पैसा देते है। फलतः पुस्तकों का स्तर नीचा होता है।

पठन पुस्तकों के लाभ–

1. विषय के ज्ञान में वृद्धि होती है।
2. पठन साहित्य विषय के सम्बन्ध में आधुनिकतम ज्ञान प्रदान करता है।
3. पठन–पुस्तकें विषय के ज्ञान को गम्भीर तथा गहन बनाती है।
4. पठन–पुस्तकें विषय में छात्र की रूचि पैदा करती है।
5. पठन पुस्तकें हमारी तर्क–शक्ति का विकास करती है।
6. पठन पुस्तकों से शब्द भण्डार में वृद्धि होती है।
7. पठन पुस्तकों के अध्ययन से छात्रों में आत्माभिव्यक्ति का विकास होता है।

अमुद्रित साधन (Non-Print Media)– अमुद्रित साधन वे है, जिन्हें किसी मुद्रणालय में मुद्रित नहीं कराया जाता वरन् हाथ से तैयार किया जाता है, जैसे– चार्ट, मानचित्र, ग्लोब, भ्रमण, सर्वेक्षण आदि।

1. **श्यामपट्ट–** श्यामपट्ट को हम परम्परागत सहायक सामग्री के अन्तर्गत इसलिए सम्मिलित करते है क्योंकि यह परम्परागत समय से शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त होता आ रहा है। इसको परम्परागत इसलिए कहते है क्योंकि यह परम्परागत विद्यालयों में प्रचलित है। इसको तो हम सभी प्रगतिशील विद्यालयों की सभी कक्षाओं में काले गहरे, हरे तथा नीले रंग में पाते है।
2. **चित्र–** शिक्षण में चित्र अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखते है। चित्र छात्रों के सम्मुख विषय वस्तु को वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा करते है, इस प्रकार चित्र विषय वस्तु को यथार्थ बनाने की चेष्टा करते है। शिक्षक उपयोगी चित्रों को समाचार–पत्र, पत्रिकाओं, साप्ताहिक पत्रों आदि से प्राप्त कर सकता है। इसका उपयोग करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–
   - **i.** विषय वस्तु से सम्बन्धित चित्र होना चाहिए।
   - **ii.** चित्र आकर्षक हो।
   - **iii.** चित्र सादा होना चाहिए।
   - **iv.** चित्र यथार्थ पर आधारित हो।
   - **v.** चित्र अपने उद्देश्य से सम्बन्धित हो।

   रेखाचित्र तथा रेखाकृति– शिक्षण तथा रेखाकृतियों को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। शिक्षक इनकी सहायता से शिक्षण से सम्बन्धित विविध विषय वस्तु जैसे– प्राकृतिक वनस्पति, मिट्टी, सिंचाई के साधन कृषि आदि को अत्यन्त सफलता से पढ़ा सकता है। रेखाचित्र का सबसे बड़ा गुण है कि आवश्यकता पड़ने पर कक्षा में ही श्यामपट्ट पर निर्माण कर सकता है।
3. **चार्ट एवं ग्राफ–** चार्ट एवं ग्राफ का प्रयोग उच्च कक्षाओं में किया जाता है। छोटी कक्षाओं में इनका उपयोग उपयुक्त नहीं है। चार्ट एवं ग्राफ के द्वारा संख्यात्मक तथ्यों को बड़ी सरलता से संक्षिप्त रूप से स्पष्ट किया जा सकता है।
4. **प्रारूप तथा नमूने–** वास्तविक शत–प्रतिशत वास्तविक होती है। जहां तक सम्भव हो कक्षा में वास्तविक वस्तुओं द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाए, किन्तु किन्हीं कारणों से वास्तविक वस्तुएॅं प्रस्तुत नहीं की जा सकती है या उनको प्रस्तुत करना उचित नहीं रहता है। उदाहरण के लिए लौह उद्योग पढ़ाते समय दुर्गापुर, राउरकेला

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

या भिलाई के कारखानों को वास्तविक रूप से कक्षा में नहीं लाया जा सकता है। इन अवस्थाओं का ज्ञान चित्र या प्रारूप के द्वारा सफलतापूर्वक दिया जा सकता है।

मानचित्र तथा ग्लोब– शिक्षण में मानचित्र तथा ग्लोब दोनों का ही बड़ा महत्व है। मानचित्र तथा ग्लोब का प्रयोग विभिन्न स्थलों की स्थिति का ज्ञान प्रदान करने हेतु किया जा सकता है। शिक्षण में ग्लोब को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। ग्लोब की सहायता से पृथ्वी की रूपरेखा, उसकी स्थिति, उसकी गति, आदि बातों को बड़े सरल ढ़ंग से बताया जा सकता है।

विद्युत संसाधन– श्रृव्य सामग्री वे सहायक सामग्रियॉ है, जिनको सुनकर छात्र कुछ सीखते है। इनका सुनना महत्वपूर्ण होता है उदाहरण के आधार पर–

1. **विडियो, ग्रामोफोन तथा टेपरिकॉर्डर**– इसके प्रयोग से अग्रलिखित लाभ है–
   - **i.** पाठ्य पुस्तकों की कमियों को दूर कर सकते है।
   - **ii.** छात्र तथा शिक्षक दोनों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाते है।
   - **iii.** एक ही समय में बड़े समुदाय का शिक्षण किया जा सकता है।
   - **iv.** टेपरिकॉर्डर की सहायता से रिकॉर्ड करके भविष्य के लिए संचित किया जा सकता है।
   - **v.** रेड़ियों कार्यक्रम रोचक तथा प्रभावोत्पादक होते है।
2. **चलचित्र**– श्रृव्य दृश्य सामग्री वह सामग्री है, जिसका देखना तथ सुनना दोनों ही महत्वपूर्ण है इस प्रकार की सहायक सामग्री में हम टेलीविजन तथा चलचित्रों के द्वारा अपने छात्रों को अनेक ऐसी वस्तुओं का ज्ञान स्थूल रूप से प्रदान कर सकते है, जिनका ज्ञान अन्य साधनों से कभी भी नहीं दिया जा सकता है। चलचित्र का प्रयोग करते समय निम्न बाते ध्यान रखनी चाहिए–
   - **i.** चलचित्र सुखान्त हो।
   - **ii.** छात्रों को बैठने की समुचित व्यवस्था हो।
   - **iii.** विषय वस्तु से सम्बन्धित हो।
   - **iv.** चलचित्र उत्सुकता पैदा करने वाला हो।
   - **v.** अन्धकार, प्रकाश, ध्वनि की समुचित व्यवस्था हो।

दूरदर्शन पर शिक्षण– आधुनिक युग में दूरदर्शन का शिक्षण के क्षेत्र में व्यापक प्रयोग हो रहा है। शिक्षण के क्षेत्र में दूरदर्शन का प्रयोग दो रूपों में पाया जाता है। प्रथम रूप में इसका प्रयोग आर्थिक रूप से सम्पन्न विद्यालयों में देखने को मिलता है। जहॉ एक ही विषय की कई कक्षाऍ एक साथ पृथक–पृथक कमरों में चलती है। दूसरे रूप में देश में दूरदर्शन केन्द्र, विद्वान एवं कुशल अध्यापकों से पाठ तैयार कराकर उनके वास्तविक शिक्षण को ही एक निश्चित समय पर दूरदर्शन पर प्रसारित करना।

लाभ–

- **i.** छात्रों को प्रेरणा प्राप्त होती है।
- **ii.** शिक्षण में सरसता, प्रभावकता तथा मनोरंजन आता है।
- **iii.** दूरदर्शन कार्यक्रम उच्चकोटी के विद्वानों द्वारा तैयार करवाया जाता है।
- **iv.** ज्ञान सम्बन्धी विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।
- **v.** बड़ी संख्या में छात्रों को शिक्षण प्रदान किया जाता है तथा समय, श्रम व साधनों की बचत होती है।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Unit–5
सामाजिक अध्ययन शिक्षण का मूल्यांकन
Evaluation of Teaching Social Studies

प्रश्न–1 सामाजिक अध्ययन शिक्षण में मूल्यांकन का अर्थ बताते हुए उसकी विशेषताएँ एवं प्रमुख प्रविधियों को स्पष्ट कीजिए।
Define the meaning of Evaluation its charectristics and explain in social studies teaching.

उत्तर– शिक्षण प्रक्रिया में मूल्यांकन का एक विशिष्ट स्थान हैं। परम्परागत परीक्षा के रूप में आरम्भ में ही शिक्षण प्रक्रिया पर एकाधिकार बना रहा हैं, विद्यार्थियों की सफलता शिक्षकों के शिक्षण स्तर तथा अभिभावकों एवं जनसाधरण को विद्यार्थियों की प्रगति का एकमात्र मापदण्ड परीक्षा ही रही हैं, मूल्यांकन अब शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनकर अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान बन गया हैं।

मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Evaluation)– मूल्यांकन वह पद्धति हैं, जिसके द्वारा पूर्व–निर्धारित उद्देश्यों, तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की मात्रा का निर्धारण करते हैं। मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा शिक्षण के मूल्यों तथा निर्दिष्ट उद्देश्यों के मध्य तुलना की जाती हें। मूल्यांकन यह पद्धति हैं। जिसके द्वारा अर्जित मूल्यों की जॉच पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के प्रकाश में आती हैं।

मूल्यांकन की परिभाषाएँ (Definitions of Evaluation)–
क्विलिन व हन्ना– " छात्रों के व्यवहार में विद्यालय द्वारा लाये गये परिवर्तनों के विषय में प्रमाणों के संकलन और उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है।''

ब्रेकफील्ड तथा मारडाक– "मूल्यांकन किसी सामाजिक सॉस्कृतिक अथवा वैज्ञानिक मानदण्ड के सन्दर्भ में किसी घटना को प्रतीक आवंटित करना हैं, जिससे उस घटना का महत्व अथवा मूल्य ज्ञात किया जा सके।''

Breakfield and Mardock- Evaluation is the assignment of symbol to a phenomenon in order to characteristics the worth or value of the pnenomenon with reference to some social, cultureal or scientific standard.

मूल्यांकन की विशेषताएँ (Characteristics of Evaluation)–

1. **विद्यार्थी केन्द्रित (Student Centrered)–** उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यवहारगत् विशिष्ट परिवर्तनों के रूप में निर्धारित किए जाते हैं। जिनकी उपलब्धि की जॉच मूल्यांकन से की जाती हैं। अतः मूल्यांकन अन्ततः विद्यार्थी केन्द्रित हैं।

2. **विश्लेषणात्मक संश्लेषणात्मक** (Analistical **and Synthetical)–** मूल्यांकन में पहले निर्धारित उद्धेश्यों का विश्लेषण कर विशिष्टयों में विभाजित किया जाता हैं। विशिष्टियों के अनुकूल परिस्थितियों का उपकरणों से चुनाव कर उनकी जॉच की जाती हैं। जॉच के बाद एकत्रित साक्ष्यों का सारांशीकरण (संश्लेषण) किया जताा हैं। अतः मूल्यांकन विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक प्रक्रिया हैं।

3. **शिक्षण–प्रकिया का अभिन्न अंग (Main part at teaching process)–** शिक्षण–उद्देश्य एवं शिक्षण–अधिगम स्थितियों से अंतः सम्बन्धित हो, शिक्षण–प्रक्रिया को प्रभावी बनाता हैं।

4. **व्यापकता (Broadness)**–केवल ज्ञानात्मक ही नहीं वरन् अवबोध, ज्ञानोपयोग, अभिरूचि, अभिवृत्ति एवं कौशल सम्बन्धी समस्त उद्देश्यों की वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों के रूप में होने वाली उपलब्धियों की परख करने के कारण मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक हैं।

5. **मापन एवं मूल्य निर्धारण प्रकिया (Measurement and valuing process)**– मापन द्वारा विद्यार्थियों की ज्ञानात्मक एवं कियात्मक उपलब्धि की मात्रा अथवा स्तर, संख्या अथवा अंको में निर्धारित किया जाता हैं। तथा भावात्मक (जैसे अभिरूचि एवं अभिवृत्ति) पक्ष का गुणात्मक मूल्य निर्धारण किया जाता हैं।

6. **अनवरत प्रकिया (Continue process)**– मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक होने व शिक्षण प्रकिया का अंग होने के कारण यह शिक्षण के साथ अनवरत चलने वाली प्रकिया हैं।

7. **उद्देश्य केन्द्रित (Objective centered)**– मूल्यांकन निर्धारित उद्देश्यों की उपलब्धि की सीमा ज्ञात करने के लिए किया जाता हैं। अतः ये उद्देश्य केन्द्रित हैं।

8. **निदानात्मक (Diagnostic)**– मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों के दुर्बल पक्षों का ज्ञान अर्थात् निदान होता हैं। जिसके आधार पर उन्हें दूर करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण आयोजित किया जाता हैं।

मूल्यांकन के उपकरण एवं प्रविधियॉं (Teachniques of Evaluation)– मूल्यांकन की प्रमुख प्रविधियॉं निम्न प्रकार की हैं–

(अ) **भावात्मक पक्ष का मूल्यांकन**– सामाजिक अध्ययन–शिक्षण में विद्यार्थियों के भावात्मक पक्ष के वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों सम्बन्धी उद्धेश्यों का मूल्यांकन महत्वपूर्ण हैं। इसके लिए निम्नांकित प्रविधियॉं एवं उपकरण उपयुक्त रहते हैं।

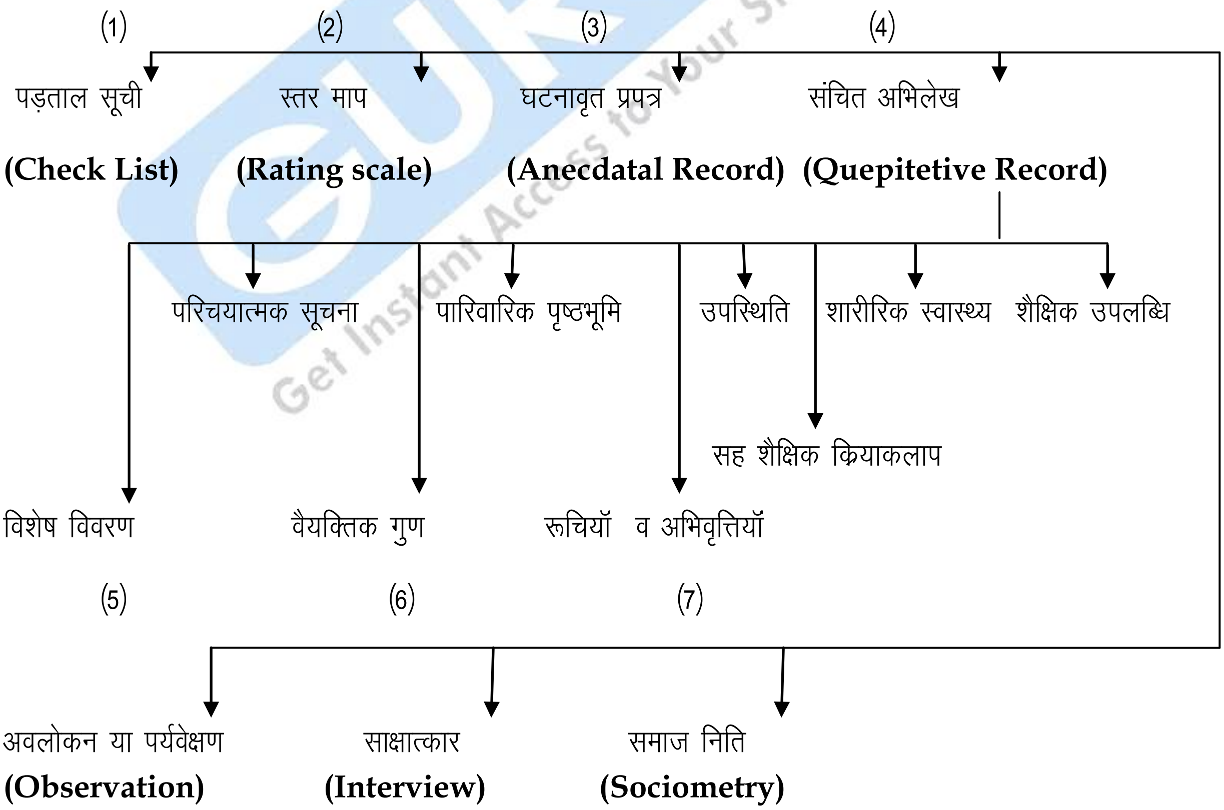

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries

(ब) **मौखिक परीक्षा (Oral Test)**– यह परम्परागत परीक्षा प्रणाली की मौखिक विधि हैं। छोटी कक्षा में जहॉं विद्यार्थियों की भाषागत योग्यता अविकसित होती हैं। यह विधि उपयुक्त होती हैं, इस विधि का प्रयोग मौखिक प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ बनाकर करना उपयुक्त रहता हैं। समाज शास्त्र में कक्षा 1 से 3 तक के विद्यार्थियों में शिष्टाचार एवं अन्य सामान्य समाज ज्ञान की मौखिक जॉंच पड़ताल सूची या स्तर मान की सहायता से की जानी चाहिए।

(स) **प्रायोगिक परीक्षा (Practical Test)**– इनका प्रयोग बहुधा कौशल की जॉंच करने हेतु किया जाता हैं। सामाजिक अध्ययन में मानचित्र, रेखाचित्र, ग्राफ आदि उपकरणों के निर्माण एवं उनके अध्ययन का कौशल, विचार–विमर्श के समय चिन्तन तर्क तथा निर्णय करने के कौशल आदि की जॉंच सम्बन्धित प्रायोगिक कार्य देकर की जा सकती हैं।

(द) **लिखित परीक्षा (Writen Test)**– इनमें विद्यार्थियों को लिखित रूप में प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। ये प्रश्न शिक्षक द्वारा बनाए जाते हैं, जो अग्रांकित प्रकार के होते हैं।

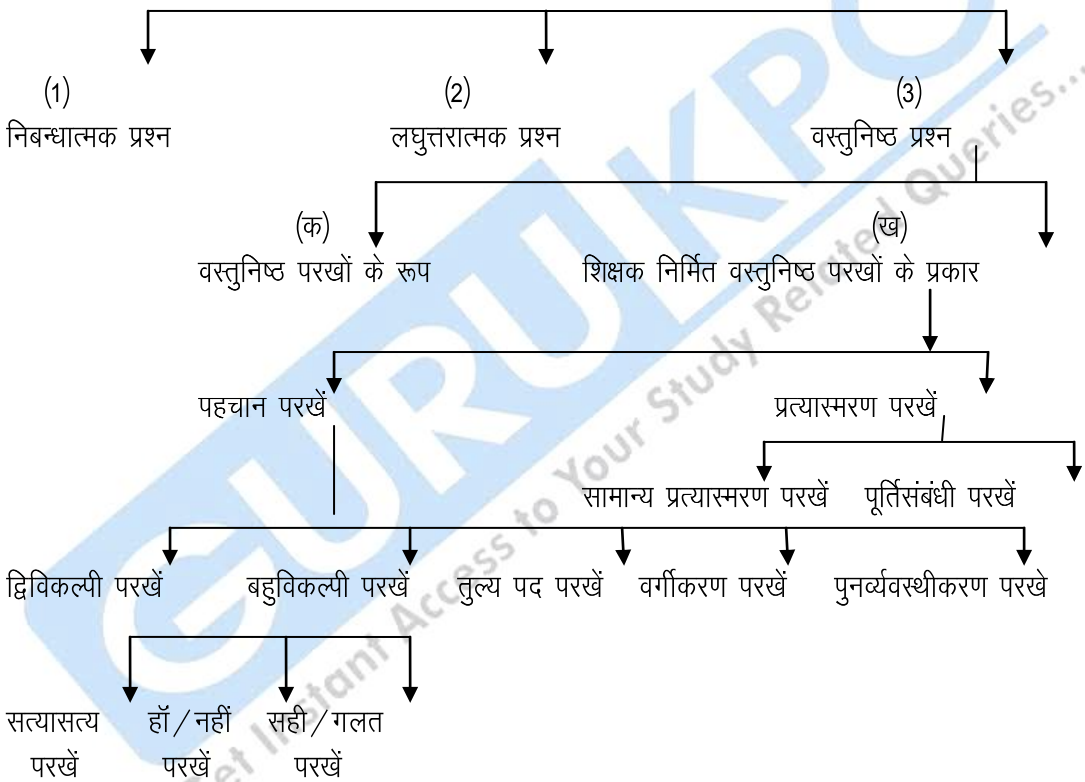

प्रश्न–2 **एक अच्छे मूल्यांकन की क्या विशेषताएँ हैं?**

What is characteristic of a good test and evaluation?

उत्तर– सामाजिक अध्ययन में प्रचलित मूल्यांकन विद्या के रूप में परीक्षाओं की सीमाओं की समीक्षा करने के उपरान्त जाने कि एक अच्छे परीक्षण प्रश्न पत्र में मापक की दृष्टि से निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए–

1. **वस्तुनिष्ठता (Objectivity)**– यदि अंकन कार्य में व्यक्तिगत पसन्द रूझानों या वैषयिकताओं का प्रभाव पड़ता है तो परिणाम सहीं नहीं हो सकते, अतः परीक्षण ऐसा हो कि एक से अधिक परीक्षक उत्तर–पुस्तिका की जॉंच करे तो भी परिणाम लगभग समान ही रहे।
2. **विश्वसनीयता (Reliability)**– यदि किसी परीक्षण के आधार पर किसी छात्र या समान समूह की परीक्षा एक से अधिक बार ली जाती हैं और परिणाम समानान्तर या लगभग एक से रहते हैं तो परीक्षण विश्वसनीय कहलाता हैं। अच्छे परीक्षण विश्सवनीय होते हैं।

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

3. **वैधता (Validity)**– वैधता से अभिप्राय हैं– परीक्षा जिस उद्देश्य को लेकर जिस विषयवस्तु की जांच करने हेतु बनाई गई हैं, उसकी जांच करना भी हैं या नहीं। एक अच्छा परीक्षण वह हैं, जो विषय की उपलब्धि या उन्हीं योग्यताओं वैद्य जॉच करने में सक्षम हो, जिनके लिए उनका निर्माण किया जाता हैं।
4. **व्यावहारिकता (Practicability)**–परीक्षण ऐसे हो जिन्हें शिक्षक और छात्र उपयोग में ला सकें जिनका निर्माण सफलता से किया जा सके जो अधिक जटिल परिस्थितियॉ उत्पन्न नहीं करते हो, जिन्हें आसानी से प्रशासित किया जा सके, ॲंकन की दृष्टि से जो सरल हो लचीले हो।
5. **मितव्ययता (Economical)**– परीक्षण अधिक खर्चीले न हो। इनके निर्माण प्रशासन, अंकन, परिणाम–विश्लेषण का कार्य मितव्ययता पूर्ण हो। इनमें प्रयोग आने वाली सामग्री ऐसी हो जो सहज ही उपलब्ध हो सके और सस्ती भी हो।
6. **व्यापकता एवं पर्याप्तता (Broad based and appropriate)**– परीक्षण समस्तम पाठ्यक्रम का प्रतिनिधित्व करने वाला। इसमें पदों की पर्याप्त संख्या हैं। यह सभी शैक्षिक और शिक्षण और शिक्षण प्रक्रिया में सहयोग प्रदान करने वाला हो।
7. **विभेदकता (Differentiation and clalssification)**– परीक्षण के परिणाम छात्रों का उनकी योग्यता के आधार पर अन्तर करने एवं वर्गीकरण करने में सक्षम हो।

उक्त विशेषताओं के साथ–साथ यह भी आवश्यक हैं कि मूल्यांकन हेतु कार्य के प्रति नीतिगत निर्णय लेते हुए नवाचारों को बढ़ावा दिया जाए।

प्रश्न–3 नील पत्र का अर्थ बताते हुए नील पत्र निर्माण के चरण तथा सामाजिक अध्ययन शिक्षण के प्रश्न पत्र निर्माण प्रकिया का वर्णन कीजिए?

Define Blue Print. Write down steps of preparing Blue Print and procedure of preparing social studies question paper?

उत्तर– जिस प्रकार किसी भवन के निर्माण से पूर्व भवन का मानचित्र बनाकर ब्लू–प्रिंट में उतारा जाता हैं। उसी प्रकार परीक्षण प्रश्न पत्र बनाते समय प्रश्न पत्र का नील पत्र बनाया जाता हैं। वस्तुतः यह प्रश्न पत्र निर्माण की योजना या उसका आधार पत्र होता हैं, जिसमें निम्न पक्ष एक साथ दर्शाए जाते हैं।

1. परीक्षित किए जाने वाले उद्देश्य संकेत (Objectives)
2. परीक्षित की जाने वाली इकाइयॉ या उप इकाइयॉ (Content)
3. परीक्षण हेतु निर्मित प्रश्न या पद (Questions or items)

इसे त्रिदिशा सूचक चार्ट भी कहते हैं क्योंकि उक्त तीनों पक्षों को 'ब्लू–प्रिंट तीन दिशाओं में दर्शाते हुए प्रश्न–पत्र निर्माण की योजना दर्शाता हैं।

नील पत्र निर्माण के चरण
(Steps of preparing Blue Print)

1. **प्रथम चरण–**

विषय वस्तु के आधार पर अंक भार

क्रम सं.	विषय वस्तु	अंक	प्रतिशत
1.	राष्ट्रपति	4	16%
2.	राष्ट्रपति चुनाव	5	20%
3.	राष्ट्रपति की शक्तियॉ	7	28%
4.	राष्ट्रपति और महाभियोग	4	16%
5.	राष्ट्रपति की वास्तविक स्थिति	5	20%

		योग	25	100%

2. **द्वितीय चरण–**

(1) उद्देश्यों के आधार पर अंक भार

कमांक	उद्देश्य	अंक	प्रतिशत
1.	ज्ञानात्मक	10	40%
2.	अवबोधात्मक	8	32%
3.	ज्ञानोप्रयोग	5	20%
4.	कौशलात्मक	2	8%
	योग	**25**	**100%**

1. परीक्षण की जाने वाली इकाइयों (या विषय वस्तु को) को भार प्रदत्त करना (To provide weightage to the units to be tasted) इस स्तर पर परीक्षण के लिए निर्धारित पूर्णांकों को विषय वस्तु की महत्ता के आधार पर शिक्षक अपने विवेक से चयनित इकाइयों/उप इकाइयों में वितरित कर देता हैं।
2. उद्देश्यों को अंक भार प्रदत्त करना– द्वितीय स्तर पर परीक्षण के लिए निर्धारित उद्देश्यों में पूर्णांक के अंको को आंवटित करके उसका प्रतिशत ज्ञात करते हें। अंको और प्रतिशत को उद्धेश्यानुसार अंक भार आवंटित करने की प्रकिया ही उद्देश्यानुसार भार प्रदत्त करना कहलाती हैं।
3. प्रश्नों या परीक्षण पदो के आधार पर भार प्रदत्त करना– इस स्तर पर प्रश्नों के प्रकारों के आधार पर उन पदों का चयन करना होता हैं, जो परीक्षक, अवधि अंक, जो विषय–वस्तु और उद्देश्यों के बीच में न हो।

द्वितीय चरण–

प्रश्नों के आधार पर अंक भार

कमांक	प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की संख्या	अंक	प्रतिशत
1.	निबन्धात्मक प्रश्न	1	4	16%
2.	लघुत्तरात्मक प्रश्न	4	8	32%
3.	अति लघुत्तरात्मक प्रश्न	4	4	16%
4	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	9	9	36%
	योग	**18**	**25**	**100%**

नील पत्र का प्रारूप

परीक्षण–कक्षा 8 (माध्यमिक)

विषय– सामाजिक अध्ययन शास्त्र

नील पत्र (Blue Print)

समय – 40 मिनट — पूर्णांक – 25

इकाई – राष्ट्रपति

क. सं	विषयवस्तु उद्देश्य प्रश्नों के प्रकार	ज्ञानात्मक				अवबोधात्मक				ज्ञानोप्रयोग				कौशलात्मक				योग	%
		नि.	लघू	अति लघू	वस्तु	नि.	लघू	अति लघू	वस्तु	नि.	लघू	अति लघू	वस्तु	नि.	लघू	अति लघू	वस्तु		
1.	उपभोक्ता				1(1)								1(1)					4 (3)	16%
2.	उपभोक्ता जागरूकता				1(1)			2(2)	1 (1)				1 (1)					5 (5)	20%
3.	उपभोक्ता शोषण	4(1)			1(1)				1 (1)				1 (1)					7 (4)	28%
4.	उपभोक्ता शिकायत पत्र		2(1)				2(1)											4 (2)	16%

5.	जिला मंच				1(1)		2(1)				2(1)					2 (2)		5 (4)	20%
		4(1)	2(1)	..	4(4)		4(2)	2(2)	2 (2)		2(1)		3(3)						
			10(6)				8(6)				5(4)					2 (2)			100%
	प्रतिशत		40%				32%				20%					8%			

नोट– (कोष्ठक के अन्दर प्रश्नों की संख्या और कोष्ठक के बाहर अंकों का भार निश्चित किया गया हैं।)

4. **चतुर्थ पद हैं नील पत्र Blue Print का निर्माण–** इस स्तर पर विषय वस्तु प्रश्नों के प्रकार एवं उद्धेश्यों को दिए गये अंक भार का समायोजन इस प्रकार से किया जाता हैं कि उक्त तीनों का योग उन्हें आंवटित अंकों से अधिक न हो। नील पत्र प्रारूप को त्रि–दिशा सूचक चित्र भी कहा जाता हैं क्योंकि इसमें उद्धेश्यों विषय–वस्तु और प्रश्नों को तीन दिशाओं में दर्शाया जाता हैं और इस प्रकार प्रदर्शित किया जाता हैं कि उक्त तीनों का योग पृथक–पृथक तो आवंटितम अंक भार के समान ही हो पूर्णांक भी दोनों ओर से समान रहे और प्रतिशत भी दोनों ओर से 100% की समान संख्या में आये।

प्रश्न–4 मापन एवं मूल्यांकन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

What is the difference between measurement and evaluation.

उत्तर मूल्यांकन किसी भी वस्तु, विषय, व्यक्ति तथा स्थिति का मूल्य अंकन करने का वैज्ञानिक क्रम है। जबकि मापन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी वस्तु अथवा स्थिति का विस्तार, सीमा, अंश योग्यता आदि का अभिनिश्चयन किया जताा है।

मापन एवं मूल्यांकन के अन्तर को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

क्र. स.	मापन (Measurement)	मूल्यांकन (Evaluation)
1.	मापन किसी योग्यता या गुण की मात्रा मापी जाती है। यह संख्यात्मक एवं गुणात्मक दोनों हो सकती है।	मूल्यांकन द्वारा यह निर्णय लिया जता है कि मापी गई मात्रा उपयुक्त है या नहीं।
2.	मापन मात्रात्मक होता है।	मूल्यांकन गुणात्मक होता है।
3.	मापन एक बार में किसी एक पक्ष से सम्बन्धित होता है।	मूल्यांकन बहुपक्षीय होता है।
4.	मापन संकीर्ण है, यह मूल्यांकन का एक भाग मात्र है।	मूल्यांकन विस्तृत है, मापन इसका अंग है।
5.	मापन मूल्यांकन का अनिवार्य अंग है।	मूल्यांकन के उद्देश्यों की पूर्ति मापन द्वारा होती है।

■■■

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Multiple Choice Questions

Unit 1

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. सामाजिक अध्ययन का विकास हुआ है–
(अ) जापान (ब) इंग्लैण्ड
(स) अमेरिका (द) भारत **(स)**

2. सामाजिक अध्ययन के मुख्य घटक है–
(अ) इतिहास (ब) नागरिक शास्त्र
(स) भूगोल (द) उपरोक्त सभी **(द)**

3. सामाजिक अध्ययन का केन्द्र है–
(अ) समाज (ब) मानव
(स) राष्ट्र (द) उपरोक्त सभी **(द)**

4. शिक्षण अधिगम प्रबन्धन प्रत्यय के प्रवतर्क है–
(अ) बी.एस. ब्लूम (ब) रॉबर्ट ग्लैसर
(स) बी.ओ. स्मिथ (द) आई. के डेवीज **(द)**

5. रॉबर्ट मेगर की विधि का उपयोग किया जाता है–
(अ) भावात्मक उद्देश्यों में (ब) ज्ञानात्मक उद्देश्यों में
(स) उपरोक्त दोनों में (द) उपरोक्त किसी में नहीं **(ब)**

6. शिक्षा के उद्देश्यों का मुख्य रूप विकसित किया–
(अ) जॉन डीवी ने (ब) बी.ओ. स्मिथ ने
(स) बी.एस. ब्लूम ने (द) रॉबर्ट मेगर ने ( )

7. शिक्षण अधिगम प्रबन्धन के मुख्य सोपान है–
(अ) नियोजन (ब) व्यवस्था
(स) नियन्त्रण (द) उपरोक्त सभी **(द)**

8. नागरिक शास्त्र, भूगोल तथा इतिहास का शिक्षण उद्देश्य है–
(अ) आदर्श नागरिक बनाना (ब) राष्ट्रीय एकता
(स) नेतृत्व की क्षमताओं का विकास (द) उपरोक्त सभी ( )

9. मानवी ज्ञान का क्षेत्र है–
(अ) भौतिक विज्ञान (ब) सामाजिक अध्ययन
(स) जीवन विज्ञान (द) उपरोक्त सभी ( )

10. सह–सम्बन्ध का मुख्य उपयोग है–
(अ) ज्ञान की व्यापकता (ब) विषय की रोचकता
(स) ज्ञान की व्यावहारिकता (द) उपरोक्त सभी **(द)**

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Unit 2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. पाठ्यक्रम का क्षेत्र होता है–
(अ) विद्यालय की आन्तरिक क्रियाएँ (ब) विद्यालय की बाह्र क्रियाएँ
(स) उपरोक्त दोनों की (द) उपरोक्त कोई नहीं **(स)**

2. समय बोध को महत्व दिया जाता है–
(अ) इतिहास (ब) भूगोल
(स) नागरिक शास्त्र (द) अर्थशास्त्र **(अ)**

3. स्थान बोध को प्राथमिकता देते है–
(अ) नागरिक शास्त्र (ब) इतिहास
(स) भूगोल (द) अर्थशास्त्र **(द)**

4. पाठ्यक्रम के विकास का आधार होता है–
(अ) दार्शनिक (ब) सामाजिक
(स) मनोवैज्ञानिक (द) उपरोक्त सभी **(द)**

5. मानवीय गुणों को सम्मिलित करते है–
(अ) भूगोल (ब) इतिहास
(स) नागरिक शास्त्र (द) उपरोक्त सभी **(इ)**

6. सामाजिक अध्ययन की पाठ्यवस्तु में महत्व देते है–
(अ) चरित्र विकास (ब) नागरिकता का विकास
(स) धर्म एवं संस्कृति का विकास (द) उपरोक्त सभी **(द)**

7. इकाई आयाम से लाभ होता है–
(अ) पाठ्यक्रम विकास में (ब) शिक्षण नियोजन में
(स) उद्देश्यों के प्रतिपादन में (द) उपरोक्त कोई नहीं **(द)**

8. प्रतिगमन आयाम की प्रक्रिया होती है–
(अ) अतीत से वर्तमान की ओर (ब) वर्तमान से अतीत की ओर
(स) उपरोक्त दोनों ही (द) उपरोक्त कोई नहीं **(ब)**

9. केन्द्रीभूत आयाम का सूत्र है–
(अ) ज्ञात से अज्ञात (ब) सम्पूर्ण से खण्ड
(स) खण्ड से सम्पूर्ण (द) सरल से कठिन **(ब)**

10. प्रतिगमन व प्रगतिशील की विशेषता है–
(अ) सामाजिक प्रगति (ब) सामाजिक परिवर्तन
(स) सामाजिक विकास क्रम (द) उपरोक्त सभी **(स)**

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Unit 3

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. योजना विधि के प्रवर्तक है–

(अ) हरबर्ट (ब) मौरीसन

(स) किलपैट्रिक (द) जॉन डीवी **(स)**

2. एकीकृत पाठ्यक्रम का विकास हुआ–

(अ) इंग्लैण्ड में (ब) भारत में

(स) अमेरिका में (द) जर्मनी में **(स)**

3. पर्यवेक्षण अध्ययन में महत्व दिया जाता है–

(अ) व्यक्तिगत भिन्नता (ब) परिपाक को

(स) छात्रों की क्रियाशीलता (द) उपरोक्त सभी **(द)**

4. उपचारी शिक्षण विधि है–

(अ) प्रश्नोत्तर विधि (ब) योजना विधि

(स) पर्यवेक्षण अध्ययन (द) व्याख्या विधि **(स)**

5. प्रश्नोत्तर विधि के प्रवर्तक है–

(अ) जॉन डीवी (ब) किलपैट्रिक

(स) सुकरात (द) प्लेटो **(स)**

6. शिक्षण आव्यूह का आधार है–

(अ) पाठ्यवस्तु (ब) उद्धेश्य

(स) दोनो ही (द) उपरोक्त कोई नहीं **(स)**

7. आगमन निगमन विधि का अर्थ होता है–

(अ) उदाहरण के नियम (ब) नियम के उदाहरण

(स) दोनों ही (द) उपरोक्त कोई नही **(स)**

8. प्राचीन पाठ योजना दी–

(अ) बी.एस. ब्लूम (ब) हरबर्ट

(स) किलपैट्रिक (द) उपरोक्त कोई नहीं **(अ)**

9. पाठ योजना में 'प्रस्तुतीकरण' को महत्व दिया–

(अ) हरबर्ट पाठ योजना (ब) मूल्यांकन पाठ योजना

(स) दोनों में (द) उपरोक्त कोई नहीं **(अ)**

10. पाठ योजना उद्देश्य होती है–

(अ) परिषद पाठ योजना (ब) ब्लूम पाठ योजना

(स) दोनों ही में (द) कोई नहीं **(स)**

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Unit 4

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. बुनियादी शिक्षण प्रतिमान का विकास किया–
(अ) जीन प्याजे (ब) बी.एफ. स्किनर
(स) रॉबर्ट ग्लैसर (द) गार्डन **(स)**

2. सक्रिय अनुबद्ध प्रतिमान का विकास किया–
(अ) फ्लैण्डर्स (ब) आलीवर
(स) प्याजे (द) स्किनर **(द)**

3. अनुदेशनात्मक प्रक्रिया मुख्य घटक है–
(अ) सर्जनात्मक प्रतिमान (ब) आगमन प्रतिमान
(स) बुनियादी प्रतिमान (द) अनुकरणीय प्रतिमान **(स)**

4. आधुनिक शिक्षण प्रतिमानों का वर्गीकरण किया–
(अ) तीन परिवारों में (ब) चार परिवारों में
(स) दो परिवारों में (द) कोई नहीं **(ब)**

5. स्किनर प्रतिमान के स्वरूप के तत्व की मुख्य क्रिया है–
(अ) अनुक्रिया (ब) उद्दीपन
(स) पुनर्बलन (द) उपरोक्त सभी **(द)**

6. शैक्षिक पर्यटनों का मुख्य लाभ है–
(अ) प्रत्यक्षीकरण (ब) विषय में रूचि का भाव
(स) धारण शक्ति में वृद्धि (द) उपरोक्त सभी **(द)**

7. आकस्मिक परीक्षण का मुख्य लाभ है–
(अ) उपलब्धियों में वृद्धि (ब) अध्ययन में नियमितता
(स) परीक्षा देने का अभ्यास (द) उपरोक्त सभी **(द)**

8. प्रयोगशाला का लाभ है–
(अ) करके सीखना (ब) अवलोकन का अवसर
(स) प्रत्यक्षीकरण (द) उपरोक्त सभी **(द)**

9. पृष्ठपोषण का मूल स्त्रोत है–
(अ) मनोविज्ञान (ब) इन्जीनियरिंग
(स) शिक्षा (द) प्रशिक्षण **(ब)**

10. शिक्षक पाठ्य पुस्तकों का उपयोग करता है–
(अ) अध्ययन में (ब) पाठ्य योजना में
(स) कक्षा अनुदेशन में (द) उपरोक्त सभी में **(द)**

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Unit 5

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. मापन के कार्य है–

(अ) साफल्य (ब) निदान

(स) शोध (द) उपरोक्त सभी **(द)**

2. रॉबर्ट गेने की प्रमुख देन है–

(अ) शिक्षण प्रतिमान (ब) शिक्षण सिद्धान्त

(स) अधिगम सिद्धान्त (द) अधिगम स्वरूप **(द)**

3. अभिप्रेरणा की प्रविधियों के चयन के मानदण्ड है–

(अ) छात्रों की आवश्यकतायें (ब) अधिगम के उद्धेश्य

(स) अधिगम की परिस्थितियॉ (द) उपरोक्त सभी **(द)**

4. शिक्षण के स्तर है–

(अ) स्मर स्तर (ब) बोध स्तर

(स) चिन्तन स्तर (द) उपरोक्त सभी **(द)**

5. मूल्यांकन की प्रकृति है–

(अ) गुणात्मक (ब) परिणामात्मक

(स) दोनों ही (द) कोई नहीं **(स)**

6. वस्तुनिष्ठ परीक्षा की विशेषता है–

(अ) विश्वसनीयता (ब) वैद्यता

(स) वस्तुनिष्ठता (द) उपरोक्त सभी **(द)**

7. भाषा की अभिव्यक्ति एवं रचना का मापन करते है–

(अ) वस्तुनिष्ठ परीक्षा (ब) निदानात्मक परीक्षा

(स) दोनों ही (द) उपरोक्त कोई नहीं **(ब)**

8. प्रमाणिक परीक्षण बनाते है–

(अ) निबन्धात्मक परीक्षा (ब) वस्तुनिष्ठ परीक्षा

(स) दोनों ही (द) किसी को नहीं **(ब)**

9. उद्देश्य–केन्द्रित परीक्षा होती है–

(अ) वस्तुनिष्ठ परीक्षा (ब) निबन्धात्मक

(स) दोनों ही (द) उपरोक्त कोई नहीं **(स)**

10. निबन्धात्मक परीक्षा में सुधार किया जाए–

(अ) प्रश्नों में सुधार (ब) प्रश्न पत्रों में सुधार

(स) उत्तर पुस्तकों के आकलन में सुधार (द) उपरोक्त सभी में सुधार **(द)**

■■■

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Key Terms

1.	सामाजिक अध्ययन **Social Studies**	सामाजिक अध्ययन में समाज से सम्बन्धित सभी विषयों, क्रियाओं, मनुष्य को भौतिक एवं सामाजिक तथा विश्व की सम्पूर्ण मानव जाति का अध्ययन किया जाता है।
2.	लक्ष्य एवं उद्देश्य **Aim & Objective**	लक्ष्य पूर्व निर्धारित साध्य होते है। उद्देश्य विद्यालय द्वारा पथ–प्रदर्शित अनुभव का परिणाम होता है।
3.	सह–सम्बन्ध **Correlation**	सह–सम्बन्ध का अर्थ है विभिन्न विषयों का इस प्रकार से शिक्षण करना कि उनसे प्राप्त ज्ञान में सम्बन्ध हो।
4.	पाठ्यक्रम **Curriculum**	पाठ्यक्रम का अर्थ है– दौड़ का मैदान, जिसकी सीमाओं में दौड़कर छात्र शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करता है।
5.	पाठ्य वस्तु **Syllabus**	पाठ्यवस्तु पूर्ण शैक्षिक सत्र में विभिन्न विषयों में शिक्षक द्वारा छात्रों को दिए जाने वाले ज्ञान की मात्रा के विषय में निश्चित जानकारी प्रस्तुत करता है।
6.	पाठ योजना **Lesson Plan**	पाठ योजना का अर्थ है– पाठ को आयोजित करना।
7.	इकाई योजना **Unit Plan**	इकाई शब्द को शिक्षा जगत में लाने का श्रेय हरबर्ट को है। इकाई योजना का अर्थ है– इकाई किसी समस्या या योजना से समबन्धित सीखने वाली क्रियाओं की समानता या एकता को बताती है।
8.	शिक्षण सूत्र **Teaching Maxims**	शिक्षण की प्रक्रिया में व्याप्त जटिलताओं को दूर करने के लिए शिक्षा–शास्त्रियों ने समय–समय पर अनेक उक्तियों, तथ्यों को खोजा जिनसे शिक्षण कार्य अधिक सरल तथा रोचक बन जाता है।
9.	शिक्षण विधि **Teaching Method**	शिक्षक द्वारा निर्देशित ऐसी क्रियाएँ जिनके परिणामस्वरूप छात्र कुछ सीखते है इस प्रकार शिक्षण विधि अनेक क्रियाओं का पुंज है।
10.	व्याख्यान विधि **Lecture Method**	व्याख्यान शिक्षण शास्त्रीय विधि है जिसमें शिक्षक औपचारिक रूप से नियोजित रूप में किसी प्रकरण या समस्या पर भाषण देता है।
11.	अभिक्रमित अनुदेशन **Programmed Instruction**	अभिक्रमित का तात्पर्य है सुनियोजित करना, अर्थात् एक सुनियोजित पाठ्य–वस्तु को प्रस्तुत करके बालकों को अध्ययन कार्य में संलग्न करके, अध्यापक उनका निरीक्षण और अनुदेशन करता है।
12.	प्रयोजना विधि **Project Method**	इनके जन्मदाता डब्ल्यू. एच. किलपैट्रिक है, इनके अनुसार– ''योजना वह सहृदय सप्रयोजन कार्य है, जो सम्पूर्ण शक्ति के साथ सामाजिक वातावरण में किया जाये''।
13.	कहानी विधि **Story Method**	कहानी विधि में विषय से सम्बन्धित कहानी छात्रों को सुनाई जाती है। यह विधि उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त है।
14.	समाजीकृत विधि **Sociomatrio Method**	इस विधि के द्वारा बालक के समाजीकरण की नींव रखी जाती है। अर्थात्

GURUKPO Get Instant Access to your Study Related Queries

		बालक में सामाजिक क्षमताओं का विकास करना है।
15.	**नील पत्र Blue Print**	जिस प्रकार किसी भवन के निर्माण से पूर्व भवन का मानचित्र बनाकर ब्ल्यू–प्रिण्ट में उतारा जाता है, उसी प्रकार परीक्षण प्रश्न पत्र बनवाते समय प्रश्न पत्र का नील पत्र बनाया जाता है।
16.	**मूल्यांकन Evaluation**	मूल्यांकन वह पद्धति है। जिसके द्वारा पूर्व निर्धारित उद्देश्यों तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की मात्रा का निर्धारण किया जाता है।
17.	**सामुदायिक स्त्रोत Community Resources**	सामुदायिक साधनों से तात्पर्य सामुदायिक जीवन से सम्बन्धित सभी तत्वों से है। ये तत्व भौगोलिक, ऐतिहासिक सांस्कृतिक आर्थिक आदि है।
18.	**मुद्रित साधन Print Media**	मुद्रित साधन वे साधन होते है, जिनको मुद्रित किया जाता है। जैसे– पाठ्य पुस्तकें आदि।
19.	**अमुद्रित साधन Non- Print Media**	अमुद्रित साधन वे है, जिनको किसी मुद्रणालय से मुद्रित नहीं कराया जाता, वरन् हाथ से तैयार करवाया जाता है।

GURUKPO
Get Instant Access to Your Study Related Queries...

Bibliography

1. Bining and Bining : Teaching of Social Studies.
2. Brantom,F.K. : The teaching of Social Studies in changing World
3. Dray and David jordon : A Hand Book of Social Studies.
4. Hamming,James : The teaching of Social Studies in Secondary School.
5. Wesley Edger Brose :Social Studies for schools
6. Taneja,V.R. : Teaching of Social Studies in Hindi Edition
7. Horn.E.E. : Methods of instruction in the Social Studies.
8. Kochhar,S.K. : Teaching of Social Studies in Hindi Edition
9. Bhuwneshwar Prasad : Social Studies teaching in Indian Schools,
10.Sharma,M.B. : Method of Social Science teaching
11. Jain Ameerchand : Social Science teaching
12. Ram Pal Singh : Social Studies teaching.

GURUKPO Get Instant Access to Your Study Related Queries...